

श्री जिनवरेंद्राय नमः श्री सत्त्रसाचरितम

प्रथम श्राठ काव्ये करी ग्रंथकर्ता तीर्थंकरोने नमस्कार रूप मंगखाचरण करे हे.

जनम मंत्रोना सार रूप, समस्त देवतार्ठण कस्यो हे जन्ममहोत्सव जेमनो, विद्योनो

क्रय करवा माटे श्रधिकारने धारण करनारा श्रने ध्यान करनारार्ठने श्रापी हे श्रेष्ट मोक्तनी

(उपजातिवृत्तम्)

श्रर्ह नमस्यामि सुमंत्रसारं, सेमस्तदेवैर्विहितावतारम्॥
विद्यानिघाताय धृताधिकारं, ध्यातप्रदत्तोत्तमद्यामंनारम्॥१॥
विज्ञानदानाध्ययनाधिपत्यविवाहदीक्कागमदेद्यानानां॥
"उकार श्रादो विद्धेऽत्र येन, संश्रीयुगादिप्रनुरैस्तु नृत्ये॥ १॥
पृष्टि जेमणे एवा श्री श्रिरहंत प्रजुने हुं नमस्कार कहं हुं.॥१॥ जेमणे श्रा जरतकेत्रने

For Private and Personal Use Only

विषे विज्ञान, दान, श्रध्ययन, राज्य, विवाह, दीका, श्रागम श्रने देशनार्जना प्रारंजमां प्रस्तावण जैकारने कस्त्रो हे, ते श्री युगादि प्रजु (रुपजदेव) संपत्तिने श्रयें थार्ज, ॥१॥ जे हरिणे श्राश्रय कराएला एवा य पण श्रर्थात् इरिणना लंबनवाला बतां पण निष्कलंक कहे वाय है,कखार्जने धारण करता हतां पण जे दोषोनी खाण कदेवाता नथी, तथा अन्य 'यो 'निष्कलंको हैरिणाश्रितोर्देषि, 'दोषाकरो 'नैव कलाजुतोर्देषि॥ श्रीशांतिनाघोऽपरसोममूर्त्तिः, शांतिं सै वा येंचत चारकीर्तिः ॥ ३ ॥ केष्णोर्देपि मुष्णाति तैमःसमूहं, यो वीतरागोर्देपि रेरंज लोकम्॥ प्राप्तोऽचलस्थोऽपि भैवस्य पारं, 'सौजाग्यजारं से र्तनोतु 'निमः॥४॥

निष्कलंकी चंद्र रूप एवा श्रने मनोहर कीर्तिवाला ते श्री शांतिनाय प्रज्ञ तमने शांति 🕏 श्रापो. ॥ ३ ॥ जे कृष्ण वर्ण ठतां पण श्रांधकारना समूहनो (श्रज्ञाननो) नाश करे हे, राग रहित हतां पण लोकने आनंद पमाडे हे अने रैवताचल (गिरनार) पर्वत छपर 🔯 है, राग रहित हता पण लाकन आनद पमाइ ० वन रचता चार रहा। उता पण संसार समुद्धनो पार पाम्या है; ते श्री नेमिनाथ प्रजु सौजाग्यना जारने के निवने विषे किरणवाला.

विस्तारो. ॥४॥ जे मोक्तमार्गना प्रयाणने विषे कख्याणकारी हे, जेमना घणा विपुत दढ खजाने विषे सर्पराज रह्यो हे अने जे मनुष्योने वधता एवा शुकन रूप हे: ते श्री पार्श्व 🕏 नाथ प्रजु विघ्ननो नाश करो. ॥ ५ ॥ शम दमादि गुणोए करीने वृद्धि पामेखा, श्रत्यंत कैल्याणकारी दावमार्गयाने, नागाधिराजोरुदढांससंस्थः॥ यो वैर्षमानः दाकुनो जनानां, 'विद्यानिघातं स तैनोतु पेर्श्वः ॥ ५ ॥ श्रीवर्रमानं ग्रेणवर्रमानं, नितांतकांतं कैतपातकांतम्॥ ैं वंदे सुदारं देदतासुँदारं, "सिश्वर्थजातं गदितार्थजातम् ॥ ६ ॥ वैणीजिरामं सुविशालपत्रं, विस्मेरयंतं सुमनश्चरित्रम्॥ 'श्रेयःफलाढ्यं [']विबुधेकलदयं, 'सेवे सदाप्तागमकटपरहस्म ॥ ७ ॥

मनोहर, पापनो नाश करनार, हर्ष श्रापनार, दातारोमां श्रेष्ठ, सिद्धार्थ राजाना पुत्र श्रमे सिद्धांतना श्रर्थना समृहने कहेनार एवा श्री वर्द्धमानस्वामीने हुं नमस्कार करुं हुं. ॥ ६ ॥ श्रक्तरांश्री मनोहर (रूपे करीने सुंदर), सारा विशास ताडपत्रोने विषे स

सा० के खेला (श्रेष्ठ महोटा पत्रोवाला), आश्रयं जत्पन्न करनारा (प्रफुल्लित थयेला), सत्पुरु थोनां चरित्रोवाला (पुष्पनी सुगंधि वाला), कल्पाण रूप फलवाला (जत्तम फल वाला), विद्वानोने जोवा योग्य (देवतार्जए ज जोवा योग्य) अने तात्विक वस्तु कहे नार एवा आगम रूप कल्पवृक्षने हुं निरंतर सेवुं बुं. ॥ ९॥ जेमना मुख्यी जत्तम एवा ैनिशम्य 'येषां वैरशब्दजातं, सर्वार्धसिर्दि मैनुजा र्वजंते॥ ैते चारुपक्ताः श्रितकटपरुक्ताः, श्रीगीतमाद्या गैणपा जैयंति ॥ ७ ॥ हवे कवि पोताना चारित्रप्रज नामना गुरुने नमस्कार करे हे. यस्य प्रसादेन जंडाश्यानां, यात्याँशु मालिन्यमंपीहशानाम्॥ र्डेपास्महेर्रगरूत्यमिवामेलं ेतं, चैारित्रपूर्वप्रजनामसूरिम् ॥ ए ॥ शब्द समृहने सांजलीने मनुष्यो सर्व प्रकारना छर्थनी सिक्किने पामे हे,श्रेष्ठ पक्तवाला है अपने (तीर्थंकर रूप) कल्पवृक्कनो आश्रय कस्त्रो हे जेमणे एवा ते चौदशेने बावन श्री गौतमादिक गणधरो जयवंता वर्ते हे. ॥ छ ॥ जेना प्रसादे करीने आवा जड

हृदयवाला पुरुषोनुं पण मलीनपणुं तत्काल नाश पामे हे, एवा अगस्त्यना ताराना सरखा निर्मेख ते चारित्रप्रज नामना आचार्यनी अमे उपासना (सेवा) करीए हीए. ॥ ए ॥ जेर्ड उन्नतिने पामीने गाढ खरथी गर्जाना करता हता तत्काख त्रण लब्ध्वोन्नति 'ये गुरुगर्क्कवंतो, 'विश्वोपतापं सहसा हरंति॥ परार्थमेवेह कैतावताराः, 'संतः पैयोदा ईव ''ते र्जंयंति॥ १०॥ कवि, मूर्ख लोकोने आ काव्य संजलाववानी ना पाडे हे. मुखेन 'ये दोषविषं वैमंति, पैरस्य "रंधाणि सदा विदांति॥ देशंति मेर्माणि नैयंकराह्वास्ति वैर्क्जनीया केंटिति विजिह्वाः॥ ११॥ जगत्ना तापने हरण करे हे, वली परोपकारने माटे ज आलोकमां धारण कस्बो हे श्रवतार जेमणे एवा मेघना सरखा ते संत पुरुषो जयवंता वर्ते हे. ॥ १० ॥ जेई मु १ आ श्लोकमां अगस्त्यना तारानी उपमा आपी छे, तेनी हेतु एवी छे के, ते ताराना किरणथी पाणी निर्दोष (निर्मेल) थाय छे. पण एवी अर्थ करती वखते "जडाशयानां" ए पदमां "ड" ने बदले "ल" समजवी.

For Private and Personal Use Only

ाण कि खर्ची दोष रूप जेरने वमे हे, हम्मेशां पारकां हिस्स प्रत्ये पेसे हे अर्थात् पारकां कि हिस्स जुए हे अने मर्मस्थानने मसे हे अर्थात् छःख जत्पन्न थाय तेवां कार्योने करे हे; एवा जयंकर नामवाला ते सपों (चाडिया पुरुषो) तत्काल त्याग करवा. ॥ ११ ॥

> हवे संत कोने कहेवा ? श्रने मूर्ख कोने कहेवा ? ते माटे किव संत श्रने मूर्लना गुण-दोष देखाडे हे.

ते एव संतोर्ऽत्र "निरस्य दीषान्, "ये र्नृषयंत्यन्यजनस्य काव्यम् ॥ "ते ईर्कना "ये "विमलेंऽपि कांच्ये, ग्रेण्हंति "रोषांदसतोऽपि "दोषान् १३

श्रिहें तेर्र ज संत पुरुषो जाणवा के, जेर्र दोषोनो त्याग करीने श्रर्थात् का व्यमां रहेला दोषोने सुधारीने श्रन्य मनुष्ये करेला काव्यने शोजावे हे अने तेर्र व्यमां रहेला दोषोने सुधारीने श्रन्य मनुष्ये करेला काव्यने शोजाबे हे अने तेर्ड के किन जाणवा के, जेर्ड निर्मल एवा य पण काव्यने विषे दोष न हतां पण दोषोने कोधयी प्रहण करे हे. ॥ ११ ॥

ते कारण माटे पंक्ति पुरुषोध म्हारे विषे कृपा करीने आ काव्यने "कोई स्था नके जूल होय तो " सुधारी ज क्षेत्रुं, पण गुण दोष कहेवामां मूगा श्रर्थात् गुण दोष निहं किट शकनारा श्रने संसार रूप कृवामां उत्पन्न थएका देडका सरखा, खल निहं किह शकनारा अने संसार रूप क्रवामां उत्पन्न थएला देंडका सरेखा, खल हवे कवि पोते करेला ग्रंथनी छांदर थएसी जूसनी विद्वान् पुरुषोनी पासे माफी मागे हे.

कृत्वा प्रसादं मैयि सेकनेंस्तत्, संशोधनीयं किल कार्यमेतत्॥ केंथिंविहेला ग्रेणदोषमूकेर्भवांधुनेकैः खेलबाललोकैः॥ १३॥ ह्रवे किव पोतानुं श्रज्ञानपणुं दर्शावे हे.

वंदः प्रमाणागमनाटकाइः, साहित्यहीनो नै चै नैतिवेता॥

'निर्लक्षणोऽँहं ["]निरलंकृतिः स्यां, हीस्यास्पदं काव्यचिकीः केवीनाम्॥१४॥|

पवा मूर्ख मनुष्योए अवज्ञा (करवी होय तो) करवी. कारण के, तेथी मने हरकत

सुलसा०

แยแ

शास्त्र (न्यायशास्त्र), द्वादशांगी विगेरे त्याम श्रमे चंडोदय विगेरे नाटकनो श्रक्ता नी, सूक्तावित विगेरे साहित्य विनानो, नीतिनो श्रजाण, व्याकरणनो श्रप्तण श्रमे क्रिं चूडामणि विगेरे श्रद्धंकारनो श्रक्तानी तेम ज काव्य करवानी इन्ना करतो एवो हुं क क्षित्र ग्रंथ करवानुं कारण देखांडे हे.

न वादबुष्ट्या न विनोदबुष्ट्या, न वित्तहेतोर्न चै कैर्तिहेतोः॥ संसारिनस्तारपरोपकारकते केरोम्येष कैवित्वमेतत्॥१५॥ इवे संसार्थी मुक्त थवानो उपाय शुं हे ? अने ते केटला प्रकारनो हे ? ते कहे हे. अपारसंसारसमुज्पारकर्त्ता तुँ धर्मः शिवसूत्रधारः॥

दानादिनेदेर्जगदेरैत्र सारस्तीर्घकरेरैष चैतुष्प्रकारः॥ १६॥

विर्जना हास्य (मइकरी) ना स्थान रूप थईशः॥ १४॥ काव्य करनार हुं श्रा काव्य संसारनी निवृत्ति रूप परोपकारने माटे करूं हुं, परंतु ए काव्य वादबुद्धिथी, विनोदबु किथी, इव्यने माटे के कीर्तिने माटे करतो नथी.॥ १५॥ तीर्थंकरोए, श्रास्नोकने विषे

प्रस्तावव

. के सा. बोबा

0 8 0

श्रपार एवा संसार समुद्रनो पार पमाडनार, वक्षी मोक्तना श्रध्यक् श्रने सार रूप श्रा जैनधर्म दानादि (दान, शीख, तप अने जाव एवा) जेदे करीने चार प्रकारे कहेलो वे.॥ १६॥ आखोकने विषे प्रव्य विना दान केम थाय? अर्थात् प्रव्य विना दान थई हवे दान, शीख, तप अने जाव ए चारमां मुख्य शुं हे ? ते कहे हे. ैविना धेनं र्र्यात्केथमेत्र दुानं, सुंड्वेहं रेशिंदामधोह्यमानम् ॥ र्रीरीरशर्केत्येव तेपोविधानं, तेंर्कीवँमेर्वीर्द्धरदःप्रधानम् ॥ १७ ॥ हवे जावनुं मूल शुं हे ? ते कहे हे. तेत्रौपि नावे प्रवदंति मूलं, सम्यक्त्यमेव व्रतसानुकूलम् ॥ े सिश्चंति चारित्रजृतोर्ऽपि यैस्मार्त्सम्यक्त्वहीना ने पुनः केंदीपि ॥१०॥ शकतुं नथी. वसी श्रंगीकार करेब्रुं शीखब्रत पाखवुं ए घणुं ज श्रशक्य हे, तेम तपनुं श्राचरण पण शरीरनी शक्तिवडे ज थाय हे. माटे विद्वान खोको दान, शीख, तप, श्रने जाव ए चारमां जावने ज मुख्य कहे हे. ॥ १७ ॥ ते जावने विषे पण वर्त करीने

श्चनुकूल एवं सम्यकत्व ज (शुक्ष देव, शुक्ष ग्रह श्वने शुक्ष धर्मने विषे श्रद्धा) मूल 🖫 के हे है. कारण के, चारित्रने धारण करनाराउं पण जे सम्यकत्वर्थी सिद्ध थाय हे. 🕏 विली सम्यकत्व रहित लोको (चारित्रने धारण करता) हतां क्यारे पण सिद्ध थता इवे तेने दृष्टांते करीने निर्मख राखवानुं कहे हे.

ैतन्निर्मतं स्यार्जुणवज्जनानां, सम्यग्ग्रणाकर्णनवर्णनाद्येः॥ "निर्मृज्यमानो वरदर्पणोऽपि, "नैर्मख्यमीप्नोति यतो "विशेषात् ॥ १ए॥ हवे जगतने विषे सर्व सतीउमां मुख्य कोण हती ? ते कहे वे. 'एँकेव 'विश्वे सुंलसा सतीषु, ग्रंणाधिका साजिनि नागपत्नी ॥ नैरामरेषु स्वयमाततान, येस्याः प्रैशांसां नगवान् ''जिनोर्'पि॥ २०॥

नथी. ॥ १७ ॥ ग्रुणवंत मनुष्योना (सत्पुरुषोना) जत्तम ग्रुणोनुं सांजलवुं, वर्णन 🗱 ॥ ५ ॥ करवुं. इत्यादिकथी ते सम्यक्त्व व्रत वधारे निर्मक्ष थाय हे. कारण के साफ करातो है एवो श्रेष्ठ दर्पण पण वधारे निर्मक्षपणाने पामे हे. ॥ १ए॥ जगत्ने विषे नाग सारथीनी

स्त्री ते सुस्ता एक ज सतीर्जमां श्रधिक ग्रणवासी थई हती. कारण के जगवान् जिनेश्वरे पण पोते मनुष्य श्रने देवतार्जने विषे जेणीनी प्रशंसा करेसी हे. ॥ १०॥ जे सुस्ताना सत्त्वे करीने हरिणगमेषी नामनो देव पण संतुष्ट मनवासो थयो, तेसुस हवे सुस्ताना शीसव्यतनी प्रशंसा करे हे.

सैत्वेन यस्या हैरिणेगमेषी, सुँरोऽँपि संतुष्टमना बँजूव ॥ र्तस्याश्चेरित्रं पेरिकीर्त्यमानं, कैथं नैं वितांसि सैतांधिनोतु॥ ११॥ वली पण ते ज कहे हे.

मिथ्यातमो देदीनतोऽैपि येस्या, जगाम नाद्यां सहसांबहस्य ॥
नागित्रया सा ग्रेथिता केथायां, रेवेंव पावित्रयकरी केथं ने ॥ ११॥
सानुं कीर्चन करेखुं चरित्र सत्पुरुषोना चित्तने केम तृति न पमाडो ? श्र्यात् तृति पमाडो .
॥११॥ जेषीना दर्शनथी पण श्रंबहनुं मिथ्या श्रज्ञान तत्काल नाश पाम्युं, ते नाग सा
रथीनी त्रिया सुलसा श्रा कथामां वर्णन करेली वृती नर्भदानदीनी पेवे पवित्रकरनारी

सुलसा० केम न होय ? अर्थात् नर्मदा नदीनी पेठे आ सुलसानुं चित्र पण पवित्र करनारं हे.॥११॥ प्रस्ताव० घणा ज निर्मल एवा सम्यक्त्व रूप रक्ते करीने बांध्युं हे तीर्थंकर नामकर्म जेणीए प्रस्ताव० एवी जे सुलसा (ते) आवती चोवीशीमां आ पवित्र एथ्वीतलने विषे श्री निर्मम हवे सुलसा बीजा जवने विषे कोण थही ? ते कहे हे.

> सैम्यक्त्वरत्नेन सुनिर्मलेन, या वैश्वतीर्थकरनामकर्मा ॥ श्रीनिर्ममः पंचदद्यो ''जिनेंदो, नैविष्यति क्लोणीतलेर्डमलेर्डस्मिन्॥१३॥

कवि, आ सुलसाचरित्र कहेवानुं कारण कहे हे.

(अनुष्रप् वृत्तम्)

र्गुणोत्कीर्तनेंमेतस्याः सुंजसायाः करोम्यंहम्॥ चैरित्रबद्मना स्वीयसम्यक्तामलताकृते ॥ २४ ॥

नामना पंदरमा तीर्थंकर थरो. ॥ १३ ॥ हुं पोतानुं सम्यक्त्व निर्मेख करवा माटे चरि त्रना मिषथी श्रा सुलसाना गुणोनुं कीर्तन करूं हुं. ॥ २४ ॥

\$\$\$\$\$\$\$

इवे या चरित्र सांजलवाथी शुं फायदो थाय ? ते कहे वे.

संत पुरुषो पोतानी शुद्धिने माटे, जेने विषे जूदा जुदा सर्ग (अध्याय) रचेखा हे, एवा आ चरित्रने मूलश्री अंत सुधी आदरश्री ज सांजलो अने वालको निरंतर (वसंतित्त्वका कृतम्)

आमूलचूलिमेंद्रमाद्रतोऽँपि संतः, शृ्ण्वंतु शु्ष्कृतये कैतसर्गबंधम्॥ बालाः पेवंतु सेततं च यैतो जैडानां, सम्यक्त्वसंज्ञव ईतो जैवतीह धुक्तया जणोः कारण के, आलोकने विषे जडोने पण आ चरित्रश्री सम्यक्त्वनो संज्ञव युक्तिए करीने थाय वे.॥ १५॥

॥ इति प्रस्तावना.॥

सुससा (

11 B (1)

सर्ग १ लो.

हवे कि सुलसाचरित्रनो आरंज करवा पहेलां तेणीना देश, गाम, राजा अने पति विगेरेनुं वर्णन करे हे.

समुद्रनी मध्यमां प्राप्त (यहण) कस्बो वे जन्म जेणे श्रर्थात् समुद्रनी मध्यमां रहेलो, सम्यक् चारित्रवाला खोकोवहे मनोहर (उत्तम गोलाकारथी सुशोजित), मधुर शब्दवाला पुरुषोनुं उत्पत्ति स्थान (मधुर शब्दोनुं उत्पत्ति स्थान), देवतार्डए

(उपजाति वृत्तम्) रैल्लाकरांतःपरिजब्धजन्मा, सुद्यत्तद्याजी कैलद्राब्द्जूमिः॥

लेखाजिरामो नवधामकंबूपमो जुिव दीपवरोऽस्ति जंबूः॥ १॥

करीने मनोहर (रेखाउँए करीने मनोहर), तेम ज नवीन तेजवाला दक्षिणावर्त शंखना जेवो, पृथ्वीने विषे जंबू नामनो श्रेष्ट द्वीप है. ॥ र ॥ तर्गश्लो.

0.3.0

जे जंबूद्धीपमां मेरुपर्वत होडीना स्तंजनी पेठे रहेलो ठे. वसी जंबूद्धीपनी बहा रिना बीजा द्वीपो निरंतर होडी चलाववाना चाटवा सरखा रहेला ठे. तेम ज घरण्य के जेवो विशाल घ्राकाश शढ़नी पेठे रहेलो ठे. एवो ते जंबूद्धीप समुद्धना मध्यजागने के विषे पामवा योग्य वर्ते ठे.॥१॥एथ्वी उपर रहेलो एवो य पण जे जंबूद्धीप, पोताना के

कूपायते मेरुर्रधांतराणि, दीपान्यंरित्रंति सदैव येत्र ॥ पैटायते व्योमवनं से 'जंबू दीपश्चें कें ज्योऽँतित सागरांतः ॥ २ ॥ रेंगकाशशांकं 'निजरुत्ततो यो, 'विडंबयामास मुवि स्थितोऽपि ॥ मध्ये सैदा पस्य केंलंकलीलां, 'क्विन्ति 'नीलं वैनन्ज्रशालम् ॥ ३ ॥ है

हम्मेशना गोलपणाथी पूर्णिमाना चंद्रने विटंबना पमाडे हे. चंद्र जेवा अन्य धर्म तो जंबूद्वीपमां हे ज; जेम दे जे जंबूद्वीपना मध्यजागने विषे वर्त्ततुं खीक्षं जद्रशाल नामनुं वन, चंद्रना कलंकनी शोजाने हम्मेश धारण करे हे.॥ ३॥ धुलसा •

11 0 11

जेने विषे गंगा अने सिंधु ए वे नदी विशास नेत्र जेवी हे, जेने विषे मेरु के पर्वत नासिका जेवो हे, जेने विषे वनोनी पंक्ति पत्ररचना जेवी हे. एवो जे जंबू के प्राकाशनी शोनाने जोवा माटे जाणे पृथ्वी हं ऊंचुं करे हुं मुख ज होय नी ! एवो के शेने हे. ॥ ४ ॥ ते जंबू द्वीप मध्ये वैतास्त्र पर्वते करीने, तेम ज गंगा अने सिंधु ए महानदीयुग्मविज्ञालनेत्रं, स्वर्णािक्नासं वैनराजिपत्रम् ॥ र्जन्नामितं र्र्हेषुमनंतलक्षीं, भुषं पृथिव्या ईव यो विज्ञाति ॥ ४॥ हवे एक काव्ये करीने जरतकेत्रनुं वर्णन करे हे. र्मुजालतुख्यं र्नेरतं तेदंतः, 'हेन्त्रं पैवित्रं प्रैवदंति सिंतः॥ ैवैताढ्यरीलेन चे 'निम्नगाप्यां, षट्खंमताप्तं धनुषः सहक्तम् ॥ ५ ॥ बे नदीर्डिए करीने धनुषनी पेठे ठ खंकपणाने पामेखा, पृथ्वीना खखाट सरखा प वित्र केत्रने संत पुरुषो जरतकेत्र एम कहे ठे. श्रर्थात् जंबूद्वीपना खखाट सरखं उत्तम ठ खंकवाढुं जरत नामनुं केत्र ठे. ॥ ५ ॥

तर्गश्खोः

1) G H

या जरतकेत्रमां गाम, रलादिकनी खाण, डोण्मुख याने नगरोथी श्रेष्ट, तथा यानेक किल्लाउंथी शत्रुउने अगम्य (न जवाय तेवो), तेम ज बाग, वाज्य, पर्वत अने क्रवाथी मनोहर एवो मगध नामनो देश हे. ॥ ६ ॥ जे मगधदेशमां विशाख एवा पृथ्वी रूपी हवे आठ काव्ये करीने मगधदेशनुं वर्णन करे हे.

श्रैंस्तीह 'देशो मगधानिधानो, ग्रामाकरबोणपुरप्रधानः॥ र्डंगैरैनेकैरंपरेर्रगम्य, आरामवापीनगकूपरम्यः॥ ६॥ पुँरेपुरे 'जैनविहारराजी, 'संराजते येत्र सुवर्णकुंना ॥ मैहीमहेलाहद्ये विशाले, हारावली कांचननिर्मितेव॥ १॥ वैक्तावलीमंभितकूलदेशा, राजंति यैस्मिन् सैलिलानिवेशाः॥ श्राश्चर्यलक्त्रीप्रविलोकनाय, चिक्तुःसहस्रा विहिता ईवोर्व्या ॥ ए ॥ श्रीना हृदयनां जाणे सुवर्णथी बनावेखी हारनी पंक्ति ज होयनी ! एवी नगर नग रे रने विषे सुवर्णना शिखरोवाखी जैनमंदिरोनी पंक्ति शोजे हे. ॥ ७ ॥ जे मगधदेश

ने विषे वृक्तोनी पंक्तिश्री शोजित हे तीर (कांहा) ना जागो जेना एवां जलाशयो है सर्गरेखो. (तलाव विगेरे जलनां स्थानो) "मगधदेशनी" आश्चर्यलक्षीने जोवा माटे जाखे एथ्वीमां हजारो नेत्रो प्रगट थयां होयनी ! एम शोजे हे. ॥ छ ॥ जे मगधदेशने विषे श्रेष्ठ (निर्मल) जलथी जरेलां अने उत्तम वर्जुलाकार (गोलाकार) पाछ्योथी ज्याप्त

र्सरांसि येस्मिन् सुपयोज्तानि, सङ्क्तपालीकलितानि जांति॥ जूमीमुखालंकरणाय किंतु, न्यस्तानि तांडंकविजूषणानि ॥ ए॥ त्राकारवाराः त्रंविजाति तारा, जावनदोद्येःकपिशिषसाराः ॥ सर्वत्र "रोप्याणि "सुवर्णचुडानीर्वांकरोर्वीवलयानि येत्र ॥ १० ॥

एवां तलावो, जाणे पृथ्वीना मुखने शोजाववा माटे स्थापन करेलां कुंमलनां आजूषणो के लिए ।। ए ॥ जे मगधदेशमां सर्व स्थानके सुवर्णना ऊंचा श्रेष्ठ कांगरावाला एवा गढोना समूहो, खाणनी पृथ्वी रूप स्त्रीना हाथनां रूपानां सुवर्णना कें कांगरावालां कंकणो ज होयनी ! एम शोजे हे. ॥ १० ॥

जे मगधदेशने विषे श्रेष्ठ मेखलाउंची श्रत्यंत मनोहर श्रने घणो ऊंचो वैजार ना मनो पर्वत, जाणे समुद्ध रूप वस्त्रना श्राह्यादनवासी पृथ्वीनो गोलपणाथी मनोहर एवो केडनो पाढलो जाग ज होयनी ! एम शोजे हे. ॥ ११ ॥ जे मगधदेशने विषे यत्रौतरम्यो वरमेखलाजिः, त्रीतुंगवैजारगिरिर्विजाति॥ समुज्वस्त्रावरणक्तमायाः, "नितंबर्बिबः "किल दैत्तशाली॥ ११॥ श्चावेष्टिता यत्र तैटोपविष्टमराखद्याब्दान्वितनिर्करोषेः॥ भिरीं जपादाः प्रतिजांति जूमीपादा रेणब्रुपुरमंकिता वा ॥ १२॥ यं देशमासाय महीमहेला, रंलानि स्ते विविधानि नित्यम् ॥ श्रांस्यायते संवेजनेन तस्मात्सी रह्मगर्नित्यधुनीपि नीमा॥ १३॥ जलाशयोना तटे बेठेला हंसना शब्द युक्त ऊरणाना समूहे करीने व्याप्त एवा वैजार पर्वतनी पासे रहेला बीजा न्हाना पर्वतो, जाणे शब्द करता कांकरोधी अलंकृत सुलसा∘

1) 30 ()

मगधदेश (रूप पति) ने पामीने निरंतर विविध प्रकारना रह्नो रूप पुत्रोने जन्म श्रापे है, ते ज कारणथी सर्व माणसो इमणां पण ते पृथ्वीने नामथी 'रह्नगर्जा' एम कहे हे. श्राचित्र मगधदेशनी पृथ्वीमांथी रह्नो उत्पन्न याय हे. ए ज कारणथी विद्वानोए पृथ्वी हवे श्रामीश्रार काव्ये करीने राजग्रह नगरनुं श्रामे तेमां रहेनारा मनुष्योनुं वर्णन करे हे.

तैन्नाजिज्तं गैजवाजिराजीसंघद्टसंकीर्णितराजमार्गम्॥ किनें इपादां बुजरे णुपूतं, वेरं पुरं राजग्रहं समस्ति ॥ १४॥ पोतोत्तरा वाडवद्त्तवासा, अंखब्धमध्याः कमलाकराश्च ॥ येस्मिन् संमुडा ''निवसंति खीका, घनोपकारेकपराः सँदैव ॥ १५ ॥

सर्ग१क्षो.

1) 20))

वहाणवहे तराय एवा (श्रेष्ठ पुत्रोवाला), वाडवाग्निने दीधुं हे स्थान जेणे एवा (ब्राह्मणोने आप्यो हे आश्रय जेमणे एवा), अगाध मध्यवाला (गंजीर अजिप्राय वाला), लक्कीनी उत्पत्तिना स्थान रूप (लक्कीना जंमारवाला), अने निरंतर मेघना उपर उपकार करनारा (निरंतर गाढ उपकार करवामां तत्पर) एवा समुद्ध समान लोको वसे हे. ॥ १५ ॥ जे राजगृह नगरने विषे सुवर्णना उज्वल कंदोराने धारण कर

यैस्मिन् सुवर्णोञ्ज्वलमेखलांकाः, सैनंदना देवकृताजिलाषाः॥ अनेकरूपा ईव मेरुजूम्यो, विलासवत्यो वैनिता विजाति॥ १६॥

नारीर्ठ (सुवर्णनी उज्वल मेखलानां ठे चिन्ह जेणीर्ठने), पुत्रवाली (नंदन वन युक्त), श्राने देवतार्ठए जोगववा माटे करी ठे इन्चा जेणीर्ठनी एवी (देवतार्ठए रहेवा माटे इन्चा करेली), विलासवाली स्त्रीर्ठ जाणे श्रानेक रूपवाली मेरुपर्वतनी पृथ्वीर्ठ ज होयनी! एवी शोजे ठे.॥ १६॥ सुलसा०

n 33 n

जे राजग्रह नगरने विषे कोइ जड हृदयवाद्यो माणस न होवाथी जडाशय (ज लाशय) ए शब्द फक्त तलावने विषे ज प्रसिद्ध हतो श्यने कोइ खल माणस न होवाथी द्वीजिह्व (वे जीजवाद्यो) ए शब्द फक्त सर्पने विषे ज प्रसिद्ध हतो. वली कोइ श्रसत्य बोलनार माणस न होवाथी खल ए शब्द तेल वेचनार घांचीना घरने जैलारायास्या सरसि प्रसिश्वा, विजिह्नराब्दो र्जुजगेषु येत्र॥ ँफलोक्तिरैवोकिस 'तैलकस्य, 'कीनादावाची यैम ऐव नीन्यैं: ॥ १७ ॥ यैस्मिन् सदानाः 'किल 'दंतिनोर्डपि, कथं न वास्तव्यजना नवेयुः॥ सैरांस्येपि सेंयुः कैमलाकराणि, कैंयं ने तेंन्मीनवमंदिराणि ॥ १७ ॥

विषे (कोइ चीजने—खोलने) ज लागु पडतो हतो. तेम ज कोइ हिंसक माणस न होवाथी कीनाश ए शब्दथी यम ज कहेवातो हतो. अर्थात् राजग्रह नगरने विषे के जड, खल, असत्यवाची अने हिंसक एमानुं कोइ नहोतुं. ॥ १७ ॥ जे राजग्रह के नगरने विषे हस्ति एण दानवाला (मद जरता) हे, तो पही रहेनारा लोको

सर्ग१को.

11 33 11

दान श्रापनारा केम न होय ? वली तलावो पण कमलाकरो (कमलनुं जरपत्ति स्थान) वे, तो पवी मतुष्यनां मंदिरो कमलाकरो (लक्कीना जंकार रूप) केम न होय? अर्थात् राजग्रह नगरमां मद जरता हस्तिनं, नदार माणसो, कमल युक्त तलावो अने संपत्ति युक्त खोकोनां गृहो हतां॥ १०॥ जे राजगृह नगरने विषे वाव्यो पण सुपयोधरा (श्रेष्ठ जलने धारण करनारी) हे, तो पही स्त्रीर्डना समूहो सुपयोधरा वैष्योऽैपि यस्मिन् सुपयोधराः स्युः, क्यं पुनर्ने प्रमदासमूहाः॥ 'निस्वा क्षेंनंतेऽपि गैंखे वैरेह्याहारान् पुनैनी कैथमित्यदाराः ॥१ए॥ श्रेष्ठ स्तनने धारण करनारा) केम न होय? श्रर्थात् वाव्यो श्रेष्ठ जलने धारण करनारी हे अने स्त्री छेष्ट स्तनोने धारण करनारी हे. तेम ज निर्इन्य (जीखारी लोको) पण पोताना गलाने विषे वरेबाहारान् (श्रेष्ट इष्टित आहारोने) पामे वे पढी धनवंत पुरुषोनी स्त्री वरेष्ठाहारान् (श्रेष्ठ इक्षित मुक्ताफलना अने विगेरेना हारोने) केम न पामे ? अर्थात् जीखारी पोताना गलाने

इब्रित आहारने पामे वे अने धनवंत पुरुषोनी स्त्रीत श्रेष्ठ मुक्ताफल तथा रत्नोना हारोने पामे वे. ॥ १७ ॥ जे राजग्रह नगरने विषे सुमन (पुष्पो अने श्रेष्ठ मन) ना प्रफुक्तितपणाए करीने बगीचार्त तथा मुनित्र, ए बन्ने जणा सरखापणुं पामे वे. अर्थात् राजग्रह नगरना बगीचार्त्र पुष्पे करीने अने मुनित्र श्रेष्ठ मने पामे वे. श्रश्वातपणाय करान वर्गाचाल तथा मुनन, ए वन्न जाण सरसापण पामे वे. श्रर्थात् राजण्ह नगरना बगीचाल पुष्पे करीने श्रने मुनिल श्रेष्ठ मने श्रेणरामनूम्यो मुनयोऽपि यस्मिन्, साम्यं लजंते सुमनोविकादोः॥
ग्रेणरंति सं इम्ग्रणं संहैव, योधेरे हंपूर्विकयैव हक्ताः॥ २०॥
ग्रेणरंति सं इम्ग्रणं क्षेत्रेव, योधेरे हंपूर्विकयैव हक्ताः॥ २०॥
ग्रेणरंति सं इम्ग्रणं पिजो विज्ञांति, लाजादाया विन्नहरा इवीन्न॥ २१॥
ग्रेणरंति हम्मेशां प्रकृश्चित होवाथी ते वन्ने समान देखाय वे. वसी चतुर पुरुषो योद्धा लेनी साथे 'हुं पहेसो हुं पहेसो 'एवा वादथी श्रेष्ठ धर्म रूप ग्रणने (धनुष्यनी हो रीने) बहण करे वे. श्रर्थात् योद्धाल धनुर्थारी अने चतुर पुरुषो सदाचारी वे. ॥१०॥ श्रा राजण्ह नगरने विषे, नाजी पर्यंत विश्रांति पाम्या वे विशाल समश्च (हाढी मृव) जेमना,

श्रेष्ठ म्होटा उदरवासा, वसी श्रासपास मूकी दीधां हे रत्ननां पात्रो जेमणे एवा, तथा छकानो उपर वेठेखा व्यापारी छाजनी आशाए करीने जाणे साकात् गणपति पोतेज वेठा होयनी ! एवा शोजे हे.॥ ११ ॥ जे राजग्रह नगरना चित्रकारोए कलावडे करीने जीतेखों अने ए ज कारणची अत्यंत आश्चर्य पामेखो ब्रह्मा, आज सुधी पण श्रेष्ठ रूपना खोजथी रूपोने वारंवार बनावी बनावीने जागी नांखे हे. एम हुं मानुं ैनिर्मायनिर्माय पुनर्विधाता, जैनक्ति रूपाणि सुरूपलोजात्॥ अर्थापि येचित्रकरेंः कैलार्निर्जितोर्डेपि मेन्येर्डेतिविलस्यरूपः॥ ११ ॥ गैंधर्वगर्वेण विजेतुकामा, गैंधर्वगर्व नैगरस्य यस्य॥ सरस्वती तत्समताप्तिहेतोनींचांपि 'वीणां केरतो जैहाति॥ १३॥ हुं ! अर्थात् राजग्रह नगरना चित्रकारो (चितारा्रड) एवां श्रेष्ठ रूपो चितरे हे के, जे रूपो जोइने पराजव पामेलो ब्रह्मा पण तेवां रूपो बनाववाना खोजथी प्राणीउने 🐇 सृजवा रूप चित्रोने वारंवार बनावतो छतो (चित्रकारोनां चित्रो जेवां रूपो न बन 🐉 वाषी), पाठां जामी नांखे हे. ॥ २२ ॥ जे राजग्रह नगरना गंधर्व खोकोना गर्वने,

मुख्या गंधव सरना गर्वे करीने जीतवानी इन्ना करनारी सरस्वती देवी तेमनुं समानपणुं पा मवाने आज सुधी पण पोताना हाथमांथी वीणाने मूकती नथी. अर्थात् राजग्रह न गरमां रहेनारा गंधव लोको गायनकलामां बहु ज प्रवीण हे. ॥ १३ ॥ जे राजग्रह न गरमे विषे नदुवानेए नाट्यरसे करीने जीतेलो, कोधथी काढी मूकेलो, जस्मने धारण करनारो अने त्रण नेत्रवालो एवो नदुवानो अधिपति शंकर (महादेव) पण स्मशा करनारो अने त्रण नेत्रवालो प्रवो नदुवानो अधिपति शंकर (महादेव) पण स्मशा करनारो अने त्रण नेत्रवालो प्रवो नदुवानो अधिपति शंकर (महादेव) पण स्मशा करनारो अने त्रण नेत्रवालो प्रवो निष्कासितो जस्मजृतो विरूपाक्तोऽपि प्रकोपन नेत्रविश्वरोऽपि ॥ नैटैर्जितो नाट्यरसेन येत्र, रैमशानवासी ''गिरिशो बेंनूव ॥ १४ ॥ स्वेदांबुधाराकलिता मृदंगधोंकारकारा जिनमंदिरेषु ॥

नवासी थयो. श्रर्थात् श्रा नगरना नदुवा पण पोताना काममां श्रतिशे निपुण हे.॥१४॥ जे राजग्रह नगरने विषे परसेवानी धाराठिए करीने जींजाइ गएला श्रने मृदंगना धोंकार शब्दो करनारा, तेम ज मेघना सरला दिव्य देहवाला (मनोहर खरूप वाला) मृदंगीठ, जिनमंदिरने विषे निरंतर निवास करे हे. श्रर्थात् राजग्रह नग

ा जिनमंदिरोने विषे हम्मेशां गायन श्रने नृत्य विगेरे उत्सवो थाय हे. ॥१५॥ हैं इवे राजयह नगरमां राजा कोण हतो ? ते कुहे हे. ते राजयह नगरने विषे रूडा श्राचरणयी सुशोजित (गोल श्राकारयी सुशोजित), पृथ्वीमां प्रथम हर्षने उत्पन्न करनार (कुमुदोने प्रफुद्धित करनार), नक्तत्रमाक्षा (एक जातना श्रवंकार) ने धारण करनार (नक्तत्रना समृहे करीने युक्त), पुरुषोनी बहोतेर कलानो जाए (कलावा से इत्तरााली कुंमुदाचकर्ता, नैक्तत्रमालाकलितः केलावान् ॥ सदा जनश्रेणिहितः सुतेजाः, श्रीश्रेणिकस्तत्र बेनूव राजा ॥ २६ ॥ ेविराजते यस्य कैपाणपिंडकांतःस्थिता पुष्करराजि रैंचैः॥ पैराजितानां समरे नृपाणां, प्रशस्तिवर्णाविलराँ हितेव ॥ २७ ॥ बो), निरंतर मनुष्योनो हितकारी श्रने श्रेष्ठ तेजवाखो (चंद्र समान) श्रेणिक राजा राज्य करतो हतो. ॥ १६ ॥ हवे त्रण काव्ये करीने श्रेणिक राजानुं वर्णन करे हे. जे पराजय पामेला राजाउंए स्थापन करेली स्तुतिना श्रक्तरोनी पंक्ति ज होयनी ! एम

सुलसा० अप्रति शोजे हे. अर्थात् आ राजा समशेर बहादूर हतो. ॥ १९ ॥ कि उत्प्रेका करे के हैं है के, जे श्रेणिक राजाना यशना समृहे उज्बस करेला, सर्व विश्वमां (ते उज्ब खपणानी श्रंदर) श्रदृश्यपणाने पामेखो एवो पोतानो पति जे शंकर, (तेने) पार्व तीए पोताना देहनी साथे जोडी दीधों हे, एम हुं मानुं हुं. अर्थात् छज्वल एवा शंकर, श्रेणिक राजाना उज्वल यशमां श्रंतर्ध्यान् यह जवायी पार्वतीए तेमने पोताना र्राह्मीकृते यस्य येशोजरेण, 'विश्वे सॅमस्ते 'गिरिराजपुत्र्या ॥ श्रं अलह्य नावं दंधद्तिमन्त्रां, स्युतः स्वदेहेन सहिति मेंन्ये ॥ १०॥ तंड्पलावएयजलं 'पिवंत्यो, 'देवांगना 'नेत्रपुटैः सदैव ॥ विस्फारिताद्वयो हैदि बैंदरागा, प्रीप्ताः समस्ता श्रीनिमेषनावम् ॥५ए देहमां जोडी दीधा हे. एज हेतुथी शंकर अने पार्वती साथे रहेलां हे. ॥ १० ॥ पहो ला नेत्रवाली ऋर्यात् पोतानां नेत्र बरोवर उघाडीने जोनारी, निरंतर नेत्र रूप पडि 🕺 ॥ १४ ॥ याए करीने श्रेणिक राजाना रूपना मनोहरपणा रूप जलनुं पान करती व्यर्थात् श्रे णिक राजाना रूपने जोती एवी सर्व देवांगनार्छ, पोताना हृदयमां प्रीति धारण करी

नेत्रना चलनवलना स्रजावने पामी हे. चक्कने बंध करती नथी. मतलब के, श्रेणिक राजा देवताथी पण श्रेष्ठ रूपवालो हतो. ॥ २ए॥ इवे एक काव्ये करी श्रेणिक राजानी स्त्री सुनंदानुं वर्णन करे हे. खावण्य रूप जले करीने पूर्ण जाणे नर्मदा नदी ज होयनी! एवी पोताना दर्शने करीने लोकोने पवित्र करनारी,सारी चालवाली (समुद्रने विषे वे ग मन जेणीनुं) अने निरंतर प्रसन्न एवी ए श्रेणिक राजानी सुनंदा नामनी स्त्री हती.॥३०॥ पैंक्षी सुनंदीं नवदंस्य रीक्षो, रेवेंव देवाव खजलेः प्रपूर्णा॥ पाविज्यकत्री निजदर्शनेन, संसुद्याना सततं प्रसन्ना ॥ ३० ॥ तँदंगजोऽँनूद्रैनयानिधानो मैत्रिप्रधानो विषणानिधानम्॥ यद्विसाम्याय गुरुः कविक्षेंऽप्यचीपि 'मुंचंति नें ' लेखशालाम्॥३१ हवे एक काव्ये करीने तेणीना पुत्र श्रातयकुमारनुं वर्णन करे हे. मंत्री हमां श्रेष्ट श्राने बुद्धिनो जंकार एवो अजयकुमार नामनो ते सुनंदाने पुत्र हतो. जे अजयकुमारनी स मान बुद्धि पामवा माटे गुरु, शुक्र श्रने बुध श्राज सुधी पण लखवानी शालाने (देव तार्जनी शालाने) मूकता नथी. अर्थात् अजयकुमार गुरु, गुक्र अने बुधथी पण अधिक

बुद्धिवालो हतो. ॥ ३१ ॥ हवे नव काव्ये करीने नागसारथीनुं वर्णन करे हे. वली ते सर्गरेखो. राजग्रह नगरने विषे प्रसिद्ध अने धनवंत एवो नाग नामनो सारथी रहेतो हतो. के जेना गुणोधी (सूत्रथी) ब्रह्माए बनावेला वस्त्रे करीने (आकाशे करीने) आ सर्व जगत्ने ढांकी दीधुं हे. अर्थात् ते नगरमां आकाशना सरखो अपार गुणवालो धनवंत अने प्रसिद्ध एवो नाग नामनो सारथी रहेतो हतो.॥ ३१ ॥ निरंतर जेनो अजिप्राय तथा चै तेत्रैंव पुरे प्रसिद्धों, नागानिधों उनू ईथिकः समृदः॥ र्धंणेर्यदीयेविहितेन धीत्रा, 'विश्वं समाज्ञादितीमंबरेण॥ ३२॥ गांजीर्यमंज्ञीनिधनाजिसुरूयेंध्वारोप्यते स्थानकसन्निजेषु ॥

आकृष्य यस्मार्कुरुकूपकटपादैलब्धमध्यार्कविभिः सदैव ॥ ३३ ॥ विगेरेथी पण अधिक गंजीर इतो.॥ ३३ ॥

00000000

'श्रा नागसारथी सारा जाग्ये करीने सर्वमां मुख्य थरो 'ए प्रकारे पोताना कपालमां विधात्राए खलेला श्रक्तरोने स्पष्ट करवाने माटे ज जे नागसारथी जिने श्रद जगवाननी पूजाने वखते हम्मेशां पोताना कपालमां चंदननो चांदलो करतो हतो. श्रर्थात् ते नागसारथी सर्वोत्तम एवा जैनधर्मनो श्रंगीकार करी जिनेश्वर ज

सीनाग्यनाग्येरैयमेकधुयों, नार्वीत वर्णाह्मिखतांह्मलाटे ॥
रेपष्टान् विधातुं किल चैंदिनं येश्चित्रं किनाचीसमये चैकार ॥३४॥
नूनं मुखं येस्य सुधेककुंमं, नी चेत्कैयं स्थादं मतोपमा वाक ॥
यैत्कूचकेशाः पेरितो किनाति, वैद्धिः स्विंत्योन्वमृत हटाः कि ॥३८॥

गवाननी हम्मेशां पूजा करतो हतो. ॥ ३४ ॥ निश्चे जे नागसारथीनुं मुख श्रमृतना कुंम सरखु हे. कारण के, जो एम न होय तो तेनी श्रमृतना सरखी वाणी क्यांथी होय ? वखी मुख रूप श्रमृतकुंमनी श्रासपास रहेखा दाढी मूहना केश, जाणे ते कुं मधी ब्हार नीकखता एवा श्रमृतना हांटा ज होयनी! एम शोजता हता. ॥ ३५ ॥ <u> खसा</u> ०

n es n

'श्रा जगत्ने विषे श्रा दरिडि थरो 'एवी मनुष्योना कपालमां विधात्राए खखे ली श्रक्तरोनी पंक्तिने, जे नागसारथीनो इस्त, सुवर्णना दाने करीने श्रसत्य करी नांखतो हतो. श्रा काव्यमां कवि नागसारथीना उदारपणानी स्तुति करे हे के, जे महा उदार एवो नागसारथी घणुं डव्य श्रापीने श्रनेक दरिडिजेना दारिद्यने

> नावी द्रिजोर्डयमितीह लोके, जिलाटपट्टे जिखितां जनानाम्॥ सुवर्णदानेन करो यदीयो, व्यधादेंसत्यां विधिवर्णमालाम्॥ ३६॥ कैथं विशालं ने यदीयवक्तः, सर्वागलक्मीविहिताधिवासम्॥ जिलोक्यनाथः स्म वसत्यंजस्रं, जिनेश्वरो यंत्र परिचदाद्यः॥ ३७॥

दूर करतो हतो. ॥ ३६ ॥ सर्व श्रंगनी खद्मीए कस्त्रो हे निवास जेने विषे एवं नाग सारथीनुं वक्तस्थल (हृदय) द्युं कांइ विशाल नहोतुं ? श्र्यात् घणुं ज विशाल हतुं. माटे ज जे नागसारयीना हृदयने विषे पोताना गणधरादिक परिवार सहित त्रण लोकना नाथ एवा श्री जिनेश्वर जगवान् निरंतर निवास करता हता. ॥ ३९ ॥ सर्ग१स्रो.

॥ १६ ॥

हतो. ॥ ३७ ॥

ज्ञान, दर्शन श्राने चारित्र रूप त्रण रत्नोथी सुशोजित मूर्तिवासो श्राने निरंतर शरीरनी श्रंदर तथा व्हार त्रण त्रण विद्यार्जधी व्याप्त एवो नागसारथी, ऊर्ध्वकोक देवलोक)मां रहेला दौगुंदिक देवनी पेठे ह्या मनुष्य लोकमां पोतानी इहा प्रमाणे अनेक जोगोने जोगवतो हतो. ॥ ३० ॥ म्होटा पर्वतोना शिखर उपरथी बहेता जग रंत्रत्रयालंकतमूर्त्तिरंतर्वहिस्रिवेख्याकलितः सेदैव ॥ 'मुंके रैंम मीगान ''निजवांख्या यी, दीगुंदिको ''देव ''इवीर्फलोके ३० यस्मात् प्रीवृत्ता जपकारवाराः, सद्वैव "चित्तार्तिहरा नराणाम्॥ नैदीप्रवाहा ईव विश्वतृष्णाचिदो महानूधरमू ईदेशात् ॥ ३ए॥ त्नी तृषाने दूर करनारा नदीना प्रवाहो सरखा, जे नागसारची थकी मनुष्योना चि त्तमां थती एवी पीडाने हरण करनारा उपकारना समूहो निरंतर प्रवर्तता हता. श्रर्थात् नागसारथी मनुष्यो जपर जपकारने करतो बतो तेमना चित्तना छःखने हरण करतो

For Private and Personal Use Only

सुससा०

नागदमनी श्रोषधीनी पेठे परस्त्रीने जोइने पोतानुं मुख नीचुं करनारो तथा तत्काख पोताना नेत्रोने मींचनारो श्रने देवादिकना जेवा उत्तम जोगोथी सुशोजित (म्होटा देह्थी सुशोजित) ते नागसारथी खरेखर नाग केम न होय ? श्रर्थात् तेनुं 'नाग ' ए नाम यथार्थ ज हतुं.॥ ४० ॥ हवे चार काव्ये करीने नागसारथीनी प्रिया सुखसाना

हैंष्ट्रा पैरस्त्रीं फैणजुदमन्यौषधीमिर्वार्वाञ्चाखतां दैधानः॥ निमीलिताक्तः सहसा कैथं सैः, सैत्यं नै नीगो वरनोगशाली ॥४०॥ तैस्य ''त्रिया जेंगमगेहनीति, सेंदर्शितानेकविवेकरीतिः॥

सम्यक्त रूप रहे करीने सुशोजित वे आत्मा जेणीनो,मोक्तने विषे उत्साहवाली वे चित्तनी वृत्ति जेणीनी, तेम ज देवताउंए पण जैनधर्मथी न चलावी शकाय एवी अने चोवीशमा तीर्थंकर श्री महावीर प्रजुनी जक्त एवी सुलसा हती. ॥ ४२ ॥ वली ते के सम्यक्तवरक्षेत्र विद्यक्तितात्मा मैंक्ति सम्मन्दंतित्विन्तवर्गिः ॥

सैम्यक्त्वरत्नेन विनूषितात्मा, मैक्ति सँमुत्कं वितिचत्तरितः॥ चाल्या न देवेरंपि जैनधर्मात्, श्रीवीरतीर्थं करदेवनका॥ ४१॥ सुंसाधुसाध्वीग्रुरुनिक्युक्ता, श्रीजैनसि हांतिवचारसक्ता॥ साधर्मिकोञ्चेः प्रतिपत्तिहृष्टा, स्वांगसंपूर्णग्रेणेंगिरिष्ठा॥ ४३॥ पैतिव्रतालोकशिरोवतंसा, जिनेश्वरेणांपि कृतप्रशंसा॥ सुरूपलावएयसुधानिधानं, सर्वोपमा व्यक्तापमाना॥ ४४॥

सुखसा उत्तम एवा साधु, साध्वी छने गुरुने विषे जित्तवाद्यी, तेम ज श्री जैनसिद्धांतना कि विचारने विषे छासक्त, समान धर्मवाखा खोकोनी श्रेष्ठ जित्तने विषे हर्षवाखी छने सर्वे छंगना संपूर्ण गुणोए करीने गौरववाद्यी हती. ॥४३॥ वद्यी ते सुखसा पतिव्रताना

भ रह ॥

समूहने विषे माथाना मुकुट समान, जिनेश्वर जगवाने पण कस्त्रां वे वलाण जेणीनां एवी, तेम जश्रेष्ठ रूप श्रने खावण्य रूप श्रमृतना जंगार समान तथा सघला उपमा श्र पाय एवा (चंडादिक) ड्रव्यनुं कस्तुं वे श्रपमान जेणीए एवी श्रर्थात् कोइनी उपमा श्रापी राकाय नहीं एवी इती. ॥ ४४ ॥ हवे उगणीश काव्ये करीने सुलसाना श्रंगतुं वर्णन करे हे. सेंथा रूप दंने करीने सुशोजित श्रने म्होटा चामरना सरखा सरख जे सीमंतदंफेन विराजमानो, यँकेशपाशो ग्रैरुचामरर्क्तः॥ विचित्रपुष्पानरणप्रनानिंश्चकार पित्तं शिक्षिनः कैलापम् ॥ ४८ ॥ "निर्णीयते जैंगमराजधानी, या कामराजस्य चैकास्ति यस्याम्॥ नासैकवंशं "तिलकाशकुंनं, भ्रूजल्लरीवत्रनिनं खेलाटम् ॥ ४६ ॥

सुलसाना केशपारो, विचित्र पुष्पोनी तथा आजरणोनी कांतिए करीने मोरना पींढाना समृहने एक पींठा सरखो करो हतो. श्रर्थात् तुष्ठ करो हतो. ॥ ४५ ॥ जे सुलसा, वाह्नं, तिलक (चांल्ला) रूप श्रमकुंजवाह्नं, जृकुटी रूप कालर वडे युक्त एवा अत्रना स

रखी कांतिवाझुं खखाट (कपाख) शोजे हे. ॥ ४६ ॥ कमलोए करीने सुशोजित एवा जे सुलसाना बन्ने कर्णोए (पोताने विषे लटकता एवा कमलोए करीने) श्रासो मा सना हिंमोलाने (तेर्जनी शोजा धारण करवाथी) तुष्ठ कस्चा, तेथी ते हिंमोलाए म्होटी खज्जायी खोक प्रसिद्ध वनोमां इक्तोनी शाखाउँने बिषे निश्चे पोतानुं बंधन यैस्याः श्रुतिज्यां केमलाचिताज्यां, लघुकृता आश्विनमासदोलाः॥ ता जिज्योंचेः ैकिल रैक्तशाखासु वैंघेनान्येषु वैनेषु े चक्रः ॥४९॥ यंत्रेत्रशोजाजिजवा कुरंगी, करोति कामं वनवाससेवाम्॥ यन्नत्रशानाजिनवा कुरगा, कराति काम वनवासस्वाम्॥
नीलोत्पलं कालुमुखं त्ववाप्य, जुडानिघातान् सहतेऽधुनीपि॥ ४०॥ यैन्नासिकायाः समतातिहेतोः, तिलस्य पुष्पं नितरां विहस्य ॥ पत्रक्तनानामिति वैक्ति योऽत्रेष्यावान् मैहिकिः पेतनं हि तेस्य ॥ ४ए ॥ कस्तुं. ॥ ४९ ॥ जे सुलसाना नेत्रनी शोजाधी पराजव पामेली मृगली, श्रत्यंत वनवास नी सेवा करे हे. श्रर्थात् वनमां ज रहे हे. तेम ज नीलोत्पल कमलो पण काला मुख ने पामीने हमणां पण जड(जल)ना ताडनने सहन करे हे.॥ ४०॥ जे सुलसानी ना पत्रक्तनानामिति वैक्ति योऽत्रेष्ट्यावान् मैहिनः पेतनं हि तस्य॥ ४ए॥

सिकानुं समानपणुं पामवाना हेतुथी, तिखनुं पुष्प श्रत्यंत हसीने (विकस्वर श्रद्धने) थाय हे, तेनुं निश्चे पडवापणुं थाय हे. त्र्यात् सुलसानी नासिका, तिलना पुष्पथी पण घणी ज रमणीय इती. ॥ ४७ ॥ जे त्र्या लोकने विषे नेत्रोदकना (त्र्यांसुना) स्पर्श

> यो बाप्पसंपर्कवशादँपीह, मालिन्यनारं नजते क्लोन॥ तंस्याः केंपोलो 'किमु देर्पणेन, तेनोपमामो 'विमलो संदीपि॥ ५०॥ कैं। तिन्यदोषं जैंजतीह लोके, यैदिनुमा "विवर्भकांतिमई।।। ैकेनोपमामोर्ऽधरमैतदीयं, कैांत्या कैंलं कीमलिमिश्रागम्॥ ५१॥

थी ज क्षणमात्रमां मिलन यई जाय हे, ते दर्पण साथे सुलसाना निरंतर निर्मल रहे नारा एवा कपोल(लमणा)नी ह्यं उपमा त्रापीए ? त्रर्थात् सुलसाना निरंतर निर्मेख 🐉 ॥ १७ ॥ रहेनारा एवा लमणानी साथे नेत्रोदकथी क्षण मात्रमां मलीन थई जनारा दर्पणनी हैं उपमा आपी शकाती नथी. ॥ ५०॥ आ लोकने विषे कांतिए करीने सुंदर,कोमल अने

श्चत्यंत रक्त एवा सुखसाना होठने कोनी साथे उपमा श्रापीए ? कारण के, प्रवाखां कांतिवालां हे परंतु कठीण हे. वली विंवफल हे ते (कोमल हतां) कांति रहित हे. तेथी तेनी पण उपमा श्रापी शकाती नथी. श्रर्थात् सुलसाना होठ कोई वस्तुनी उपमा आपी शकाय तेवा नथी. ॥ ५१॥ निश्चे कलंक रहित, गोलाकार अने निरंतर उज्वल एवं सुलसानुं मुख, हरणना कलंकवाला, निरंतर (पद्मार्द्धमां)गो मुंखं यदीयं किल निष्कलंकममुक्तरतं च सदोज्ज्वलं च ॥ कैलंकिना दैत्तमुचा ''दिवापनासा केँयं 'चंडमसा सैमं स्यात्॥ ५२॥ "निर्जर्तितः ["]कंबुरिव "िधजिह्नो, "रेखात्रयालंकृतचारुजासा ॥ कंतेन यस्या मैधुरस्वरेण, वैकोंतिरींसिहहिर्हज्ज्वलोऽपि ॥ ५३ ॥ लाकार रहित श्रने दिवसने विषे कांति रहित चंडना सरखुं केम होय ? श्रर्थात् सर्वो त्तम एवा सुलसाना मुखने चंद्रनी उपमा घटती नथी. ॥ ५१ ॥ जे सुलसाना त्रख रेखाथी सुशोजित, मनोहर कांतिवासा अने मधुर खरवासा कंते तिरस्कार करेसो 👸 शंख, खल पुरुषनी पेठे व्हार उज्वल ठतां पण व्यदर वांको ययो हे. ॥ ५३ ॥

सुलसा¤

॥ २० ॥

पोताना रंगे करीने जेणे पद्मराग मणिनो तिरस्कार कस्त्रो हे, एवा जे सुस्ताना हा यनी साथे अत्यंत हरिफाई करतुं एवं रातुं कमझ, चारे तरफथी रज(धूस)पाम्युं. ए ज कारणथी रातुं कमल जलाशय(तलाव)ने विषे वास पामे हे. एम अमे जाणीए हीए अर्थात् पद्मराग मणि अने रातुं कमल ए बन्नेथी पण सुलसाना हाथनो रंग सारो हतो. रें।

रागेण निर्नार्दिमतपद्मरागयत्पाणिना रूपर्वयमान मुझेः ॥ रैक्तोत्पलं प्राप रँजः समंताकेलाशये वैसिसुपैति ेविद्यः॥ ५४॥ बाह्र तदीयो सरलस्वनावात्, प्योजनालस्य तुलां कैनेताम्॥ ती दीस्यतः 'केंटिकनीपमां में, 'नीताविनेर्नातिमृदू परंतु ॥ ५५॥ यस्या घनापीनपयोधराज्यां, वैत्तत्ववादे विजिता घटोईपि॥ पानीयमधापि वेहत्यंजस्त्रं, धेत्ते प्रैकोपेन तिथींरुणत्वम्॥ ५६॥ ॥ ५४ ॥ ते सुलसाना हाथ पोताना सरलपणाथी कमलना नालनी उपमाने पामे, परंतु अत्यंत कोमल सुलसाना हाथ 'श्रमने घणुं दान श्रापशे' ए कारणथी ज विद्वान् 🐉 पुरुषोए कंटक युक्त एवा कमलनालनी साथे उपमाने पमाख्या नथी. ॥५५॥ जे सुलसाना

सर्ग१स्रो.

1) 90 1

कठीन अने घणा पुष्ट एवा स्तनोए गोलाकारना वादमां "अर्थात् अमे गोल ठीए " एवा परस्पर थएखा वादमां जीताएखो एवो घडो पण आज सुधी निरंतर पाणीने वहे वे अने कोधथी रक्तपणुं धारण करे वे. मतलव के, सुलसाना स्तनो गोल घडा सरखा पुष्ट अने कठीण होवाथी घडाउने ईर्घ्या उत्पन्न यह, तेथी तेउ पोताने अपमान थयेखुं जाणीने पाणी जरवा लाग्या श्रने कोधश्री रक्तपणुं पण धारण करवा लाग्या, ॥ ५६ ॥ मॅगेंडवेदीकुलिशोदराणि, कैशत्ववादेन विनिर्जितानि॥ मध्येन यस्यास्त्रिविज्ञिलेन, रेखात्रयं 'निर्मितमत्र तेन ॥ ५७॥ महत्वशालीन्यपि सर्वकालं, बंत्राणि यैस्या सुँलघूनि नैांति॥ ैनितंबिंबे ग्रॅंरुतां देधाने, कैामाकरेऽेंलं फैलकानि ^{°°}वैंपि॥ ५०॥ जे सुखसाना मध्यस्थक्षे (कटिजागे) पातलापणाना वादे करीने सिंह, वेदिका श्चने वज्जना मध्यनागने जीत्यां हे. ते ज कारणथी तेणीना मध्यनागमां (पेट उपर पडता एवा) विखयाना मिषे करीने त्रण रेखाउं उत्पन्न थइ हती. ॥५७॥ जे सुबसानो 🕺 कामोत्पति स्थान कटिपश्चात् जाग म्होटो थयो उतां निरंतर विशासताथी शोजनारां 🐉

एवां य पण ठत्रो, तेम ज म्होटी ढालो ए बन्ने अत्यंत न्हानां लागतां हतां ॥ ५० ॥ किस्तिरेलो. जे सुलसाना जघने (पेटनी नीचे रहेला जागे) अत्यंत पृष्टपणाथी रूडा किनारावाली ज सुबसाना जघन (पटना नाच रहला जाग / अरुपा उप्तास कराया के निरं के नदीने जीतीने तेर्नना जबने उतारी नांख्युं. ए ज कारणयी ते नदीना कांग्रां निरं के तर जबनी पासे ज शोजता होयनी! शुं. ॥ ८७॥ जेणीना सायबना जयथी केब पण ^{*}वैपुख्यतोऽस्या ³जघनेन कामं, पानीयमुत्तारितमाविजित्य ॥ र्सत्सैकतानां संरिता हुँ ''तेनोपनीरमैतानि सैदा ''विचांति ॥ ५ए॥ रेंनां प्यसारांतरं नू केयेन, शून्यांतरो नागकरोऽपि जातः॥ र्येद्रशोचानिहताविमो दौँ, "कं तींपशांत्ये "पिबतोर्ऽधुनींपि ॥ ६०॥ श्रंदर सार रहित श्रर्थात् थडमां काष्टना कठीण जाग विनानी थई. तेम ज हस्तिनी सूंढ पण अंदर पोली थइ. ए प्रकारे जेणीना साथलनी शोजाथी पराजव पामेलां केल श्चने हस्तिनी सूंढ ए बन्ने पोताने थएला पराजवना तापनी शांतिने माटे हमणां

जे सुस्तानी गतिए जीतेसा अने कांकरनी यूघरीर्जना शब्दोए तिरस्कार करेसा पांखोबासा एवा य पण हंसो, अने मदवासा एवा य पण हस्तिर्ज अत्यंत सज्जा पामता वता वनमां जता रह्या. अर्थात हंसो अने हस्ति सुलसानी गतिथी लज्जा पामीने ज वनमां जता रह्या हे. एम कवि उत्प्रेक्ता करे हे.॥६१॥ श्रा खोकमां जेर्ड निरंतर जड हंसाः सपक्का र्अपि खेंजमाना, र्अपि प्रैकामं समदा गैजाश्च ॥ यदीयगत्या विजिता वैनान्येगुर्स्तर्किता न्युर्संजितेन ॥ ६१ ॥ वसंति नित्यं जेंडसंनिधाने, यान्यांस्पदं स्युर्मधुपावलीनाम् ॥ केंद्यं निजेतासुपमानमस्याः, कैमावमीषामिह "पंकजानाम् ॥ ६० ॥ सर्वापमावस्तुवद्यंकराणामादाय निःद्योपविद्योषलक्त्रीः॥ धात्रा कृता न्तमियं तु तेन, निःसाररूपा "इह ते विनाति ॥ ६३ ॥ (जल)नी पासे वसे वे अने जेर्र जमरनी पंक्तिना स्थान रूप वे. ए कमलोनी उपमा आ सुबसाना बे चरणो केम पामे ? ऋर्यात् जड पदार्थने विषे रहेलां ऋने च्रमरोधी कलं 🕏 कित थएलां कमलोनी उपमा सुलसाना चरणने घटती नथी. ॥ ६१ ॥ विधात्रा(ब्रह्मा)

0000000000

सुस्ताव ए सर्वे जपमा श्रपाय एवी श्रेष्ठ वस्तुजंना समूहनी समग्र विशेष खद्मीजंने ग्रहण करीने निश्चे श्रा सुखसा बनावी हे. ए ज कारण्यी श्रहिं ते सर्व वस्तुजं सार रहित देखाय है हे. ॥ ६३ ॥ इवे चार काव्ये करीने नागसारथीना श्रमें सुखसाना प्रेमें वर्णन करे हे. ते सुखसा सती निरंतर पोताना सुंदर पित नागसारथीना प्रेमें मुख्य स्थानक थइ के स्थानक थई के स्थानक थे स्थानक थई के स्थानक थे स्य

ँत्रेमेकपात्रं र्सुनगत्रियस्य, ^{*}संदेव जाता सुलसा सती सा ॥ स्त्रीरूपवद्गीफलमैतदेव, यैधेद्वजन्वं "निजवद्वजस्य ॥ ६४ ॥ परस्परं सैनेहगुणावन हो, ती दंपती नाग्यदशासमृही ॥ र्धमानुरको शुजनावयुको, नुशं सुखैलीघयतः सम कालम् ॥ ६५॥

हती. स्त्री रूपी वेखनुं फल ए ज हे के, जे पोताना प्यारा पतिने व्हालपणुं उपजावे. ॥ ६४ ॥ परस्पर स्नेह रूप गुणे (दोरडाए) करीने बंधाएला, जाग्यदशाथी समृद्धि वाला, धर्मने विषे श्रमुरक्त श्रने शुजनाववडे युक्त एवां ते दंपती (नागसारथी श्रने सुलसा ए बन्ने जणां) ए सुखे करीने घणो काल निर्गमन कस्त्रो. ॥ ६५ ॥

परस्पर फु:ख सुखने विषे ष्टार्थात् सुख फु:खने सहन करवा माटे जूदां जूदां श्रं गने धारण करनारां वतां पण मने करीने निरंतर एकपणाने पामेखां ते नागसारथी श्रने सुलसानी पगले पगले दृष्टि पामती एवी प्रीति, निश्चे नख श्रने मांसनी उपमा (वसंततिलका वृत्तम्) अन्योन्यः खसुखयोः ऐयगंगनाजोरै प्येकतां गतवतोर्मनसा सदैव ॥ र्षेत्रीतिरेत्तयोः प्रैंतिपदं पैरिवर्ष्टमाना, नै्नैनं विजूव नेखमांससमोपमाना॥ ६६॥ (शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्) तुंखानंदविषादयोः प्रतिदिनं तुंख्यश्रियोरेतयोः, द्रंपत्योः समसर्वेङःखसुखयोर्जावएयलीलाजृतोः॥ वाली यह हती. अर्थात् तेर्र नख अने मांसनी पेठे परस्पर गाढ अनुरक्त हतां. ॥६६॥ निरंतर समान हे श्रानंद श्रने खेद जेमने, सरखां हे सुख श्रने डुःख जेमने, त था तुख्य कांतिवालां अने लावाख लीलाने धारण करनारां, तेम ज नेत्रनी पेठे साथे 🐉 ज हे निद्धा अने जारती जेमने एवां ते दंपती(नागसारथी अने सुलसा) नो श्रेष्ठ सुससा०

H 23 H

चाषपक्तीना बेय पांखोने विषे वर्तता पिछ (पींछा) नी पेठे बेय पक्तमा पूर्ण, श्रक्तिम सांकं स्वापविनिज्ञताकि तियोर्देष्ट्योरिवींकि त्रिमं ॥ "प्रेमींसी देरचाषि छवदेँ लं पैक् इये 'पेद्रालं ॥ ६७ ॥ श्रमे मनोहर स्नेह इतो. ॥ ६७ ॥ इत्यागमिक श्रीजयतिलकस्रिविरचिते सम्यक्त्वसंज्ञवनाम्नि महाकाव्ये सुलसा चरिते दंपतिवर्णनो नाम प्रथमः सर्गः ॥

แ ยุรุ แ

सर्ग २ जो.

हवे पांच काव्ये करीने नागसारथीनी श्रपुत्रपणानी चिंतानुं निरूपण करे वे. हवे कोइ वखते पूर्ण सुख व्रतां पण नागसारथीना मन प्रत्ये सत्पुत्रनी चिंताए प्रवेश कस्त्यो. कारण के, श्रा संसारने विषे रहेखा सुखी माणसोने पण एके एकांत सुख न (उपजाति कसम्)

श्रियोन्यदा नागमनः प्रविष्टा, सत्युत्रचिता सुखसंगमेऽँपि॥ 'संसारवासे ने यतो जैनानामेकांतसोस्यं सुंखिनामैपीह्॥१॥ यावझे डेंच्यं नवने प्रजूतं, तावर्त्सचितस्तज्ञपार्क्जनाय॥ प्राप्तेऽँपि तस्मिन् धेनरक्तणायोपायेः संदा व्ययमना जैनोऽँयं॥ १॥

प्रैं। प्रेंदिर्दि तैस्मिन् धैनरक्तणायोपायैः सैंदा वैययमना जैनोर्देयं॥ १॥ १॥ श्री श्री श्री श्री सुखने माटे चिंता होय ज. ॥१॥ कह्युं वे के— मनुष्य ज्यां सुधी पोताना घरने विषे पुष्कल डब्य नथी, त्यां सुधी तेने मेलववा माटे चिंतातुर रहे वे; पण ज्यारे वे ते डब्य प्राप्त थयुं, तो पण ते मनुष्य ते डब्यनुं रक्तण करवाने माटे जपायथी निरंतर

<u>सुससा ०</u>

11 88 11

श्राकूख व्याकूल मनवालो रहे हे. ॥ १ ॥ श्रा लोकमां पुरुषने ज्यां सुधी लावखे करी है ने मनोहर एवी स्त्री नथी प्राप्त थइ, त्यां सुधी ते स्त्री संबंधी पीडाये करीने ज ते पुरुष मृत्यु पामे हे. श्रर्थात् मरणांत इःखर्थी पण स्त्रीने मेखववा माटे प्रयत्न करे हे श्रने पोताने श्रनुकूल एवी मनोहर स्त्री प्राप्त थये वते पुत्र प्राप्तिनो मनोरथ तेने (ते पुरु पने)पीडा करे वे. एटले ज्यां सुधी पुरुषने स्त्री न होय, त्यां सुधी स्त्रीनी इन्ना याय वे, यावित्रलाव एयक सं केंस्त्रं, प्राप्तं तद्त्या वियतेरेत्र तावत् ॥ 'र्फ्राप्तेंऽॅपि ''चौते सैकले कैलत्रे, पुत्राप्तिकामाः पुरुषं ईनोति ॥ ३ धॅनेश्वरोर्ऽर्पाप्तकलत्रवांश्चे, प्रजूतपुत्रोर्ऽपि जैनाश्चितोर्ऽपि ॥ काष्ठं घ्रेणोघेरिव रागशाकेर्नरः समर्थार्डप्यंबलिक्रियेत ॥ ४ ॥ पण स्त्री प्राप्त थया पढ़ी तुरत पुत्र प्राप्तिनी इष्टा प्रगट थाय हे. ॥ ३ ॥ जेम काष्टमां जत्पन्न थयेला घुण जातिना कीडायी ते काष्ट निःसत्व थाय हे, तेम इच्य, खजन, स्त्री स्रमे वणा पुत्रोवालो तेम ज मनुष्योये स्त्राश्रय करायेलो समर्थ पुरुष पण, रोग के स्रमे शोके करीने निर्वल याय हे. स्त्रयांत् सर्व प्रकारनी सत्तावलो पुरुष पण रोग

सर्गश्जो.

1) 28 1

खने शोकथी पराजव पामे हे.॥४॥ ते वखते क्रणमात्रमां पुत्रनीचिंता रूप ख्रिये करीने जेना हृदयनो मध्य जाग बसी गयो हे एवा अने तेथी ज ग्खानी पामेखा पोताना पति नागसारथी प्रत्ये एनी प्रिया(सुखसा)ए इषेथी ते तापनी शांतिने अर्थे अमृत सरखा वचने करी आ प्रकारे कहां.॥५॥ इवे व काव्ये करीने सुखसा पोताना पतिने चिंतानुं कारण विचायनावं गैमितं कैंपोन, विंताभिनौंचांतह्रदंतरं तैम्॥ तैत्तापशांत्ये वैचनेः सुधानेस्तदा जैगीदित सुद्स्य कांता॥ ॥॥ प्राणेश ें किं कीरणमंच हैच, 'देहप्रनानिर्जितकामदेव॥ केरीव वारीपतितः प्रकाममुँत्साइहीनः पैरिलद्द्यसे व्वम् ॥ ६ ॥ श्रिष्ठः स्वराज्यादिव राजसूनुरुख्निनपुष्पः 'किल मालतीडुः॥ विलग्नहारीक ईंवांक्कधूत्तीं, ''वैर्याद्यतः कीपुरुषः पुमान्वा ॥ ७ ॥ पूछे हे. देहनी कांतिए करीने जीत्यों हे कामदेव जेणे एवा हे प्राणपति! हे हृदयप्रिय! अपनानस्थंने बांघेखा हस्तीनी पेहे तमे आज अत्यंत उत्साह रहित देखाई हो, तेतुं शुं कारण हे ? ॥ ६ ॥ निश्चे पोताना राज्यथी ब्रष्ट थएला राजपुत्रनी पेहे, जतारी

सुस्ताव है सिंधेसा पुष्पवासा मासती वृक्षनी पेठे, हारी गएसा जुगारीनी पेठे अने वेरीथी कि सिंधा पुष्पवासा मासती वृक्षनी पेठे देखार्च ठो, तेनुं शुं कारण हे? ॥ १॥ तेम ज रणजूमिने विषे क्षीण थयां ठे आयुध जेनां एवा सुजटनी पेठे, अत्यंत विद्या रहि त थएसा विद्याधरनी पेठे, दिशार्च जाणवामां मूह थयुं ठे चित्त जेनुं एवा निर्याम

कैीणायुधो वी सुनटो रेणोर्व्या, "विद्याधरो वा गतविद्यउँचैः॥ ''निर्यामको वी दिशि मूँढिचत्तो, वैंजी सैमीपच्यवनक्त्णो वी ॥ 🛭 ॥ नीजंगकाले 'किल वैस्तुनाथः, पांथोऽजनोर्व्यामव नष्टमार्गः॥ कामातुरो वैं। गिणिकानिरस्तरूर्यंकन्नतो नावितसंयतो वैं। ॥ ए॥

क (वहाण चलावनारा)नी पेठे श्रने पासे श्राव्यों हे च्यवननो समय जेने एवा इंड है नी पेठे देखाई हो, तेनुं हुं कारण हे ? ॥ ए ॥ वही निश्चे वहाण जागवानी वखते ।॥ १५ ॥ सार्थवाहनी पेठे, मनुष्य रहित (छजड) पृथ्वीने विषे जूला पडेला वटेमार्शनी पेठे, गणिकाए काढी मूकेला कामातुर पुरुषनी पेठे श्रने त्याग थयुं हे वत जेनुं एवा व्रत

धारीनी पेठे देखाई हो, तेनुं हुं कारण हे ? ॥ ए ॥ हुं श्रेणिक राजाए तमने म्हो टा श्रपमानने पहोचाड्या है ? श्रयवा कोइ म्होटो पुरुष (महाजन खोक) तमारा थी विरुद्ध ययो है ? अथवा द्युं तमारुं निधान (जमीनमां नाटें खुं धन) अंगारा थई गयुं हे ? के कोई रूपवंती स्त्री तमारा हृदयमां पेतेली हे ? ॥ रू ॥ श्रयवा शुं पृथ्वी राैका 'किर्मुच्चैः परमानितरूतं, महाजनो वा ''किमु ते 'विरुद्धः॥ े कि वी तेवांगीरिकतं ''निधानं, कींतीय कीचित् हैंदि 'ेते प्रैविष्टा र ० मृत्युः किमासन्न ईंहाँगतो वा, सुचितितोर्ऽर्थः 'किस 'विस्मृतो वा। ने दें भेर्डिस्त देंगेप्यं येदि नीय केंग्येमेति तदे स्याहि केर प्रसादम् ११ श्रुत्वेति नागः प्रविद्दस्य "किंचिक्कगाद वाक्यं प्रति वस्त्रनां ताम्॥ भोप्यं में तेतिक चिद्वेपीइ भेमें इस्त, यें कें ध्यते नो देयित तेवीप ॥१२ जपर आवेलो यम तमारी पासे आव्यो हे ? के, कांइ चिंतवेलो अर्थ हुं विसरी गया हो ? हे नाथ ! जो म्हाराधी हानुं कार्य न होय तो क्रुपा करो श्रमे ते मने कहो. ॥ ११ ॥ हवे नागसारधी पोतानी चिंता प्रियाधी हानी नथी ते कहे हे. ए प्रकारे <u> भुखसा</u> ०

॥ १६ ॥

प्रियानां वचन सांज्ञक्षीने नागसारयीए कांइक हसीने ते पोतानी वख्नजा(स्त्री)ने वचन कहुं के, हे दियते ! श्रा जगत्मां म्हारे कांइ पण तेवुं वानुं राखवा जेवुं नथी के, जे तने पण न कहेवाय. ॥११॥ हवे नागसारयी श्रपुत्रपणानी चिंता कही बतावे वे. हे मधुरजािषणी! जे तने पुत्र नथी, ते ज छुःख मने हृदयने विषे पीडा करे वे. का रण के, मनुष्योने स्त्रीचं पुत्र रूप फलवािली वे श्रने वाणीं काव्य करवा रूप फल सुवाणि यैन्नो तैव नैंदनोर्डिस्त, तदैव कःखं हैंद्ये ईनोति॥ देंग्रा यैतः पुँत्रफला नैराणां, कैवित्ववकृत्वफलार्श्व वाँण्यः ॥ १३ ॥ र्वेवाच कैांतं सुलसा तैतर्स्ते, "किं नाय खेदो 'जिनवाग्विदोऽपि॥ ''कि 'केडिंपि 'लिको नेरके पंतिष्णुः, पुँत्रेण रैक्येत हेदींश पैरय॥र४॥ वासीन ने खर्यात स्त्रीन पत्र रूप फलने माटे अने वाणीन काव्य करवा रूप फलने माटे हे. ॥ १३ ॥ इवे पांच काव्ये करीने सुलसा पोताना पतिने धिरज आपे हे. है त्यार पढ़ी सुलसाए पतिने कह्युं. हे नाथ ! जिनेश्वर जगवाननी वाणीने जाणनारा एवाय पण तमने आ खेद शो ? अर्थात् तमारे पुत्रने माटे खेद करवो ए योग्य न

नर्गथजो.

॥ ३६ ॥

थी. कारण के, हे ईश ! हृदयमां विचार करो के, कुकृत्यथी नरकने विषे पडता एवा कोइ पण लोक (मनुष्य) शुं पुत्रथी रक्षण करी शकाय हे ? श्रर्थात् नरकमां जता एवा पिताने पुत्रो बचावी शकता नथी.॥ १४ ॥ हे स्वामिन्! गुण युक्त एवो य पण बिष्टि पुत्र पिताने प्राप्त थएला छःखना समृह्यी रक्षण करी शकतो नथी. जेम के, स

स्वामिन् ग्रेणाढ्योऽपि सुतो बंजीयान्, नरेक्ति व्याधिगणान् समेतान् यंथीदितो 'रोगगणेः प्रैकामर्भेष्यंगजातेषु सैनत्कुमारः॥ १५॥ सुब्रह्मदत्तोऽपि सुतेः पेरीतो, जातोंधजः कर्मवद्यादद्यायाम्॥ पैतालमूलं केलयंस्तथोद्येः, श्रीश्रीपतिः पुत्रगणेधृतः 'किम्॥१६॥

नत्कुमार चक्रवर्त्ति घणा पुत्रो छतां पण रोगना समूहोए पीडा पाम्यो. ॥ १५ ॥ हे नाथ ! अनेक पुत्रोए करीने विंटायलो श्रेष्ठ ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति पण, कर्मना वशयी इक्षावस्थाने विषे श्रंध थयो. तेम ज त्रीजी नरकने विषे गएला एवा लक्कीना पति श्रीकृष्णनो शुं पुत्रोए छद्धार कस्बो ? अर्थात् पुत्र छतां पण ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति श्रंध थ पुलसा 🏻

N 29 N

यो वे अने श्रीकृष्ण पण नरकने विषे गयो वे ॥ १६ ॥ हे प्राणेश ! धृतराष्ट्रनुं गोत्र पुत्रोधी ज क्रय पाम्युं वे.वली ते पुलस्त्य (रावणना पिता) नो वंश पण पुत्रोधी ज कलंकित थयो वे. तेम ज व खंग पृथ्विनो पित ते प्रसिद्ध सगर चकवर्त्त (साव हजा र) पुत्रोना जुःखे करीने परलोक मार्गने (मृत्युने) पाम्यो वे. ॥ १९ ॥ हे सुबुद्धि क्रीणं तेनू जेर्धृतराष्ट्रगोत्रं, पुत्रेः कलंकी सं पुलस्त्यवंद्राः ॥ षट्खंमजर्ता संगरः स पुत्रङःखेन 'जेजे पेरेखोकमार्गम् ॥ १७॥ स्वर्गः प्रज्ञतेरिप निव पुत्रिनिचापवर्गारिप विनात्मकृत्यात् ॥ पॅरंतु 'संसारसमुदमार्गः, प्रैंवर्दते पुत्रगणेः सुधीश ॥ १० ॥ 'निज्ञाम्य कैांतागदितां 'गिरं तैां, विचारसारामगद्र्ञं नागः॥ जीनामि कांते सुतरां पेरंतु, पुँत्रेविंना नौं धृतिमेति "चित्तम् ॥ १ए॥ वान् ! आत्मकृत्य विना फक्त घणा एवा य पण पुत्रोधी स्वर्ग (देवस्रोक) अने अप वर्ग (मोक्त) पण प्राप्त थतो ज नथी. परंतु (छलटो) ते पुत्रना समृहे करीने श्रा सं सार समुद्रनो मार्ग रुद्धि पामे हे.॥ १०॥ प्रियाए समजाव्या हतां पण नागसारथी

तर्गश्जो.

11 99 1

द्यगीत्रार काव्ये करीने पुत्रथी थता लाजने देखाडतो इतो पोतानो खेद प्रगट करे हे. ए प्रकारे प्रियाए कहेली उत्तम विचारवासी ते वाणीने सांजलीने नागसारथीए 🕏 तेणीने कहां. हे कांते ! हुं ते सर्व सारी रीते जाणुं हुं, परंतु पुत्र विना म्हारूं चित्त धिरज पामतुं नथी. ॥१ए॥ जेम वांधव (जाई) रहित मनुष्योने दिशार्ड शून्य देखाय हे, जेम जड माणसोने निरंतर पोतानुं चित्त शून्य देखाय हे अने जेम धन रहित ैदिशो थैथा बैांधववर्क्तितानां, संदेव [']चेतांसि यैथा जेडानाम् ॥ सैमस्तविश्वानि यथार्रंधनानां, रींहाणि श्रृन्यानि तैथौंसुतानाम् ॥ २० केंद्रौप 'येषु स्वजनागमो न, न गीरवं 'येषु गुणाधिकानाम् ॥ े शिश्चान ेंनो े थेषु नृशं लिघूनि, गृहाणि कैांतान्यंपि हिग्हाणिश्र मनुष्योने सर्व विश्व (इनियां) शून्य देखाय हे, तेम पुत्र रहित मनुष्योने घरो पण

शून्य देखाय हे. ॥ २० ॥ जे घरोने विषे क्यारे पण स्वजनोतुं आगमन शतुं नथी, जे घरोने विषे अधिक गुणवाला पुरुषतुं गौरव नथी अने जे घरोने विषे घणां न्हानां एवां बालको नथी, तेवां घरो घणां मनोहर होय तो पण डुःखना स्थान रूप हे. ॥ ११ ॥

श्चा संसारने विषे वसता एवा मनुष्योना मनने त्रिय स्त्री, विनीत पुत्र स्त्रने सर्व यु सर्गश्जो. लोखी एवी उत्तम सत्संगति,ए त्रण विश्रामनां स्थान हे.॥११॥ जेम रात्रीने विषे चंड रूप दीपके करीने घट पटादि पदार्थना के स्व दीपके स्व दी

ें त्रियं कैलत्रं तैनयो विनीतः, सैत्संगतिः सैर्वयुणोत्तरा चै ॥ ५५ ॥ चैं इप्रदीपेन यैष्टा ैनिशायां, रॅविप्रदीपेन दिवा यैष्टा वा ॥ पदार्थसार्थाः प्रेकटीक्रियंते, सुतप्रदीपेन तथा स्वपूर्वे ॥ १३॥ एकेन नाग्याधिकतां गतेन, पुत्रेण विशा विशादीकियेत॥ वेनं समस्तं नेनु चेंद्नेन, सैंवास्यते गैंधग्रणाधिकेन ॥ १४ ॥

समूहो प्रगट कराय वे श्रर्थात् देखाय वे, तेम पुत्र रूप दीपके करीने पोताना पूर्वजो प्रगट कराय वे. ॥१३॥ जेम निश्चे श्रत्यंत गंध रूप ग्रणवाला चंदनना वृक्ते करीने सम स्त वन सुगंधवालुं कराय वे, श्रर्थात् थाय वे,तेम जाग्यना श्रधिकपणाने पामेला एक

पुत्रे करीने पण पोतानो सर्व वंश निर्मल कराय हे. ॥ १४ ॥ जे कारणयी सगर चक्र वर्तिनी कीर्त्ति पुत्रोए करीने ज समुद्र सुधी वृद्धि पामी हे. तेथी श्रालोकने विषे पुत्रे करीने ज माता पिता, मनुष्योनी मध्ये छत्कृष्ट जावने पमाडाय हे. तेम ज तेर्डनी कीर्त्ति पण पुत्रथी ज स्थिरपणुं पामे हे. श्रर्थात् घणा काल सुधी कायम रहे हे. ॥ १५ ॥ हे

> पुँत्रेण भातापितरो जैनानामुंत्रुष्टनावं गैमिताविहैव ॥ पुँत्रेण कीर्तिर्भजते 'स्थिरत्वं, यत्सागरी सा सेगरस्य जाता ॥ १५ ॥ भेदप्रवाहेरिव हैस्तिराजः, सरोजलं वा 'विकचैः सरोजेः ॥ नैदीतटं वा कलहंसयुग्मैर्विदत्समाजो वेरपंभितेवीं ॥ १६ ॥

प्रिये! मदना प्रवाहयी जेम गजराज शोजे हे, प्रफुक्षित कमलोथी जेम तलावनुं पाणी शोजे हे, हंसना जोडलायी जेम नदीनो तट शोजे हे श्रने श्रेष्ठ पंितोयी जेम विद्वानोनी सजा शोजे हे, (तेम हे कांते! मनुष्यनुं कुल पण सुपुत्रे करीने ज शोजे हे.)॥ १६॥

हे प्रिये ! संपूर्ण चंड्रथी जेम रात्री शोजे हे, श्रत्यंत शील गुणे करीने जेम स्त्री शोजे किं सर्गश्जो. हे, वेगे करीने जेम जातिवंत एवो य पण श्रश्व शोजे हे श्रने दाने करीने जेम दाता है रनो हाथ शोजे हे, (तेम हे कांते ! मनुष्यनुं कुल पण सुपुत्रे करीने ज शोजे हे.) संपूर्णचंडेण यैया वियामा, रामा यथा दी लगुणेन कामम्॥ जिवेन जात्योर्डपि यैथा हीरंगो, दीनेन दींतुः कैरपह्मवो वी ॥ २० ॥ वैाणी कैवीनॉमिव लक्कणेन, धेमेंण मानुष्यनवो धया वा ॥ वैनं वसतेन येथा तेथेव, कैंलं सुपुत्रेण "विज्ञाति कींते॥ १०॥ श्रेन्यचं कांते रेहसारलहमीं, रेएहाति राजा सुतवर्कितानाम् ॥ अन्यचं कांते गृहसारलह्मीं, गृण्हाति रीजा सुतविकितानाम् ॥
पैरिचदः सीर्देषि पैथक्पृथक 'रियों मेंबंधुवर्गस्य तैथीं श्रयोर्देषि ॥ २०॥
। १९॥ हे प्रिये! व्याकरण्यी जेम विद्वानोनी वाणी शोजे हे, ख्यवा धर्मे करीने जेम मनुष्य जब शोजे हे खने वसंतक्षतुए करीने जेम वन शोजे हे, तेम ज हे कांते!
हे कुल पण सुपुत्रे करीने ज शोजे हे. ॥ १०॥ हे कांते! वही बीजुं पण ए हे के,

राजा पुत्र रहित पुरुषोना घरनी श्रेष्ठ खदमीने श्रर्थात् श्रेष्ठ वस्तुर्जने (ते पुरुष मृत्यु पाम्या पठी) खद्द जाय हे (श्रने पुरुष जीवतो हतां जे चाकर विगेरे पिरवार होय) ते परिवार पण जूदो जूदो थाय हे, तेम ज बंधुवर्गने कोइनो श्राश्रय पण मसतो नथी. ॥१ए॥ हवे एक काट्ये करीने सुखसा पतिने खेद निहत्त करवानो उपाय बतावे हे. ए प्रकारनां पतिनां वचन सांज्ञक्षीने श्रने तेना मनने जाणीने गुणो श्रेत्वेति मैत्वा पैतिमानसं सा. ग्रंगोर्विज्ञाला सिलसा बैनाषे॥

श्रुत्वेति मैत्वा पैतिमानसं सा, ग्रेणोर्वेशाला सुलसा बेनाषे ॥ तैन्नां य कैंचित्पिरणीय बेंालां, धैन्यां र्नेज तैंवं केंतकत्यनावम् ॥३०॥ श्रेष्ठांह नैर्ता यदि केंाऽपि राज्यं, देदाति मह्यं स्वसुतासमेतम् ॥ "नेश्वामि नैंग्यामिपरां तैथोपि, धृष्टि कें देशेत्परमान्नर्मस्वा ॥३१॥

ए करीने विशाख एवी ते सुखसाए कहां. हे नाथ ! जो एम होय तो कोइ धन्य एवी कांडा बाखा(स्त्री) ने परणीने तमे कृतकृत्यपणाने पामो. ॥ ३०॥ हवे वे कांड्ये करीने कांग्या सार्या पोतानो निश्चय कही देखाडे हे. प्रियानां एवां वचन सांजाबीने पही कांग्या सार्याए तेणीने कहां. हे प्रिये ! जो कोइ पण राजा, मने पोतानी पुत्री सहित

सुस्रताण के पाज्य आपे, तो पण हुं बीजी स्त्रीने परणवानी इष्टा धरावतो नथी. कारण के, पर मान्न (स्त्रीर) जमीने पढ़ी घेंश खावानी इष्टा कयो पुरुष करें ? आर्थात् कोइ पण न करें. ॥ ३१ ॥ हे प्रिये ! जो कोइ पण प्रकारे तने पुत्र थशे, तो तेथी ज हुं हर्षित चित्त के वालो थश्श. एम ते नागसारथीए कहे ठते पुत्रना अर्थवासी ते प्रतिव्रता सुलसा

श्रये कैयंचिक्रविता सुतस्ते, नवामि तेनैव सहर्षचितः॥ 'ईतिशिते ''तेन पेंतिव्रता सी, सैतार्थिनी "चितयति र्स्म "चित्ते॥३० करोति विश्वस्य समीहितानि, धैर्मः समाराधित एव नक्त्या॥ मूढा जैनास्तं नै जैजंति किंतु, वैंग्वंति सोस्यानि ''निरंतराणि॥३३॥

पोताना मनमां विचार करवा लागी. ॥ ३१ ॥ हवे एक काव्ये करीने धर्मथी ज इष्ट कार्य प्राप्त थाय हे, एम सुलसा पोताना मनमां निश्चय करे हे. जिक्कयी श्वाराधन के करेलो धर्म ज जगत्ना (मनुष्योना) इहित कार्योने करे हे, तो पण मूर्ल मनुष्यो ते धर्मने सेवन करता नथी श्वने श्वलंकित एवा सुलोनी इहा करे हे. ॥ ३३ ॥

हवे वे काट्ये करीने धर्मयी द्युं द्याय हे ? ते कहे हे. श्रेष्ठ कुल, परस्पर प्रेम, दीर्घ आयुष्य, देहने विषे निरोगीपणुं, इक्षित मनुष्योनो संग, ग्रणने विषे अनुराग, सत्पुत्रनो लाज, लोकने विषे प्रजुता (म्होटाइ), पोताना घरने विषे संपत्ति,मुखने विषे सरस्वती, बाहुने विषे शोर्थ, पोताना हाथने विषे दान, देहने विषे सौजाग्य, हृदयने वरं कुंटां प्रेम पेरस्परं चै, दीर्घ तथार्रयः पेंद्रता च देहे ॥ क्रैनीष्टसंगर्श्वे रींणानुरागः, सैत्पुत्रलानः प्रैनुता र्वं [']लोके ॥ ३४ ॥ लैक्सीः स्विगेहे वैदने चै वीणी, ^क्शीर्थ चै बीकोः स्विकरे चै दीनम् ॥ सिनाग्यैभंगे हैंद्ये सुँधीश्चे, कीत्तिश्चे दिक्रू ज्वलधर्मतः स्थात्॥३८॥युग्मम्. रे 'चित्त 'खेदं 'किमु यासि 'नित्यं, हेष्ट्रार्डन्यवस्तुनि मैनोहराणि॥ र्धिम क्विंरप्वीश यदी बसीष्टं, धैमें "विना "नैवें समीहितं स्थात् ॥ ३६॥ विषे सारी बुद्धि अने सर्व दिशाउने विषे कीर्ति, ए सर्व उज्वल एवा धर्मनुं आराधन करवाथीज मनुष्योने प्राप्त थाय हे.॥३४॥३५॥ इवे एक काट्ये करीने सुलसा पोताना चि त्तने शीखामण आपे हे. (वली सुलसापोताना चित्तने कहे हे.) रे चित्त! तुं मनुष्योनी

सुखसाव मिनोहर अन्य वस्तुर्जने जोइने निरंतर खेद शा माटे पामे हे ? जो तुं तेवी इष्ट वस्तु र्जनी इक्वा करतो होय तो तत्काल धर्मनुं आचरण कर. कारण के,धर्म विना इष्ट वस्तुनी प्राप्ति थती ज नथी. ॥ ३६ ॥ हवे पांच काव्ये करीने धर्मथी छुष्कर कार्यो पण करी 🕏 शकाय हे ते कहे हे. आ खोकने विषे जयम करवाथी पण जे घणां छुष्कर कार्यों सिद्धि 🕏 पामतां नथी, तेवां कार्योने पण तपना प्रजावधी वश्य थएला देवतार्ज तत्काल जैपक्रमेर्णांपि न यांति "सिर्धि, कार्याणि यांनीह सुङ्क्राणि॥ तैंपःप्रचावार्दैशवर्तिनोर्देषि, क्वेंबित देवी श्रेषि तीनि मंर्क्ते॥ ३९॥ 'ये वैद्यविद्याविष्डपां न साध्याश्चिकित्सकानामैपि "तेर्डपि 'रोगाः॥ धैमींषधेरैव 'विनादामांता, श्रेनाधिसाधोरिव नावनाद्येः॥ ३०॥ करी त्र्यापे हे. ॥ ३९ ॥ जे रोगो वैद्यकविद्यामां कुशल एवा वैद्योने पण साध्य नथी, अर्थात् घणा विचक्तण वैद्यो पण जे रोगोने उंछाबी शकता नथी, तेवा रोगो पण जावनादिके करीने स्रनाथी मुनिनी पेठे फक्त धर्म रूप श्रौषधे करीने ज नाश पाम्या

000000 0000000000000 000000000

जे जुःखो जुष्ट कर्मथी प्राप्त थएखां श्राने वसी पित विगेरेना वियोगजावे करीने श्रिक्ष्यंत जुस्सह (सहन न थइ शके) एवां हे, ते जुःखो पण फक्त शीखधर्मथी जनल राजानी राणी दमयंतीना जुःखनी पेहे नाश पामे हे. श्रायांत् जेम दमयंतीनां महा जुःखो शीखधर्मथी नाश पाम्यां हतां, तेम पूर्व जवे करेला जुष्ट कर्मथी श्रापणने प्राप्त

हैष्कर्मतो यानि सैमागतानि, वियोगनावेन सुंइःसहानि ॥
कैष्टानि तार्न्यप्युंपयांति नीशां, नैलिप्रयाया धैव शिलधर्मात् ॥ ३ए ॥
विञ्चानि निश्नंति कृतेन कायोत्सर्गेण देवा श्रेपि मानवानाम् ॥
नागेनिव दाः किल पांनुपुत्राः, कुंतीवधूत्सर्गवशार्दिमुक्ताः ॥ ४० ॥
थएलां श्रत्यंत इस्सह इःलो प्ण शीलध्मेथी नाश पामे हे. ॥ ३ए ॥ जेम नागपा

यएलां श्रत्यंत इस्सह इःखो पण शीलधर्मची नाश पामे हे. ॥ ३७ ॥ जेम नागपा शयी वंधायला पांकुराजाना पुत्रो (पांक्वो) कुंतीए करेला कायोत्सर्गना वशची निश्चे मुक्त थया तेम करेला कायोत्सर्ग करीने देवतार्ड, मनुष्योनां विद्योने पण नाश करे हे. ॥ ४० ॥

युखसा ०

। ३२ ॥

ते कारण माटे मने हृदयने विषे एम ज निश्चय थाय हे के, ह्योकने विषे मनुष्योने धर्मथी पुत्रोनी प्राप्ति पण थाय हे. धर्मने विषे ज एक चित्तवाली ते कंती सतीए निश्चे धर्म नामना पुत्रने द्युं जन्म नथी श्राप्यो ? श्रर्थात् श्राप्यो हे.॥ ४१॥ हवे वे काव्ये करीने सुलसानी धर्मिकियानुं वर्णन करे हे. ए प्रकारे हृदयमां निश्चय सुनिश्चितं तद् हैदये मैमेतिं, धर्मेण पुत्रा अपि "संति खोके॥ कुंती सैंती सीं 'किल धेर्मपुत्रं, धेर्मेंकचिता में सुँतं प्रैसूता ॥ ४१ ॥ हैदीति निश्चित्य सँमाधियुक्ता, विशोषतो धर्मपरार्डनवर्त्सा ॥ पुँष्पेस्त्रिसंध्यं व्यव्धाकिनाचीं, फेलार्थिनी संक्रितमंगलांगी॥ ४०॥ दै।नं सैदाँदान्धेनिपुंगवेत्र्यश्चतुर्विघं संघमपूपुजर्च ॥ ब्रैंह्मव्रतं भूदायनं चे चैके, 'तेपे तैया चैं। मेंलमुखं तैपोर्डेंपि ॥ ४३ ॥ करीने समाधि युक्त एवी ते सुखसा, विशेषे करीने धर्मने विषे तत्पर थइ. वसी फलनी इन्जावाली अने शरीरे मंगलिक आजूषण प्रमुख पहेरनारी ते सुलसा, पुष्पोए करीने त्रण्ये काल जिनेश्वर जगवाननुं पूजन करवा लागी ॥ ४२ ॥ वली ते सुलसा

सर्गश्जो.

11 38 11

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

श्रेष्ठ मुनिजंने,निरंतर प्राप्तुक एवां ऋाहार पाणीवहोराववा खागी. तथा साधु, साध्वी, श्रावक श्रने श्राविका ए चार प्रकारना संघनुं पूजन करवा लागी. वली ते ब्रह्मच 🕏 र्यवतने धारण करी पृथ्वी उपर शयन करवा लागी. तेम ज आंबिल विगेरे तप पण करवा खागी. ॥ ४३ ॥ इवे वे काव्ये करीने सुखसाना ग्रणनुं वर्णन करे हे. पढ़ी इंद्रे श्रवधिक्वानथी सुलसाना सत्वने जोइने पोतानी सन्नामां तेणीनां सत्वग्रणथी सत्वेन तस्याः सुरनायकेन, चैके प्रशासाउविधिना विलोक्य ॥ दीश्वर्रुणप्राहपरा नैवंति, स्वयं हि 'संतः सुकृतैकचित्ताः॥ ४४॥ श्रुत्वा प्रशासामिति तां सुरें उपदातिसेनापतिनेगमेषी॥ विंगेन कृत्वा नववेकियांगं, पेरीकुणार्थं प्रैतिसुप्रतस्ये ॥ ४५ ॥ वगन कृत्वा नवविश्वियागं, परिक्तणाय प्रतिसुप्रतस्य ॥ ४८ ॥ वसाण कर्त्वाः कड्युं हे के— सुकृत्यने विषे हे एक चित्त जेमनां एवा संत पुरुषो पो तानी मेखे ज निरंतर गुण बहण करवामां तत्पर थाय हे. ॥ ४४ ॥ ए प्रकारे इंद्रे क रेखी ते सुखसानी प्रशंसाने सांजलीने इंद्रनो श्वनुचर नैगमेषी (इरिणेगमेषी) ना मनो सेनापति, तत्काख पोतानुं शरीर उत्तरवैकिय करीने परीका करवा माटे सुखसा

प्रत्ये चास्यो. ॥ ४५ ॥ इवे चार काव्ये करीने नैगमेषी देवतानुं वर्णन करे हे. सर्गश्जो. देवतानां दिव्य वस्त्रोए करीने श्रत्यंत मनोहर, केडने विषे सुशोजित वागती मेखला श्री वालो, मस्तकने विषे धारण कस्चो वे मुकुट जेणे एवो, वली कानने विषे कुंमखने धा (हरिणीवृत्तम्)

'त्रिदशसिचयेः कामं श्रीमान् रॅणत्कटिमेख*खो*, घैटितमुकुटो नालप्रांते श्रुतिश्रितकुंमलः॥ वरसुरमणिहारः किंते जुँजाविधृतांगदः, प्रवरकटकैर्मुजायुक्तेरैं लंकतपाणिकः ॥ ४६ ॥ सुरनिकुसुमश्रेणीवेणीकृतोत्तरदोखरो, रैनसवदातो ैदेवीगत्या "निराकृतमानसः॥ रण करनारो, कंठने विषे धारण कस्त्यों हे श्रेष्ठ देवमणिनो हार जेणे एवो, तेम ज करेला हाथवालो (ते नैगमेषी देव सुलसा प्रत्ये चाल्यो.) ॥ ४६ ॥ सुगंधी पुष्पोना

समृह्यी गूंथ्यो हे जत्तम केशपाश (चोटलो) जेले, जतावलना वशयी देवीगतिए करीने मनयी पण श्रधिक गतिवालो, वल्ली श्राश्चर्य! श्राश्चर्य!! एम कहेता एवा चंद्र प्रमुख मनुष्योए जोवायलो, तेम ज पोताना शरीरनी कांतिना समृहयी श्राकर्षण

> र्जंडुपतिजनैश्चित्रंचित्रं वदिनिरेतीकितो, ''निजतनुविनाजाराक्रांतप्रजाकरमंम्लः ॥ ४७ ॥ पतित गैगनाकास्विद्धं किमैतिदेतीकितुं, खैचरवनितानेत्रार्ण्यूर्द्धं ततानि ''निमीलयन् ॥ पैरिमलजरेः कैंडि।सक्तो मैहीधरगह्नरे, सैमिजमुखयंस्तावानीवान्धंनेचरदंपती॥ ४०॥

कर्खुं वे (खेंच्युं वे) सूर्यनुं मंघल जेणे व्यर्थात् पोताना तेजथी सूर्यनी कांतिने पण हैं ढांकी देतो एवो (ते नेगमेषी देव सुलसा प्रत्ये चाढ्यो.) ॥४९॥ " शुं व्याकाशथी व्या सूर्यनुं प्रतिविंव पढे वे ? " एवी शंकाथी जोवाने माटे उंचां करेलां विद्याधरोनी छी

सुस्रतात है जैनां नेत्रोने (पोताना तेजथी) बंध करतो, वही सुगंधना समूहथी पर्वतनी ग्रुफामां कीडाने विषे आसक्त थएला वनचरनां जोडलांजेने पोताना सामुं जोवरावतो ते नैग मेपी देव सुलसा प्रत्ये आवतो हतो. ॥ ४० ॥ " शुं ईप्रना हस्तकमलमांथी आकाशने विषे वज्र पडी गयुं ? अथवा अहह ! शुं सूर्यथी ज्रष्ट थएला किरणोना समूह पडे हे ?"

सुरपतिकरांचोजाईजं पंपात[ी]किमैंबरे, उँहरू किमु वा सूर्याद्धेष्टाः पैतित कैरोत्कराः॥ ईति कैंघमेंपि कैंतो देवो निरेः से सैनीडगो, कैंटिति पृष्टिवीपीवं प्रापत्तिन्कतदेहरुक्॥ ४ए॥ एम अनेक प्रकारे करीने उपरथी पासे आवतो अने मनुष्योए महा कष्टथी जाणेलो क्षेत्र तथा अहप करी हे देहनी कांति जेले एवो ते नेगमेषी देव तत्काल पृथ्वी उपर आव्योधए इत्यागमिक श्रीजयतिलकसूरि विरचिते सम्यक्त्वसंजवनाम्नि महाकाव्ये सुलसाचरिते हरिणेगमेषिसुरागमो नाम द्वीतिय सर्गः॥

N 88 N

सर्ग ३ जो.

हवे प्रथम पांच काव्ये करीने सुखसाना आंगणानुं वर्णन करे हे. त्यार पही सुख साने विषे प्रीतिवालो ते हरिणेगमेषी देवता, राजग्रह नगरनी पासे आवी तत्काल उत्तम साधुनुं रूप (साधुनो वेष) धारण करीने म्होटी समृद्धिवाला नागसारथी (उपजातिकृत्तम्)

तैतः समागत्य पुरोपकंठं, सुसाधुरूपं सहसा विधाय ॥ नीगोकसः त्रीतिपरः सुरः से, समासदद् दीरजुवं पैर दर्घा ॥ १ ॥ सुरेंडचापेरिव तीरणोंघेः, त्रतोलिकायां केलितं विचित्रेः ॥

श्रीक्तेपकारी प्रैंतिहाररूपेँरु ६प्रवेशेरिव वैत्रयष्ट्या ॥ २ ॥ ना श्रांगणा श्रागल श्राव्यो. ॥ १ ॥ मार्गने विषे ईडधनुष्यना सरला चित्र विचित्र तोरणोना समूहोषी व्याप्त श्राने जाणे ठडीए करीने रोक्यो ठे प्रवेश जेमणे एवा प्रति हारो (द्वारपालो) ए करीने तिरस्कार करनारा (नागसारथीना महेलमां ते मुनि रूपने धारण करनारा देवताए प्रवेश कस्त्रो.) ॥ १ ॥

सुखसा •

॥३५॥

विचित्र चंडुत्र्याना समूहनी कांतिए करीने मनुष्योने बरोबर संध्यानो त्रम उत्पन्न कर किता श्री श्री विचार करीने व्यास किता स्था स्था भ्राप्त करीने व्यास किता स्था (नामसारथीना महेलमां ते मुनि रूपने धारण करनारा देवताए प्रवेश कर्यो.) ॥३॥ श्रांगणामां कस्तूरीवडे खींपीने मुक्ताफलोथी खस्तिक (साथिया) काढेखा, तेम ज सुव 0000 ैविचित्रचंदोद्यराजिकांत्या, सैंध्याभ्रमं साधु देघकेनानाम्॥ ''निषेवितं, धूपघटीप्रस्तैः, पयोदछंदैरिव धूपधूमैः ॥ ३ ॥ कैस्तुरिकागोमयकां विधाय, मुक्ताफलेः स्वस्तिकतं प्रवेशे ॥ सीवर्णसत्यष्पलपत्रमालाश्रितोत्तरंगं वरमंगलाब्यम् ॥ ४ ॥ जिल्वा विमानं निजया श्रिया येत्, ध्वजानुजायेरिव नृत्यदूर्श्वम् ॥ सुँविस्मयस्मेरमुखो "विवेदा, मुँनिः सुँसोधं सुँजसाश्रितं तैत् ॥ ५॥ र्णना सरखाश्रेष्ठ पिंपलाना पांदडानी मालाना तोरणवाला अने उत्तम मंगल पदार्थो थी युक्त एवा (नागसारथीना महेखमां ते मुनि रूपने धारण करनारा देवताए प्रवेश

सर्ग३जो.

n 3**u** n

अप्रजागोए करीने जाणे उंचे नृत्य करतुं होयनी! एवा सुखसाए आश्रय करेखा ते नागसारथीना महेलने विषे घणा ज विस्मयथी कांइक हास्य युक्त मुखवाला ते मुनि रूपने धारण करनारा देवताए प्रवेश कस्त्रो.॥॥ पोतानी पासे उनेखा ते मुनिने उता वलथी जोइने, हर्ष सहित रोमांचित थयो वे देह जेणीनो अने कांइक हास्य युक्त थयुं हे मुखकमत जेणीनुं एवी पतिवता ते सुलसा पोताना मनमां एम विचारवा लागी. संसंभ्रमां लोक्य समीपसंस्थं, पंतित्रता सा सुं लसा सुनिं तें ॥ संहर्षरोमांचितदेहदेशा, दैध्यावितिरूमेरमुखारविंदा॥ ६॥ पुराणपापापगमैकहेतुरु चैर्निविष्यत्फललानवका॥ नाज्ञव्यगेहं खलु सर्वतीर्थमयोऽतिथिः पावयति कैमाज्याम्॥ १॥ ॥६॥ हवे नव काञ्चे करीने उत्तम पुरुषोनुं आवबुं अन्यया थतुं नथी, एम चिंतवन करे हे. पूर्वे आचरण करेला पापना नाशनुं एक कारण अने श्रेष्ठ जविष्य फलना लाजनो वक्ता एवो सर्व तीर्थमय अतिथि (साधु) पोताना वे चरणोए करीने अजव्य पुरुषोना घरने निश्चे पवित्र नथी करतो. ॥ ९ ॥

सुखसा •

॥३६॥

मनुष्यगणानुं ए ज फल हे के, जे "पोताने माटे निपजावेला आहार पाणीमांथी" अतिथि(साधु) हेतो संविताग कराय हे, परंतु जे बीज़ं पोताना हदरपूर्णाने माटे करहुं, के ते सर्व तो निश्चे पशुहित करण हे. ॥०॥ आ पृथ्वीने विषे दीवाई घणा प्रकाशने अर्थे हैं है. तेम ज हक्तोने पाणी सिंवहुं ए पण फलने माटे हे. वली हुऊ पुरुषोनी सेवा करवी, ते मैनुष्यतायाः फॅलॅमेतैदेव, यत्संविज्ञागः कियतेऽतियीनाम्॥ भेंचुज्यतायाः फदानतपुन, नरसानना । । किंचुनां किंत किंत्रणं तेत् ॥ ७ ॥ किंचुनां किंत्र केंद्रीम्हाणाम ॥ र्नूरिप्रकाशाय नुवि प्रदीपा, फँलाय सैकोर्ऽत्र महीरुहाणाम्॥ शुष्रुषणं रृष्ठजनस्य बुँष्वये, पूँजांडेतियीनां सैततं सैंमृष्वये ॥ ए ॥ ैन विर्पेसप्पति ग्रहाण्यमीषां, केंद्रीप देवातिययस्त्रयाणाम् ॥ हैत्यापवादेन विदूषितानां, नैक्येतराणां कृपणात्मनां न ॥ १०॥ हत्यापवादन विद्वापताना, जन्यतराणा क्रेपणात्मना च ॥ रणा।
बुद्धिने अर्थे चाय वे अने अतिथि (साधु) वेनुं पूजन ए निरंतर समृद्धिने अर्थे चाय
वे.॥ए॥ बासहत्या गोहत्या विगेरे हत्याना अपवादधी कसंकित चएसा, अजन्य अने
कृपण आ त्राखेना घर प्रत्ये देव तथा अतिथिवे क्यारे पण नधी ज आवता.॥ रण॥ कृपण आ त्रप्येना घर प्रत्ये देव तथा अतिथिन क्यारे पण नथी ज आवता.॥ १०॥

सर्ग३जो.

11 3& 11

तृषावडे रोकाइ गयो हे कंह जेनो एवा पुरुषने जेम समुद्र पण स्थल सरखो थाय हे, तेम क्षोकने विषे धनवंत पुरुष पण जपनोग विना निश्चे म्होटो दरिङ्गी ज देखाय हे.॥११॥जे. वनना बृक्तोने फल, विधवा स्त्रीउने नवयौवन अने क्रुपण पुरुषोने पुष्कल द्रव्य, ते क रवामां विधात्राने जे श्रम थयो हे, तेने विद्वान पुरुषो निष्फल ज कहे हे. ॥११॥ ते े विनीपनोगेन धनेश्वरोऽपि, नुनं दैरिजाधिक ऐव लोके ॥ निरु-इकंत्रस्य 'पिपासर्यापि, पानीयराद्याः स्थलसंनिनः स्यात् ॥११॥ वैनज्माणां फैलमैंगनानां, 'वैधव्यज्ञाजां नैवयोवनं च ॥ कदर्यपुंसां प्रचुरं धंनं यत्, ''विधेः श्रेमं ''निष्फलमेंवमींदुः ॥ १२॥ पैरोपकारः कियते तदेत्र, स्वार्धः से नूनं पैरमार्थछत्या ॥ उँचैर्रकिंचित्करत्तिनाजां, "किं जीवितव्यस्य फेंलं जनानाम् ॥१३॥ कारण माटे आ क्षोकने विषे परमार्थवृत्तिए करीने जे परोपकार कराय हे, ते निश्चे स्वार्थ जाणवो. कारण के, जरा पण दान पुष्य निह करनारा मनुष्योना म्होटा जी वितनुं ग्रुं फल ? श्रयात् कांई नहीं. ॥ १३ ॥

सुलसा०

n 89 II

क्षोकने विषे पशुर्र पण घणा काल सुधी जीवो;कारण के,जे पशुर्रना चर्म विगेरे पण जपकारी होय हे. परंतु परोपकारे करीने रहित अने नाश पाम्युं हे पुरुषातन जेतुं एवा मनुष्योना जीवितने धिकार हे.॥१४॥ चपल ध्वजा, निह ढांकेखा महेखनुं रक्तण करे हे, तृणनो बनावें बो पुरुष पण केत्रनुं रक्तण करे हे, अने रक्ता (राख) पण अनाजनुं रक्तण जीवंतु कामं पैरावोऽपि खोके, चर्मादिकं स्याइपकारि विषाम् ॥ पॅरोपकारेण ''विवर्क्कितस्य, ''धिक् जैवितव्यं हैतपोरुषस्य ॥ १४॥ क्षीलत्परी सीधमैसंसूणं च, क्षेत्राणि चंचापुरुषोर्दपि पाति॥ कारः केणानंष्युपकारहीनः, पुनानंनीप्योर्देषि ने 'किंचिर्देव ॥ १ ८ ॥ ध्यात्वापि सा चेतिस द्वानशोंमा, प्रणम्य साधुं सहसीपस्त्य ॥ रैंवं मैन्यमाना सुतरां कैतार्थ, व्यंजिक्षपेंद्योजितपाणिपद्मा ॥ १६॥ करे हे, परंतु छपकार रहित पुरुष तो एमांना कोइनुं जरा पण रक्षण करतो नथी. माटे ध्वजा, तृणनो पुरुष अने रक्ता ए थकी पण उपकार विनानो पुरुष तुष्ठ जा णवो. ॥ १५ ॥ ए प्रकारे मनमां विचार करीने दान आपवामां शौर्यवासी ते सु

सर्ग3जो.

॥ इड ॥

खसा तत्काख साधुनी पासे आत्री प्रणाम करीने पोताने अत्यंत कृतार्थ मानती वती हस्तकमखने जोडीने विनंती करवा खागी. ॥ १६ ॥ हे जंगमतीर्थ ! हे पाप रहित ! (व्रेचिंता) आपे पोते ज पधारीने आ तमारी जक्तजन एवी मने आजे तत्काख पवित्र करी. हे साधु ! प्रसन्न थार्व अने अनुग्रह करो. वसी हे उत्तम विद्यावंत ! कार्य

पैवित्रता जेंगमतीर्थ सदाः, स्वयं समेत्य त्वयकार्रनवद्य ॥ प्रैसीद साधोर्रनुग्रहाण मेंद्रद्य, निवेद्यतां केंद्रिमेनिंद्यविद्य ॥१॥ तेदीयगेहे किल लक्कपाकतेलस्य कंन्नत्रयमस्ति मैला ॥ ग्लानादिकार्यं तदन्तंपदिश्य, मायामुनिस्तेलिंममां यैयाचे ॥ १०॥

निवेदन करो. ॥ १९ ॥ हवे एक काव्ये करीने साधु खक्तपाक तेखनी याचना करे है हे. त्यार पही "ते सुखसाना घरने विषे निश्चे खक्तपाक तेखना त्रण घडा हे" एम जाणीने अने तेणीने ग्लानादि कार्य कहीने ते मायाथी मुनिना रूपने धारण करनारा देवताए (प्रार्थना करती एवी) सुखसा पासे तेखनी याचना करी. ॥ १७ ॥

सुस्ता० हवे वे काव्ये करीने सुलसानी उदारता श्रने दान श्रापवानी श्रद्धा निरूपण करे हे. पठी हर्ष सिहत ते सुलसा पोते ज लक्ष्पाक तेलना घडाने उपाडीने जेटलामां श्रापवा है माटे श्रावे हे, तेटलामां देवना प्रजावधी ते घडो श्रचानक पृथ्वी उपर पडी गयो !

र्जेत्पाट्य कुंनं स्वर्यमेव यावद्दातुं समागचति सा सहर्षा ॥ पेपात र्ज़िमों सैहसा सै तीवहें वप्रचावार्दि चिदे चै मिंकु॥ १ए॥ एवं कितीयोऽपि तेतस्तृतीयः, "तेलस्य कुंनः "किल सीध्येनंजि॥ र्ने सिंग्तिरियाः प्रैति साधुदानं, श्रेश्वा मैनागैप्येधिकाधिकेवे ॥ २० ॥ क्रानेन देवः सुंलसामवेत्यांविषस्चित्तां घटनंगतोऽपि॥ सेंहत्य मायां प्रेंकटीवजूब, शैक्रप्रशंसां चे शेंशंस सेर्वाम् ॥ ११ ॥

श्रने तुरत फूटी गयो.॥ १ए॥ पठी ए प्रकारे वीजो श्रने त्रीजो पण ते खक्तपाक के तेखनो घडो फूटी ज गयो. तो पण सुखसानी साधुदान प्रत्येनी श्रद्धा जरा पण खं कित न यह, परंतु श्रिधिक श्रिधक वधवा लागी.॥ १०॥ हवे एक काव्ये करीने नैग

11 30 11

मेषी देव कृत्रिम वेषने त्याग करीने स्वर्गमां थएखी प्रशंसा सुखसाने कहे हे. एवं रीते त्रण्ये घडा फूटी जवाची पण नची खेद पाम्युं चित्त जेणीनुं एवी सुखसाने देव ताए क्वाने करीने जाणीने पढ़ी मायाने (कपट साधुपणाने) संहरीने प्रगट यह श्चने खर्गने विषे सर्व इंडे करेली स्तुति तेणीने कही. ॥ २१ ॥ हवे एक काव्ये करीने ते देवता सुलसाने वरदान मागवानुं कहे हे. हे दातार ! हुं नामे करीने हरिणेगमेषी नाम्ना सुरोऽहं हॅरिणेगमेषी, दिवः संमागामिह विक्तितं वाम ॥ तुँष्टोऽवैदातेन चे "ते वदान्ये, वेरं देंणु देंवं गुणगौरि "किंचित् ॥५५॥ तेतोऽवदत्सा सुदती सुरं दचमूपते वं ग्रैरुशक्तियुक्ता॥ र्स्वयं नैं जीनासि मैंनोर्थं ेंमें, ज्ञानेन जीनन्नेपि विश्वनावम् ॥ १३ ॥ देवता तने जोवा माटे स्वर्गथी श्रिहें श्राव्यो हुं श्रने रहारा दातारपणाथी थयो हुं माटे हे गुणगौरि ! तुं कांइ पण वरदान माग. ॥१२॥ हवे एक काव्ये करीने सुखसा पुत्र रूप वरदान मागे ठे. पठी श्रेष्ट दांतवाखी श्रमे म्होटी शक्तिवाखी सुख साए कहां. हे इंडना सेनापति ! तुं पोते ज्ञाने करीने सर्व विश्वना जावने जाणतो छतो 🕏 वृक्षसा**ः**

11 종만 11

पण म्हारा मनोरथने (पुत्रनी इष्टाने) ग्रुं नथी जाणतो ? श्रर्थात् जाणे ठेज. ॥ १३ ॥ इवे बे काव्ये करीने देवतानी प्रसन्नता कहे ठे. पठी हर्ष सहित ते देवताए सुलसाने बत्रीश गोली श्रापी श्रापे कक्कुं के, श्रा गोली तमारे श्राप्तकमें एकेक खावी, के जेम एटला (वत्रीश) पुत्रो थाय. ॥ १४ ॥ हे ग्रुणनी एक जूमि! फरीथी वीजुं कांइ ततः सहर्षेण सुरेण तेन, दात्रिंदादंस्ये गुटिकाः प्रदत्ताः॥ श्रीरूयायि चैतेंक्रीमतस्त्वीयेकेकेविं। यथा स्युस्तनया ईयंतः ॥ १४॥ रेणैकजूमे पुनरैन्यकार्ये, समागतेऽहं स्मरणीय एव॥ एवं गेदित्वा से सुरः कैणेन, ''तिरोद्धे दीधितदीपितादाः ॥ १८ ॥ पुनैर्जिनार्ची सुलसा ^{*}विधाय, विशेषतो नीगपरा बैजूव॥ श्रीपुज्यपूजादिपुरस्सराणि, ह्यौरंजकार्याणि फर्लंति लोकै ॥ २६ ॥ कार्य प्राप्त थये वर्ते म्हारुं स्तरण करजे. एम कहीने पोतानी कांतिथी प्रकाशित करी हैं वे दिशार्व जेणे एवो ते देवता कणवारमां श्रंतर्ध्यान थइ गयो. ॥ १५ ॥ हवे एक काट्ये करीने सुखसानुं नित्यकृत्य कहे वे. पृवी सुखसा फरीथी जिनेश्वर जगवाननी

सर्ग३जो.

11 30 11

पूजा करीने विशेषे जोगने विषे आसक्त यह कारण के लोकने विषे श्रीपूज्य (देव ग्रुरु)नी, पूजादि करीने आरंजेलां कार्यों फलवालां याय हे श्रयात् फले हे ॥१६॥ इवे दश काव्ये करीने सुलसा घणा पुत्रोथी धर्मकर्ममां यती छपाधिनो मनमां विचार करे हे. पही इतुकालनो दिवस प्राप्त थए हते धर्ममां तत्पर एवी ते सुलसा मनमां विचार करवा

श्रयांगतेऽसारेतुकालघस्त्रे, व्यचितयचेतिस धॅर्मशीला ॥ ंकि प्रेरिपुत्रेर्मम धॅर्मकर्मविद्यप्रदेर्मूत्रमलोक्षनाचेः॥ १९॥ ंदेवार्पितानिर्ग्रेटिकानिरानिर्घात्रिंश्चाता लक्कणलक्कितांगः॥ ऐकोऽपि पूर्यात्तेनयो गुणाढ्यो, विशिष्टवीर्यः स्वजनप्रियो मे ॥१०॥

खागी के 'म्हारे मलमूत्रनुं धोवुं ' इत्यादिके करीने धर्मकार्यने विषे विष्न करनारा घणा पुत्रोनुं म्हारे पुत्रोए करीने शुं काम वे ? श्र्यात् धर्मकार्यमां विष्न करनारा एवा घणा पुत्रोनुं म्हारे हैं काम नयी. ॥ १९ ॥ परंतु देवताए श्रापेली श्रा बन्नीश गोली ए करीने मने, बन्नीश हैं खिक्रणोथी चिन्हित वे श्रंग जेनुं एवो, गुणवालो, महा पराक्रमवालो श्राने खजनने

सुससा •

1 ok (1

प्रिय एवो एकज पुत्र थार्छ. ॥ १० ॥ म्होटा कार्यने करनारो ते एक पण पुत्र प्रस वाय तो सारुं, परंतु निर्वेख एवा घणा पुत्रोधी शुं ? केम के, फक्त एक एवो य पण के चंद्र सर्व दिशार्छने प्रकाशीत करे हे, परंतु उदय पामेखा श्रसंख्य तारार्छ नधी प्रसुयते सुनुरेन्ननकार्यकर्ता से एकोउँपि किस प्रज्तैः॥ श्रीद्याः प्रैकाद्याः क्रॅरुतेऽमृतांशुरेकोऽध्येसंख्या अदिता नै ताराः॥२ए॥ एकांपि ज्ञंचा वरकामधेतुः, सदैव या कामितदानदक्ता॥ दीरि स्थितैर्वेष्कयणीसहस्त्रेर्द्धे देस्तृणत्रोटिकरैः किमैन्येः ॥ ३०॥ एँकोऽँपि 'तेजःत्रकरैः त्रपूर्णिश्चिंतामणिश्चितितकार्यकर्ता॥ हाराधिरुद्दैरंपि वर्तुलेर्ख्न, 'कंठस्थितेः कीचमणीगणैः 'किम्॥ ३१॥ करता. ॥ २ए ॥ जे निरंतर इक्टित मनोरथ पूर्ण करवामां कुशल, एवी एक पण हैं जिसमें कामधेतु (गाय) सारी; परंतु घासने तोडनारी, वृद्ध स्त्रने बारणामां उनेही एवी बीजी उत्तरणी हजारो गायोथी द्युं ? स्त्रयात् कांइ नहिं. ॥ ३० ॥ वक्षी तेजना

सर्ग३जो.

II An II

समूहथी पूर्ण अने इश्वित कार्यने करनारो एवो एक पण चिंतामणी सारो; परंतु हारमां परोवेखा अने गोख एवा य पण कंठमां पहेरेखा काचमणीना समूहे करीने शुं ? अर्थात् कांइ नहीं. ॥ ३१ ॥ आ खोकने विषे इश्वित संकिष्टपत सिद्धिने कर नारा एवा एक पण कब्पवृक्तने रोपबुं ए सारुं, परंतु ताख, करीर, निंब अने धव

एकोर्डेपि सेंकिट्पतिसि किश्वारी, संरोप्यते केट्पमहीरुहोर्डत्र ॥ विके पीटितेस्ताटकरीरिनंबधवावकेशिप्रमुखेर्डुमेर्यैः ॥ ३२॥ एरावणो वारणराज एकोर्डप्यास्तां चतुर्द्वतयुतः सुजात्यः ॥ विके केपिके प्रेन्तेः ॥ ३३॥ विके केपिके प्रेन्तेः ॥ ३३॥

विगेरे जे वांि पा (फल विनाना) हको हे, तेमने पालवावडे करीने ग्रुं फल ? श्रर्थात् है तेवा हकोने पालवाथी कांइ पण फल मलतुं नथी.॥३१॥ तेम ज चार दांत युक्त श्रमें श्रेष्ठ जातिवालो एक पण ऐरावण गजराज होय, ते सारो; परंतु लक्षण रहित श्रमे बर्वरकुलमां (नीच जातिमां) जस्पन्न थएला एवा घणा कुहस्तिनए करीने ग्रुं <u> प्रवसा</u> ०

११ ४८ ११

कराय ? अर्थात् कांइ नहीं. ॥ ३३ ॥ खोकोने अत्यंत श्रवण करावी हे कीर्ति जेणे एवो अने महा वेगवालो एवो य पण एक उच्चेश्रवा नामनो (इंद्रनो) अश्व सारो, परंतु निरंतर जूंकता, कुरूपवाला श्रने घासने खानारा एवा श्रनेक टाइडा (टहु) विए करीने शुं ? अर्थात् कांइ नहीं. ॥ ३४ ॥ आ लोकने विषे सर्व प्रकारना वैजव अने र्जुचैःश्रवाः श्रावितकीर्तिरुचैरकी वरं सारजवोर्देप वाजी ॥ र्घुंर्णायमानेः सततं क्वेरूपेः, ''किं टींरकेंघींसहरेरेनेकेः ॥ ३४ ॥ श्चाराधितः श्रीजिनराजदेव, ऍकोऽँपि दै।ताऽँखिलजुक्तिमुक्तयोः ॥ ें कि यैक्कारेपेंद्दिरागरोपेः, 'संतोषितेंर्न्र्रितरेंर्र्पीह ॥ ३८॥ एँकोर्डैपि ^{*}सिंहीतनयः समर्थः, सत्त्वाधिकः "कुंनिघटानिघाते॥ सुताः शृगाख्या बहवोऽंप्यशक्ता, "बिज्यंत जैन्नेः प्रैतिसारमेयम्॥३६॥ मुक्तिने आपनारा एवा एक पण आराधन करेखा जिनेश्वर प्रजु सारा, परंतु गाढ राग श्रने रोषवाला घणा एवा य पण संतोष पमाडेला यक्त श्रने रोषे करीने शुं? श्रर्थात् कांइ नहीं. ॥ ३५ ॥ वली महा बलवालो एवो एक पण सिंहणनो पुत्र (सिंह

र्गस३जो.

॥ ४४ ॥

इस्तिर्रं कुंतस्थलनो घात करवामां समर्थ थाय हे; परंतु शीयालनां खशक्त एवां घणांय बालको कृतरा थकी पण अत्यंत जय पामे हे. अर्थात् सिंहना सरखो पराक्रमवालो एक पण पुत्र सारो, परंतु शियाल सरला श्रानेक पुत्रो कोंइ कामना नही. ॥३६॥ इवे वे काव्ये करीने सर्व गोसी स्र साथे खाधाष्टी थएसी पीडानुं वर्णन करें हें. सुलसाए ए प्रकारे विचार करीने ते सर्व गोली एकी वखते साथे ज तेयेति मैत्वा समकालमेव, संप्राशिरेता ग्रीटिकाः समस्ताः ॥ तीसां प्रैनावेण बैन्बुरुंचे वित्रिदादेंस्या छैद्रेऽंघ गैनीः॥ ३०॥ ैते वैर्रुमानाः समकालेंमेव, चैकुश्चै पीडामुद्रेरेघ तस्याः॥ ेंड्रोणप्रमाणे कैंलरो ंहि खारी, पींपच्चमाना कैंलरां ंजिनत्ति ॥३७॥ खाधी. पढ़ी ते गोखीर्जना म्होटा प्रजावे करीने एना उदरने विषे बत्रीश गर्जी जत्पन्न थया. ॥ ३७ ॥ पठी एकी वखते ज वृद्धि पामता एवा ते गर्जो, तेखीना जद 👺 रने विषे पीडा करवा लाग्या. कह्युं वे के–बत्रीश शेर श्रमाज रांधी शकाय एवा 🞼 पात्रमां सोख मण श्रनाज रांधवाँ जइए, तो ते पात्रने ज फोडी नांखे हे. ॥ ३७ ॥ 🐉

सुस्रसाण है हवे वे काव्ये करीने गर्ज संबंधी यएडी पीडाथी देवताने वोलाव्यो, ते कहे हे सर्गइजो. ज्यारे ए सुस्रसा गर्जनी पीडाने सहन करवाने समर्थ न यह, त्यारे तेणीए फरीथी हिरोगमेषी देवताने संजास्यों कारण के, गाढ श्रंधकार थए हते सर्व जगत्ना के जनोए सूर्य ज स्मरण कर्य हे. श्रंथित सर्व माणसो सूर्यने संजारे हे. ॥ ३ए ॥ यावद्ययां सीद्वमियं न ज्ञाका, सैस्मार ैंदेवं पुनरेव तावत्॥ 'संस्मर्यते 'नास्कर एवं येस्मात्, 'मूढे क्विते सर्वजगज्जनेन ॥ ३ए॥ सा नागपत्नी प्रविधाय कायोत्सर्ग समुद्दिश्य सुरं तदांस्थात्॥ तिद्वियसत्वेन पुनः समित्य, शिघ्रं समानीय केरो स किचे॥ ४०॥ कि कार्यमार्थे पुनरैच जातं, मेथेर्व साध्यं ग्रेरुदेवनके ॥ सैं। पैरियत्वीय र्जगाद सैत्यं, स्वबुिकृत्यं वित्रदृशाय सैर्वम् ॥ ४१ ॥ दे वस्ते नागसारथीनी स्त्री सुखसा गोखी खापनारा हरिणेगमेषी देवताने उद्देशीने कायोत्सर्ग करीने रही. जेथी ते देवताए तेणीना सत्वे करीने फरीथी तत्काख पासे खावी वे हाथ जोडीने कह्युं.॥४०॥ हवे एक काव्ये करीने देवता पोताना स्मरणनुं कारण

पूठे ठे. हे आयें ! हे गुरुदेवजके ! वली आजे म्हाराथी ज साधी शकाय तेवुं बीजुं ह्युं काम आवी पड्युं ? ते सांजलीने, पठी सुलसाए कायोत्सर्ग पारीने सर्व पोतानी बुद्धिथी करेलुं कार्य साचेसाचुं देवताने कह्युं. ॥ ४१ ॥ हवे वे काव्ये करीने देवता, सुलसाने श्रविचाखुं काम करवाथी ठवको आपे ठे. देवताए कह्युं. हे मुग्धे ! श्ररेरे !

> से प्राह सुग्घे हॅहहा त्वयेदं, विचार्य कार्य न कृतं कुँलीने ॥ द्वांत्रिशदेते तेंनया नैविष्यंत्येवीधुना ''किंतु समायुषस्तें ॥ ४२ ॥ र्ष्टथक्ष्यक चेदिमिकास्त्वमात्स्यः, सत्पुत्रदात्रीर्ग्धेटकाः समस्ताः ॥ पुत्रास्तदा ''ते प्रैथगायुषोऽमी, शाेंमिर्यसाराः कृतिनोऽनिवष्यन् ॥४३॥ काम विचारीने क्रेंखुं नथी. कारण के, हे कुढीने ! हमणां तने समान श्राय

ते आ काम विचारीने करेंखुं नथी. कारण के, हे कुतीने ! हमणां तने समान आयु प्यवाला आ बत्रीश पुत्रो उत्पन्न थशे ज. ॥ ४१ ॥ जो तें सत्पुत्रने आपनारी आ सर्व गोत्ती जूदी जूदी खाधी होत, तो त्हारा ए (उदरमां रहेला बत्रीश) पुत्रो जूदा जूदा आयुष्यवाला, महा शोर्धवाला अने विद्वान् थात. ॥४३॥ सुखसा •

हवे व काव्ये करीने सुलसा जाग्यनुं प्रचलपणुं देखाडे वे. ए प्रकारनी ते देवतानी कि वाणी सांजलीने जिनेश्वरना वचनने विषे प्रवीण एवी सुलसाए कह्युं. हे देव ! जीवे जे कर्म (पूर्वे) जेवी रीते बांध्युं हशे, ते कर्म तेवी ज रीते (ते) जोगवेज वे. ॥ ४४ ॥ आ सं कर्म (पूर्वे) जेवी रीते बांध्युं हशे, ते कर्म तेवी ज रीते (ते) जोगवेज वे. ॥ ४४ ॥ आ सं कर्म जोगव्या विना बूटतां नथी. गैविं एवाणीमिति तें। "निद्यान्य, बनाए सा जैनवचः प्रवीए।।। जीवेन यंत्केर्म येथेव बेंक्, तिथेव तिर्द्वज्यत ऐव दिव ॥ ४४ ॥ संसारवासे कैतकर्मणोर्ऽत्र, मुजप्रविष्टैरंपि बुट्यते न ॥ नी चेत्पैरीक्तिः संजिलांतरेकस्तं नस्थसोधिरंपि कैयं ''विपन्नः ॥ ४५॥ संसारवासे कैतकर्मणोर्ऽत्र, मुजप्रविष्टेरिप बुट्यते न ॥ यैन्नैव नाव्यं नवतीह तर्न, तिन्नीन्यथा यैख येदैस्ति नाव्यम्॥ प्रैत्यक्तमें कस्य र्यतोऽस्ति द्वानहीदः पेरस्यैव तैतो र्यंतः स्यात् ॥ ४६ ॥ जो एम न होय तो, जलना मध्यजागने विषे एक स्तंजना महेल उपर रहेलो एवोय पण परीक्तित राजा केम मृत्यु पाम्यो. ? श्रर्थात् करेल्लं कर्म जोगव्या विना क्यारे पण इटतुं नथी. ॥ ४५ ॥ श्रा लोकने विषे जे पुरुषने जे कांइ पण थवानुं नथीज खज्युं,

तेने ते कांइ पण थतुं नथी, अने जे पुरुषने जे कांइ थवानुं खज्युं हे, ते थया विना रहेतुं नथी. कारण के, एक पुरुषने जे वस्तुथी प्रत्यक्त खाँज हे, ते ज वस्तुथी बीजा 🗐 पुरुषने हानी थाय हे. ॥४६॥ मनुष्योने जेवा प्रकारनी जवितव्यता होय, तेवा ज प्रका रनी तेने मित थाय हे, श्रने सहाय्य पण तेवी ज मखे हे. जो एम न होय तो परम

संपद्यते 'सैर्व मंतिर्जनानां, तीहक् सहाया श्रेपि 'सेंजवंति॥ संपद्यते सिवं मितिजनाना, ताहक सहाया आप तानवात । याहक्स्वरूपा नैवितव्यताँस्ति, नो 'चेत्कैंद्यं 'दीव्यिति धेंमीजोर्ऽपि॥४७॥ ग्रेणानिरामो येदि रामचंजो, राज्येकयोग्योऽपि वैनं जगाम ॥ 'विद्याधरः श्रीद्राकंधरश्चेत्, प्रजूतदारोऽपि जैहार 'सीताम्॥ ४६ ॥ धार्मिक धर्मनो पुत्र युधिष्ठर पण शा माटे यूत रमे ? श्रर्थात् जेवुं जाग्य तेवी ज बुद्धि जत्पन्न याय हे. ॥ ४९ ॥ वही जो गुणोए करीने मनोहर श्राने राज्यने योग्य एवा राम चंज्र पण वन प्रत्ये गया, तो घणी स्त्रीचं हतां पण विद्याधर एवा रावणे सीतानुं ह

रण कखुं. श्रर्थात् ए सर्वे जाग्यना श्राधीनपणाथीज थयुं हे. ॥ ४७ ॥

सुखसा 🏻

॥ ४४ ॥

ते कारण माटे हे धर्मना श्रानुरागी हरिणेगमेषि ! हुं शोक करती नथी, तेम विस्मय पण पामती नथी. केम के, श्रालोकने विषे बुद्धि कर्मने श्रानुसरनारी हे, एम हुं मानुं हुं. जेथी माणस निश्चे जाग्यमां लखेली वस्तुने पामे हे. ॥४ए॥ हवे बे काव्ये करीने सु लक्षा पोताना गर्जनी पीडा निवृत्त करवानुं कहे हे. माटे हे देव ! जो त्हारी कांइ पण धर्मानुरागिन् हैरिणेगमेषिंस्तस्मान द्वीचामि न विस्मये च ॥ कैमीनुगा बुँदिरिहेति मैन्ये, प्राप्तव्यमीत्रोति जैनो े हि र्न्दैनम्॥ ४ए॥ तेद्वेव काचित्तेव दाकिरैस्ति, पीडां मदीयां हैर सैत्वरं त्वम् ॥ 'नो 'चिन्निजं 'मंदिरमींशु याँहि, 'जाह्ये स्वयं कैर्मरुतं स्वयं र्तु ॥ए०॥ ईत्युक्तवत्याः सहसेव तैस्या, हेत्वा व्यथां तासुदरोज्वां सैः॥ श्रीद्याः सेमस्ता अपि "देहकांत्या, प्रपूरयन्नीतमपदं जैगाम॥५१॥ शक्ति होय, तो तुं म्हारी पीडाने तत्काल नाश कर, श्रने जो त्हारी शक्ति न होय तो जट पोताने मंदिर (देवलोके) पाठो जा. कारण के, म्हारुं करें खुं कर्म हुंपोते ज जोगवीश.॥ ५०॥ ए प्रकारे कहेती एवी ते सुलसाना उदरमां थएसी ते पीडाने

सर्ग३जो.

11 88 11

तत्काल नाश करीने ते नैगमेषी देव पोताना देहनी कांतिए करीने सर्व दिशाउने पण पूर्ण करतो उतो (प्रकाश करतो उतो) पोताने स्थानके (स्वर्गने विषे) गयो. ॥५१॥ पठी विशेषे करीने धर्ममां तत्पर,स्थितिने जाणनारी स्थने सखीउं प्रकास सिंहत एवी ते नागसारथीनी स्त्री सुखसा पण स्थिर एवा सुखकारी पोताना गर्जने सुखे करीने एवी ते नागसारथीनी स्त्री सुखसा पण स्थिर एवा सुखकारी पोताना गर्जने सुखे करीने हितकारी द्यने नियमित एवा पथ्य जोजने करीने पोषण करवा लागी. ॥ ५२॥ इवे सा नागकांतांपि सुँखं सुँखेन, 'विशेषतो धर्मपरा स्वगर्नम्॥ ें हितेंमितेः 'पोषयतिसम पेंथ्येः, स्थिरं स्थितिज्ञा सहिता संखीनिः ५२ अर्थाष्ट्रमाहैः सहितेषु मास्सु, नैवप्रमाणेषु गतेषु धैकाः॥ श्चासन्नसंस्थे परिवारवर्गे, शुँचे मुहूर्ते शुचनावयुक्ते ॥ ५३ ॥ त्रण काव्ये करीने जत्पन्न थएला पुत्रोनुं वर्णन करे हे. पही व्यनुक्रमे साडासात दिव स सहित नव महिना गए उते, परिवार वर्ग पोतानी पासे बेठे उते शुज जाव युक्त एवा शुज्ज मुहूर्तने विषे योग्य एवा जाणे कोइ कामने लीघे एकठा थएला व्यंतरोना है इंडोज होयनी! श्रथवा तो बत्रीश लक्कणोना श्रधिष्टायक देवता ज होयनी! वसी

सुखसाव मूकी दीधी वे सौधर्म देवलोकना वैमानोनी लक्षसंख्या जेमणे एवा जाणे कोइ सर्गरजो. शक्ति विशेष देवता ज होयनी! एवा ते अत्यंत पोताना देहनी कांतिए करीने तेज शिष प्रति करी नांख्या वे घरना दीवार्ग जेमणे एवा श्रेष्ठ वत्रीश पुत्रोने समाधिवासी ते के कि करी नांख्या वे घरना दीवार्ग जेमणे एवा श्रेष्ठ वत्रीश पुत्रोने समाधिवासी ते के कि करी नांख्या वे घरना दीवार्ग के केंद्रांद्रास्ते कैंद्रांत्राणामिव केंद्रांच्याः॥

ैविमक्तसोधर्मविमानलक्तसंख्याः शैलाकात्रिदशा दैवीय ॥ ५४ ॥ दैं।त्रिंदाङ्केंबेर्निजदेहदीप्त्या, ैनिस्तेजितादोषग्रहप्रदीपाः॥ तैया प्रसुताः सैमकालमेव, सैमाधिमत्या तैनयाः प्रैशस्ताः॥ ५५॥ नागस्तेर्दादात्स्रेतजनमहर्षां दर्धापनं मार्गणचेटिकान्यः॥ सुवर्णरत्नानि बेहूनि यस्मात्, सेविंडेपि लीजा खेनुपुत्रलाजम् ॥ ५६ ॥ सुलसाए एकी वलते ज जन्म श्राप्यो. ॥५३॥५४॥५५॥ हवे सात काव्ये करीने वधाइ

दासी र्रोने वधाई रूप घणां सुवर्ण अने रत्नो आप्यां. कारण के, बीजा सर्वे खाजो पुत्र

खाज पठीना हे. श्रर्थात् पुत्रखाजथी हैहा है. ॥ ए६ ॥ दिशाईना श्रंतनागमां विश्रां ति पाम्यों हे मृदंगनो नाद जेने विषे एवं, जेरी (नोबत) ना शब्दे करीने युक्त हे शंखना नाद जेने विषे एवं, तेम ज नृत्य करती एवी वेश्याईए कस्यों हे श्रानंद जेने विषे एवं श्रने बीजा वेषोए करीने श्रर्थात् लोकोए शरीरने विषे धारण करेला वस्त्र श्रने श्रदंकारोनी शोजाए करीने श्राप्यों हे मनने हर्ष जेणे एवं (नागसारथीए

ैदिगंतिवश्रांतमृदंगनादं, ैनेरीरवैर्मिश्चितशंखनादम्॥ रृत्यष्ठधुवारकृतप्रमोदं, विषांतरैर्द्तमनोविनोदम्॥ ५७॥ सुवासिनीमंगलगीतगानं, वित्तानुसारेण वितीर्णदानम्॥ कार्यातराऽऽप्रेरितिकंकरोघं, स्वपूज्यपूजाकरणेरंमोघम्॥ ५०॥

श्रेष्ठ वर्द्धापन कराव्युं) ॥ ५७॥ सुवासण स्त्रीत्रंण कस्तुं वे मांगक्षिक गीतोनुं गान के जेने विषे, वही नागसारथीए पोताना डव्यने श्रनुसारे श्राप्युं वे दान जेने विषे, ते कि मज जूदा जूदा कार्योमां प्रेम्या वे श्रनुचरोना समूहो जेने विषे, श्रने पोताने पूज्य एवा तीर्थंकर श्रयवा साधु विगेरेनी पूजाए करीने सफल एवं (नागसारथीए श्रेष्ठ

सुलसाव ॥ ४६॥ हे तमज शुद्ध कस्यां हे अनेक एस घर जेने विषे, एवुं (नागसारथीए श्रेष्ठ वर्द्धापन करें। सर्गा हे अनेक एस घर जेने विषे, एवुं (नागसारथीए श्रेष्ठ वर्द्धापन करें। सर्गा हे अनेक एस घर जेने विषे, एवुं (नागसारथीए श्रेष्ठ वर्द्धापन करें। सर्गा हे अनेक एस घर जेने विषे, कस्तुं हे संघनुं पूजन जेने विषे, पापठ्यमानामितबंदिलोकं, वावच्यमानामितधर्मशास्त्रम्॥ क्यटाट्यमानामितबंधुवर्ग, सँशोध्यमानामितग्रितिगेहम् ॥ ५ए॥ उनिन्नयूपं कैतसंघपूजं, कैतोत्सवं श्रीजिनमंदिरेषु॥ प्रदीयमानाज्यगुडं गृहेषु, प्रविश्यमानाक्ततपात्ररम्यम् ॥ ६० ॥ संनोज्यमानागतसर्वेलोकं, तांबूलदानेन विधृतशोकम्॥ र्ज्ञावर्जितोत्सारितचित्तरोषं, सत्पात्रदानैविहितान्यतोषम् ॥ ६१ ॥ जिनमंदिरोमां कस्त्रो वे जत्सव जेने विषे,तेम ज घरोने विषे वेंच्यां वे घी गोल जेने क्षे अने वधामणी निमित्ते आवतां एवां चोखानां पात्रोए करीने रम्य एवुं (नाग क्षारथीए श्रेष्ट वर्द्धापन कराव्युं.) ॥ ६० ॥ जोजन कराव्युं वे आवेला सर्व छोकने

र्सं नागनामा रेथिकेषु मुरूयो, दायादसन्मानविधानदकः॥ विपक्तसंखित्तत्रोकतानं, वर्शपनं सारमेकारयञ्च॥ ६२॥ क्रमागते वादरावासरेऽथ, संजोज्य सन्मान्य च गोत्रष्टदान्॥ नामानि 'तेज्यः पितरो सुतेज्योऽमी 'देवदत्ता ईति तार्वदत्ताम्॥६३॥

रथीए जे करवाथी तेना शत्रुर्जनो शोक जोवामां श्रावतो हतो, एवं श्रेष्ठ वर्द्धापन क राव्युं. ॥६१॥ इवे एक काव्ये करीने तेना पुत्रोनां नाम पाडे हे. पही श्रानुक्रमे श्रावेखा बारमे दिवसे गोत्रना वृद्ध पुरुषोने जमाडी श्राने सन्मान श्रापीने ते माता पिताए (सुखसा श्राने नागसारथीए) ते पुत्रोनां 'श्रा देवदत्ता " एवां नाम श्राप्यां. ॥६३॥ **मु**खसा०

II EB II

हवे पांच काव्ये करीने पुत्रोनी बाख्यावस्थानुं वर्णन करे हे. एकेक पुत्र प्रत्ये प्रेरे दिवसे दिवसे देवकुमारनी पेठे वृद्धि पामवा खाग्या. ॥ ६४ ॥ पठी घुर्घुर शब्द क रनारा ते सर्वे कुमारो जेम जेम पृथ्वी उपर पोताना पग मुकवा लाग्या, (श्रर्थात् प्रत्येकमायोजितपंचपंचधात्रीनिरुंचेः प्रतिपाख्यमानाः॥ दिनेदिने र्रेश्विमेवापुरेते, सर्वे कुँमारा ईव देवपुत्राः ॥ ६४ ॥ पदं वितेनुर्भवि ते कैमारा, यथायथा धुर्धुरशब्दकाराः॥ र्तयातयोंचेः 'पितृमातृचित्ते, हैर्षप्रकर्षाः पैदमीद्धुश्र्ये ॥ ६८ ॥ 'तेषां तथा मैन्मधवाग्विद्योषाः, देगोश्रयमाणा व्यतरन् प्रमोदम्॥ सुवेणुवीणामधुकोकिलानां, रैवरा यथा कैर्णविषीवज्रुवः ॥ ६६ ॥ चालवा लाग्या) तेम तेम माता पिताना चित्तने विषे हर्पना समूहोए म्होटुं स्था नक कक्षुं. अर्थात् तेथी माता पिता अत्यंत हर्ष पामवा खाग्या. ॥ ६५ ॥ ते कुमा 🕏 रोनी वारंवार संजलाती एवी मनने मथन करनारी वाणी वे तेवी रीते हर्षने विस्ता

सर्ग३जो.

11 33 B

रती इती के, जेवी रीते श्रेष्ठ वांसली, वीणा श्रमे वसंत क्तुमां कोयल ए त्रणेना शब्दो पण कानने विषे फेर रूप थया. ॥ ६६ ॥ पढी माता पिताए पांच वर्षनी ज म्मरवाला थएला श्रने विनीत एवा ते कुमारो (जणाववा माटे) जणावनार पंिन तने सोंप्या. कह्युं वे के- जातिवंत मणियो पण वैकटिक नामना शस्त्रथी धसाएला ैते पंचवर्षप्रमिता ैविनीताः, समर्पिताः पाँठकपंभितस्य ॥ र्वतिजिता वैकटिकेन हि सैयुनैर्मख्यनाजो मणयोऽपि जात्याः ॥६७॥ कंलाः समस्ता अपि तीन् कुमारान्, प्रत्येकमेकं क्षतमेव वैद्यः॥ गैंगातटानीव मरालमाला, ईवाँलिमाला विकचांबुजानि ॥ ६०॥ बतां विशेष उज्वल थाय हे ॥ ६९ ॥ जेम हंसोनी माला गंगाना तटने श्रने त्रम 🐉 रोनी माला प्रफुक्षित थएला कमलोने वरे हैं, तेम सर्व कलाई पण ते कुमारोने प्र त्येकने तत्काल ज वरी. अर्थात् ते सर्व कुमारोए योडा कालमां पुरुपनी व्होतेर क लानो श्रज्यास कस्त्रो. ॥६७॥

सुलसा०

ង្គ ព

हवे सात काव्ये करीने ते कुमारोनी युवावस्थानुं वर्णन करे हे. सर्व प्रकारना दंग स्थाने श्रायुधना युद्धने विषे निपुण, रणजूमिमां शत्रुडीना पद्धने नाश करनारा, उत्तम जाग्यवाला, श्रवस्थाए करीने समान श्राने श्री श्रेणिक राजाने पण मान्य एवा (ते सर्वे कुमारो प्रधान यौवनने पाम्या.) ॥ ६७ ॥ श्रेष्ट धर्मकलामां चतुर, जिने समस्तदंगायुधयुद्दद्धाः, संग्रामजूमो निहतारिपद्धाः॥

सींनाग्यसारा वयसा समानाः, श्रीश्रेणिकस्यांपि रृपस्य मान्याः॥६ए॥ संवेंऽपि सं ६र्मकलाविदग्धा, जिनेंडपूजाग्ररुन्नत्यमुग्धाः॥ सैख्लक्णेर्लिकतदेहनागा, मानप्रमाणोन्मितनावितांगाः॥ १०॥

श्वरनी पूजा अने ग्रुक्ती जिक्तमां प्रवीण, उत्तम लक्षणोए करीने खंकित (ग्रुक्त) है देहजाग जेमना अने योग्य प्रमाणनी (सात हाथ अथवा एकसोने आठ आंग्र क्ष) उंचाइए करीने सुशोजित है अंग जेमनां एवा (ते सवें कुमारो प्रधान योवन है पाम्या.) ॥ उ० ॥

सर्ग३जो.

11 NG 11

निर्मल मनवाला, सज्जन पुरुषोना मनने श्रानंद श्रापनारा, याचकोने दान श्राप नारा, परस्पर प्रीतिए करीने बांध्यां हे चित्त जेमणे श्रने परोपकारने माटे ज एकतुं कर्छुं हे एक ड्रव्य जेमणे एवा (ते सर्वे कुमारो प्रधान यौवनने पाम्या.)॥७१॥ पही

रैव ज्ञाशया से क्रानमानसाना मानंददा मार्गणदत्तदानाः॥
परस्परप्रीतिनिव इचित्ताः, परोपकारप्रगुणेकवित्ताः॥ ११॥
सेंपूर्ण जाव एयसुधानिधानं, रामा जिनेत्रां ज जिपीयमानम्॥
तिवर्गसंसाधनसावधानं, ते योवनं प्रापुरेष्य प्रधानम्॥ ११॥
रंजोपमाना वयसा सेमानाः, कुँ जीनकन्याः सैजिनं सेंहस्त्रम्॥
ताज्यां पितृज्यां पॅरिणायितारैतेः, सँवैंः कुमारेर्महता महेन॥ १३॥

ते कुमारो संपूर्ण खावण्य रूप अमृतना जंमार, स्त्रीर्डए पोताना नेत्र रूप अंज 🕏 खीए करीने पान कराता श्रने त्रिवर्ग (धर्म, श्रर्थ श्रने काम) ना साधनने विषे सा 🕏 विधानजूत एवा प्रधान यौवनने पाम्या. ॥ ७२ ॥ पढी ते माता पिता (सुक्षसा श्रने 🕏

<u> वुखसा</u> •

॥ अए ॥

नागसारथी) ए, ते सर्वे कुमारोने म्होटा जत्सववडे रंजा सरखी जपमावासी, समान है वयवासी एवी (एकेक पुत्रने बत्रीश बत्रीश एम) एक हजारने चोवीश कुसीन कन्याउं (शार्वेलविक्रीडितं वृत्तम्)

परणावी ॥७३॥ योताना रूपे करीने जगत्ने जीतनारा कामदेवना सरखी महा कांतिवाला, 🕏

ते सर्वे निजरूपनिर्जितजगत्कामप्रकामित्वषः, श्रीमह्रेणिकनूपतेः सहचरा राज्ञा युता ''रेजिरे ॥ सीख्यांनोधिनिमप्ननीतिनिषुणाः स्नेहानुविद्यांतरा, स्नायकत्रिशकदेवता ईव महिपिविऽवैतीर्णा नवाः ॥ १४॥

श्रीमान् श्रेणिक राजाना सहचरो (साथे फरनारा),सुख रूप समुद्रमां बुड्या ठतां पण नैतिमां निपुण त्राने स्नेहची विंधाई गयां हे (परस्पर) श्रंतःकरण जेमनां एवा ते सर्वे कुमारो श्रेणिक राजाए करीने युक्त हता जाणे पृथ्वीना पीठ उपर श्रवतरेखा न वीन त्रायत्रिंशक नामना देवताउंज होयनी ! एम शोजता हता. ॥ ९४ ॥

सर्ग३जो.

וו שע וו

पोतानी मरजी प्रमाणे वन,वाब्य,पर्वत श्रने नदीना तीरने विषे बांध्यो वे श्रादर जेमणे, इस्ति तथा श्रश्वोनी खेलनकक्षा श्रने दंग तथा श्रायुधने विषे धुरंधर, म्होटां म्होटां स्तोत्र, कविनां काब्य, नाटक श्रने कथा संबंधी यंथोना श्रर्थना विचारमां तत्पर एवा

> स्वज्ञंदं वैनवापिकानगनदीतीरेषु वैश्वाद्राः, सर्वे ते गजवाजिखेलनकलादंगयुधेषूं श्रुराः॥ स्कालीकविकाव्यनाटककयायंष्टार्थितापराः, कैलं विभागवार्वेज्युरंनघा द्वीगुंदका वीमेराः॥ १८॥

पुष्यवान् ते सर्वे कुमारो जाणे दौगुंदक देवताज होयनी ! एम कालने निर्गमन करता हता. ॥ ७५ ॥ इत्यागमिक श्रीजयतिलकसूरिविरिचते सम्यक्त्वसंज्ञवनाम्नि महाका व्ये सुलसाचरिते सुतजन्मोत्सवो नाम तृतीयः सर्गः ॥ सुलसा •

॥ ५०॥

सर्ग ४ थो.

(वंशस्थवृत्तम्)

हवे मनोहर किल्लाची सुशोजित, विशास सजाग्रहवासी छने श्रेष्ठ एवी विशासा नामनी नगरी है. जे नगरीने विषे अर्थात् जे नगरीना फरती समुझना सरखी ईतश्रे वैशाखनिधा पुरी वैरा, विशालशालांस्ति सुशालमालिनी॥ तैमालतालीवनराजिराजिता, "विचाति येत्रींबुधिवत्सुँखातिका ॥ १ ॥ मेदो इतारिक्तयिर्तारिसंगरे, बेंजूब तैस्याः "किल "चेटको र्नृपः॥ यदीय एकोउँपि संपक्तमार्गणो, विपक्तलक्तं विद्धाति विध्यताम् ॥ २ ॥ ताल श्रने तमालना वननी पंक्तिथी सुशाजित एवा म्हाटा खाद राजा रहा उत्तर की जेनुं एक पण पीठावालुं बाण, लालोगमे शत्रुने वींधी नांखतुं हतुं एवो श्रने शत्रुनेना युद्धमां मदोन्मत्त शत्रुनेनो नाश करनारो ते नगरीनो निश्चे चेटक नामनो सम्बाद्ध हतो. ॥ १ ॥

सर्गधयो.

॥ ५०॥

ते वखते ए चेटक राजाने पोताना खरूपे करीने तिरस्कार करी हे नागकन्या जेणी ए एवी, जिनेश्वर जगवाने कहेला तत्वार्थना विचारमां श्रादरवाली, उत्तम लक्षण वासी, सर्व प्रकारनी कलामां निपुण, निरंतर शृंगाररसना एक मंदिर रूप, मनोहर, उँने तदास्तोऽस्य सुति कुँमारिके, स्वरूपनिर्नित्सतनागकन्यके ॥ सुवासिनीपंचस्तान्यर्जंत्तरे, "जिनेंदतत्वार्घविचारसादरे ॥ ३॥ संलक्कणे सर्वकलाविचक्कणे, सदैव शृंगाररसेकमंदिरे॥ मैनोहरे 'योवननारनंगुरे,सुँजेष्टिकाचिद्धणके चैंप्रिन्ख्यया ॥ ४ ॥ युग्मम्. श्रयोन्यदा कांपि तपस्विनिव्ववा, विदंगकुंमीजलपीविकाधरा॥ सुधातुरक्तांबरधारिका 'शिखान्विता र्स्वशास्त्रार्थविशेषपोषिका ॥ ५ ॥ यौवनना जारे करीने रम्य श्रने सुवासिनी एवी पांच पुत्री पढ़ीनी सुज्येष्टा श्रने चि-ह्यणा नामनी वे कुमारिका पुत्री ईहती. ॥ ३ ॥ ४ ॥ इवे एकदा त्रिदंम, कमंमद्ध, ज स अने माजना आसनने धारण करनारी, सुधातु (गेरु) थी रंगेलां रातां वस्त्रने धा १ प्रभावती, शिवा, मृगावती, ज्येष्टा अने पद्मावती.

सुखसाः रण करनारी, शिखावासी, पोताना शास्त्रार्थनुं विशेषे पोषण करनारी अने तपस्तिनी सुखची बेठेसी, सखीउंघी वींटायसी छने हर्षवासी ते (सुज्येष्टा छने चिल्लाण ए) बन्ने कुमारीकार्जनी पासे श्रकसात् श्रावी. ॥५॥६॥ पठी ते तपस्विनी पोतानी मेखे तेम तियोरीकस्मार्डपविष्टयोः सुखं, स्वकन्यकांतःपुरमध्यसंसदि ॥ सँखीनिरीवेष्टितयोः प्रैहष्टयोः, पुँरः पैरिव्राजिकका सैमाययो।।६॥ युग्मम्। स्वयं समादाय तैदंतर्रासनं, र्स्योचिमेषा "निजधर्मर्मादिशत्॥ निशम्यमानः ''किल बीलमानसे, 'विज्ञाति रेम्यो नै तुँ यो ''विपश्चिताम् ॥ निशम्य पेष्ठी पैरमाईती सुता, तेङ्कमंतर्ज्वलिता क्रुंधा नृशम्॥ जगाद जो जीवद्यां विद्वाय यैदिधियते 'ही चभही चभव तैत्।। ए ॥ नी मध्ये श्रासन उपर बेसीने पवित्रता युक्त पोताना धर्मनो उपदेश देवा लागी. जे धर्म हैं सांजु बतो निश्चे मूर्व लोकोना चित्तने विषे ज शोजतो हतो; परंतु विद्वान् पुरु हैं पोने रम्य लागतो नही. ॥९॥ परित्राजिकाए कहेलां वचनने सांजुलीने परम श्ररिहं

त प्रजनी जक्त एवी चेटक राजानी ठिटी पुत्री सुज्येष्टाए, क्रोधथी श्रत्यंत मनमां ब क्षितां ठतां कह्युं. श्ररे! तुं जीवदयाने त्याग करीने, जे पवित्रता करे हे, ते श्रपवित्रता ज हे. श्रर्थात् जीवदया एज पवित्रता हे. ॥ ए ॥ श्राक्षोकने विषे दया विना श्राच है देवं श्रने गुरुना चरणनुं पूजन, तप, क्षमा, स्नान, जप श्रने (होकोने करें हो) है है हो विना है वगरुक्रमार्झनं, तपःक्तमास्त्रानजपोपदेशनम् ॥

देयां विना देवग्रहक्रमार्झनं, तपःक्तमास्नानजपोपदेशनम्॥ विनिर्मितं सर्वमंपीह निष्फलं, विभाति नो केषणविना जलम्॥ ए॥ देयैव मूलं किल धर्मनूरुहो, विधीयते सा सुतरामखंकिता॥ देयां विना धर्मफलेर्ने युँज्यते, येतः समूलः फैलतीह पादपः॥ १०॥

उपदेश निष्फल एवं ए सर्व पण जल विनानी खेतीनी पेठे शोजतुं नथी. ॥ए॥ दया ए ज निश्चेधर्म रूप वृक्तनुं मूल कहेलुं ठे. माटे श्रत्यंत श्रखंकित एवी ते दयाने ज पा लवी. कारण के, दया रूप मूल विना धर्म रूप वृक्तनां फलो मलतां नथी. केम के, श्रालोकने विषे मूलवालुं वृक्तज फले ठे. ॥ १०॥ सुससाव

११ पर ॥

श्रहो! गाख्या विनाना श्रने श्रत्यंत जीवोधी व्याप्त एवा नदीना श्रने तखावना जखने विषे निरंतर स्नान करनारा श्रने गेरुश्री रंगेखां रातां वस्त्रोने धारण करनारा जखशू करोना हृदयमां ते दया क्यांश्री होय ? श्रर्थात् नज होय. ॥ ११ ॥ श्राखोकने विषे जो के, श्रा शरीर जखना कोडो घडाधी धोइए श्रने माटीवडे घसीए, तो पण निरं श्चेगा ितं जीवसमाकुले नैत्रां, नैदीतराकां निस मंजतां सदा ॥ देंया क्रैतः सा जेलपोत्रिणामैहो, कषायरक्तांबरधारिणां हैंदि ॥ ११॥ **इंदं दारीरं जलकुंजकोटिजिर्निमज्यते येदौपि धृष्यते मृदा ॥** तथोि नैंति नैंवतीह निर्मलं, सेदा सुरानांनिवाँचितं मैंलेः ॥ १२ ॥ जैलैरिनेकेरिप ईष्टमींतरं, श्रारीरिणां शुध्यति "नैव केहिचित्॥ प्रैजूततीर्थस्निपतौप तुंबिका, कंदुत्वमीऊन्न यथा प्रियार्षिपता ॥ १३ ॥ तर मलुंची लिंपायला मद्यना पात्रनी पेठे श्रंदर हुद्ध थतुं नथी. ॥ ११ ॥ जेम घणां 📳 तीर्थने विषे स्नान करावेदी श्रने स्नामीए श्रर्पण करेद्धी श्रर्थात् मिष्ट जलयी सिंचन करेद्धी एवी तुंबडी पोतानी कडवाशने त्याग करती नथी, तेम प्राणीर्टनुं छुष्ट (श्रप

सर्गध्यो.

॥ ५२ ॥

वित्र) एवं श्रंतर (हृदय) घणाय जसे करीने क्यारे पण शुद्ध थतुंज नथी. ॥ १३ ॥ कह्युं वे के-यम नियम रूप जलथी पूर्ण, सत्य रूप प्रवाहवासी, शीखबत रूप तटवाली श्चने दया रूप तरंगोवाली श्चातमा रूप नदी हे. हे पांकुपुत्र ! ते नदीने विषे स्नान कर. कारण के, श्रंतरात्मा जलथी शुद्ध थतो नथी. श्रर्थात् श्रंतरात्मा तो उपर कहे स्ती नदीना जस्रथी ज पवित्र थाय है. ॥ १४ ॥ है परिवाजिके! श्चात्मा नदी संयमतोयपूर्णा, सत्यावहा देशिलतटा द्योमिंः॥ त्रंत्रोनिषेकं कुँरु पांपुष्त्र, में वीरिणा श्रें इयति चीतरात्मा ॥ १४ ॥ ्रैं अये जें ले ये कियते निमक्तनं, सैपापदेहे निजपापमुक्तये॥ निबोध रैकार्कि पैटस्य धीवनं, तदंत्र रैकांजसि शुक्कते हता ॥ १५ ॥ पोतानुं पाप मूकावाने छार्थे जलने विषे जे स्नान करे हे, ते छालोकमां वस्ननी उज्वलता इन्नारा पुरुषे रुधिरथी राता थएला पाणीने विषे वस्त्रने धोवा जेवुं हे! एम जाए. श्रर्थात् श्रनेक जीववाला पाणीमां स्नान करवुं ए कांइ पाप मुकावाने माटे नथी यतुं, परंतु पाप बंधावाने माटे थाय हे. ॥ १५ ॥

सुससा०

ા પર ા

श्राखोकने विषे जेमाणस तीर्थकेत्र विनानी बीजी जूमिमां जे कांइ पाप करे हे, ते पापनो तीर्थक्तेत्रमां गएला माणसो नाश करे हे,परंतु जो ते माणसो ते तीर्थक्तेत्रने विषे पण पाप बांधे हे, तो पही ते पापनो नाश शी रीते याय? अर्थात् न ज थाय. ॥ १६॥ ए प्रकारना वचनोथी ते सुज्येष्टाए पोतानी सखीउंनी समक्तमां ज जखने विषे शुकर यैदैन्यजूमो कियतेऽत्र पातकं, तद्दैस्यते धर्मजूवं गतिर्जनेः॥ 'पेरंत तेंत्रापि' 'निबद्धते येदि, कैंयं 'विमोक्तः किल तेंस्य देंश्यते॥१६॥ तैयेति वाक्येविंहिता निरुत्तरा, संखीसमक्तं दंकशूकरांयिका॥ र्गेले विधत्याशे रेपांगणाई हिविंहस्य तैलर्मकर निरासि सी॥ १९॥ कुधा ज्वलंती हुँदि कूँटमंदिरे, ततः परिव्राजिकिकँस्यचितयत्॥ ैं इमां स्वपां फित्यमदेन गैवितां, क्वेचित्स पत्नीव्यसने 'किपार्म्यहम् ॥१७॥ समान एवी ते परित्राजिकाने बोखती बंध करी दीधी. पठी तुरत तेणीनी दासीचे ए हास्य करीने ते परिवाजिकाने गक्षे पकडीने राजाना त्र्यांगणामांची वहार काढी मुकी. ॥ १७ ॥ पठी कोधथी कपटना घर रूप हृदयने विषे वसती एवी ते परिवा-

सर्गधयो.

ก นุร ก

जिका, मनमां एम विचार करवा लागी के, पोतानी पंक्तिताइना मदे करीने गर्व पा मेली छा सुज्येष्टाने हुं कोइ शोक्यना छःखमां नांखुं. ॥ १० ॥ पठी केवल मत्सरवाली ते परिव्राजिका, आदरथी पट्टने विषे रंगथी सुज्येष्टाना प्रतिविंबने आसेखीने पठी त पारत्राजिका, आदरथा पहन विभ रचना छुज्यामा नाताच्या जाया । जाया जामती वृती (राजगृह नगरमां) श्रेणिक राजा पासे गइ. त्यां श्रेणिक राजाथी मान तैतस्तदीयं प्रतिविवमौदरादिलेस्य वैर्णैः फलके श्रमंत्यैसी॥ श्रेगार्डपश्रेणिकमेकमत्सरा, त्वेवींप्य मीनं र्टंपतेरेंद्र्शयत् ॥ १ए ॥ निरीक्ष्य तेंडूपमैधीश्वरो जुबिश्वरं निद्ध्यो हिंदि रूपविस्मयात्॥ पंडे किमेषा लिखिता तिलोत्तमा, स्मरित्रया वीर्थ जुनंगकन्यका ॥ २०॥ पामीने पठी तेणीए ते पट राजाने देखाड्यो. ॥ १७ ॥ पृथ्वीना श्रिधिपति श्रेणिक राजाए ते रूपने जोइने तेना आश्चर्यथी हृदयमां घणा वखत सुधी विचार कस्त्रों के, पद्दने विषे आसेखेली आ द्युं तिलोत्तमा हे ? अथवा स्मरिप्रया (रित) के, नाग 🕏

सुखसाव (पार्वती) के, इरिप्रिया (सक्सी) के, रिववहाजा (रह्नादेवी) अथवा सरस्रति हे ? गमे ते हो, पण आ मानुषी (मनुष्यनी जातिनी स्त्री) घटती नथी. ॥ २० ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥ कारण के, जे तिस्रोत्तमा हे, ते तो तस्रना जेटसी ज उत्तम हे. अथवा जे रित हे, ते तो कामना बखी जवाथी डुःखीत हे, तेम ज जे नागकन्या हे, ते तो निश्चे जैलामरी वी वैनदेवतीथवा, खैदेवता वी हैरवल्लनीयवा॥ हैरित्रिया वैं। रेविवल्लर्जीयवा, सैरस्वती वौं धैंटते नैं मानुषी॥ ११॥ ैतिलोत्तमा सा ैतिलमात्रमुत्तमा, रंमरत्रिया सा रंमरदाहुङ खिता ॥ ैदिजिह्मतांका ''किल साहिकन्यका,जैलामरी वो के जैलेश्वेरीहरा॥१२॥ वैनेचरी सा वैनदेवता पुनः, खदेवर्ताकाशमुखी सदेव सा॥ हैंरांगना सीर्धेज्ञारीरिणी 'किल, हैंरिप्रिया सा चैपलत्वदृषिता ॥ १३ ॥ बे जीजना चिन्हवासी हे. वसी जे जस (जड़) नी मासिक जसदेवता हे, ते 🕏 तो आ प्रकारना रूपवाली होय ज क्यांथी ? अर्थात् जलदेवता पण आवा स्वरू-पवासी नथी. ॥ ११ ॥ जे वनदेवता हे, ते तो वनमां फरनारी हे. वसी जे आकाश-

देवता है, ते तो निरंतर छंचुं जोनारी है, तेम ज जे इरिप्रया (पार्वती) है, ते के तो निश्चे श्वर्थ शरीरवासी (श्वर्थांगना) कड़ेवाय है, श्वने जे इरिप्रिया (स्वस्ती) है हे, ते चपस्पणाची दोषवासी है. ॥ १३ ॥ जे रिववस्वा है, ते तो सूर्यनां तीदण किरणोना समूहना विशेष तापने पामी हती निरंतर जाज्वस्त्रमान (बसती होय

खरांशुसंपर्कविशेषतापिता, सेदा कैवलंती रेविवल्ला तु सा ॥ दिवानिशं सा कैरसंस्थपुस्तिका, 'विचितया वैययमनाः सरस्वती ॥ २४॥ ईयं सुरूपा लिखिता नितंबिनी, मेनुष्यलोके घटते केयं घतः ॥ क्वेतो रसायां घनसारसंज्ञवो, मैरुक्तितो केंद्रपलतोज्ञमोऽयवा ॥ २५॥

पु**खसा** •

। ध्यः ॥

उत्पत्ति क्यांथी ? ॥ १५ ॥ जो श्रा कोइ मनुष्य लोकनी उत्तम स्त्री होय, तो एणीनो वनावनार ते ब्रह्मा कोइ बीजो ज होवो जोइए, कारण के, कलावान् एवो पण कुमा-मनो वणकर जीणां रेशमी लूगडां वणवामां समर्थ केम होय ? श्रर्थात् नज होय.

श्रिसावैपि रेयाचँदि मानुषीवरा, तैदाउँदसीयो विधिरैन्य ऐव सः॥ कैंयं हिं कुँयामकुविंद ईँश्वरो, भैंवेत् कैंलावानैंपि पैंद्दकर्मणि॥ १६॥ हैदीति तं विरेमयमानसै इके स्त्रिदं िनी समाह पुनिनरेश्वरं॥ मेहीपते विस्मियसे कैयं भृदां, येथीस्त रूपं लिखतं र्तया ने वै॥ १०॥ र्दं कैनी चेटकजूपतेः पुनर्स्तवैव योग्यांस्ति सुरूपताज्ञता ॥ सुवर्णमण्यो''रिव भैंगमोर्सेत वीं,सँका गैदित्विति गैता यैष्टागतम्॥ २०॥ ॥ १६ ॥ ए प्रकारे हृदयमां ऋत्यंत विस्मय पामेला ते राजाने फरीथी परिवाजिकाए कह्युं. हे महीपते ! केम श्रत्यंत विस्मय पामो ठो ? कारण के, हजु जेवुं रूप ठे, तेवुं 🕏 तो लक्ष्युं नथी. ॥ १९ ॥ श्रा चेटक राजानी न्हानी पुत्री ठे. वली उत्तम रूपने

सर्गधयो.

॥ यय ॥

धारण करनारी ते त्हारे ज (परणवाने) योग्य हे. माटे सुवर्ण अने मणिनी पेठे तमारो हम्मेश संग थार्ज. एम कहीने ते परित्राजिका, जेम आवी हती तेम पाठी चाखी गइ. ॥१७॥ पठी पद्द थकी श्रवण (कानना) मार्गे करीने हृदयमां पेठेखी आ नृप पुत्री सुज्येष्टाने चिंतवन करता एवा ते श्रेणिक राजाए प्रकृष्ट समाधिमां (ध्येय पदार्थनी साथे) ऐक्य पामेखा महायोगीनी पेठे सुज्येष्टा विना बीजुं कांइ पण नहिं तैतः क्तितीशो नृपनंदिनीमिमां, हृदि प्रविष्टां श्रुतिवर्त्मना पैटात्॥ विचित्रवंत्रेव विवेद किंचैन, विशिष्टयोगीव क्षयं पैरं गैतः ॥ १ए ॥ दैदर्श रूपं ने पुरोर्देपि संस्थितं, गिरं ने श्रेश्राव निवेदितामिषि॥ विवेद गेंधं ने चै नै।सिकागतं, रेंसं ने मेन सेरसं रेंसईपि॥३०॥ जाखुं. ऋर्घात् ते सुज्येष्टाने विषेज उत्कंतित ययो इतो. ॥ १७ ॥ जेथी ते श्रेणिक-राजाए पोतानी आगल रहेला एवाय पण रूपने न जोयुं, तेम ज कहेली वाणीने पण न सांजली. वली नासिका प्रत्ये प्राप्त थएला गंधने पण न जाएयो अने जमतां ठतां पण रसने सरस न मान्यो.॥ ३०॥

युससाव

॥ ५६॥

वसी ते श्रेणिक राजाए पोताना श्रंगने स्पर्शित थएखा कोमख एवांय पण हंसनां पिंठां विगेरे पदार्थोना स्पर्शने पण न जास्यो. एवी रीते दिवस श्रने रात्री सुज्येष्टाने विषे ज उत्कंठित थएखो ते राजा उदासिन मनवाखा पुरुषनी पेठे देखातो हतो. से इंसतूलीप्रमुखान्मृदूर्नीप, बुबोध नावानीप नांगसंगतान्॥ तेदेकतानो नेपतिर्दिवानिशां, बैजाबुँदासीनमनाः पुँमानिव॥ ३१॥ तंतर्श्वं सेवावसरे सुतोऽनयकुमार आगत्य पुरो नमझँपि॥ र्नंपेण नीकायि तेदीयमानसं, पैरंतु तेनीवगतं केचिकतम् ॥ ३० ॥ श्चिव्यथ्रमालोक्य निपत्यपादयोर्जगाद तातं विनयेन नेंदनः॥ कि विद्ययसे देवं सुंडर्मना ईव, विद्रोषचिंताविधुरं कैंघं मैंनः॥ ३३॥

॥ ३१ ॥ पठी सेवाने श्रवसरे पासे श्रावीने नमस्कार करता एवा पण श्रजयकुमार पुत्रने राजाए जाण्डो नही, परंतु ते श्रजयकुमारे तो ते राजानुं चित्त क्यांहि गएछुं डे एम जाएयुं. ॥ ३१ ॥ पठी श्रजयकुमारे पिताने उदासीन जोइने विनयशी पगमां सर्गधयो.

॥ ५६ ॥

पड़ीने कहां. हे देव! तमे उदासिन सरखा केम देखाई हो ? अने तमारुं मन महा चिंताची व्याकुल केम हे ? ॥ ३३ ॥ हे जगत्ने विषे एक वीर! मरण पामवाने इष्ठता एवा कया पुरुषे तमारी उल्लंघन न थाय एवी आज्ञा उल्लंघन करी ? ते पुरुष, म्हारा शीष्ठगति करनारा बुद्धिरूप बाणोए करीने ताडन कस्बो हतो क्रणमात्रमां पण

श्रिलंघनीया नंतु केन ढांघिता, सुमूर्षूर्णांक्षा जगदेकवीर ते ॥ से बुँध्विष्णोनिहतो मैमोशुगेर्वेशंवदर्स्ते र्नवतार्त्क्षणादिपि॥ ३४॥ विशेषरूपातिशयेन शालिनीं, नरेंडकन्यार्मपरां मेनोहराम्॥ चिकिषसे वीध मदीयमातरं, प्रसीद कींर्य मैम शाधि सैत्वरम्॥ ३८॥

हुं तमारे वश्य हुं, एम कहेनारो थार्ज. ॥ ३४ ॥ श्रथवा हे तात ! श्रत्यंत श्रेष्ठ रू-पथी सुशोजित श्रने मनोहर एवी बीजी राजकन्याने म्हारी माता करवाने इन्नो हो ? श्रयात् कोई रूपवंती राजकन्याने परणवानी इन्ना करो हो ? हे पिता ! प्रसन्न थार्ज श्रमे मने तत्काल चिंतवेला कार्यनी श्राङ्गा करो. ॥३५॥ सुखसाः

॥ ५७ ॥

पठी फरीथी प्राप्त थइ हे चेतना (स्वस्थता) जेने, तथा मनमां रहेखी सर्व वात प्रगट करवावडे ब्यादरवाला श्रेणिक राजाए ब्यजयकुमारने कह्युं के,हे वस्स!समस्त राज्यमां म्हारे प्राप्त थएखा कार्यने करनारो तुं एक ज हे,पण बीजो कोइ नथी.॥३६॥ हे प्रत्र ! श्रा लोकने विषे त्हारा सरला पुत्रे करीने हुं छः खरहित थयो ढुं. तथापि शुं करं? श्रयाँह राजा पुनरात्तचेतना, भनागताविष्करणेन सादरः॥ विमेवें 'मे वत्स''विरूढकार्यकृत्, समस्तराज्ये नै पैरोऽस्ति केंश्यन॥३६॥ तैया निरस्ताधिरिहाँ स्मि सूनुना, परंतु किं वेत्स करोमि "मेर्देधुना ॥ स्वयं पैरिवाजिकैयोक्तरूपया, हैंतं मैनश्रोर्टेकराजकन्यया ॥ ३९॥ तैतः सुनंदातनयो नयोचितं, वैचो बनापे सै मैनीिषशेखरः॥ विंषीद मा तात निज प्रेसन्नतां, प्रेंहीयतां दूंत ईमं रेंपं प्रेंति ॥ ३०॥ कारण के, इमणां पोतानी मेखे परिवाजिकाए कहां वे खरूप जेणीनुं एवी चेटक राजानी पुत्रीए म्हारुं मन हरण करेख़ुं हे. ॥३९॥ पही मनस्वी (बुद्धिवान्) पुरुषोमां श्रेष्ठएवा है ते सुनंदाना पुत्र अजयकुमारे नीतियुक्त वचन कह्युं के, हे तात! खेद न करो. प्रसन्न

सर्गध्यो.

n 49 II

थार्ज श्रने ए चेटक राजा प्रत्ये दूत मोकलो. ॥३०॥ पढी हस्तना पराक्रमे करीने जीत्या वे छनेक शत्रु जेणे एवा श्रेणिक राजाए छजयकुमारना वचनथी एक हितस्वी दूत विशाला नगरी प्रत्ये मोकख्यो. त्यां प्रतिहारे आका कराएलो ते दूत वेगधी वि-शाखा नगरीना राजमंदिरने विषेगयो. ॥ ३७ ॥ योग्य श्रासनना दानथी मान पामेखो तैदीयवाक्यात्र्रहितो हिंतो मेहीजूजा जुजावीर्यजितामितारिणा ॥ रैयेण वेदीालिकराजमंदिरे, गैतः सँ दूतः प्रतिहारवेदितः ॥ ३ए ॥ प्रणम्य तं चेटॅकराजमुंबकेंर्जगाद योग्यासनदानमानितः॥ कॅमेण दूतः कैंतकोतुकः सेतां, वचःप्रपंचेरित कैंार्यमीशातः॥ ४०॥ त्वांस्ति या देवे केलाकलापिनी, कॅनी विनीतांगमधर्मवेदिनी॥ निंजार्थमेंत्र प्रेंहितो र्रेस्म याचितुं, जिंतारिणा श्रेणिंकेनू जुजा तेकाम्॥४१॥ दूत,ते चेटक राजाने श्रधिकताथी प्रणाम करीने श्रनुक्रमे वाणीना प्रपंचे करीने पंकि-त पुरुषोने श्राश्चर्य करतो उतो पोताना स्वामीनुं कार्य श्रा प्रकारे कहेवा खाग्यो.॥४०॥ 💲 देव! कखावाखी, विनयवाखी तथा श्रागममां कहेखा धर्मने जाणनारी जे तमारी मुखसा**ः**

n 40 ii

न्हानी पुत्री हे, तेनी पोताने माटे याचना करवाने अर्थे जीत्या हे शत्रु जेणे एवा श्रेणिक राजाए मने आहें (तमारी पासे) मोकख्यो हे. ॥ ४१ ॥ ते दूतनुं कहेवुं सांजलीने चेटक राजाए कद्युं. " अरे दूत ! म्हारी आगल एवं न बोलवुं. कारण के, हैस्तयवंशमां जत्पन्न थएली आ पुत्रीने वाहिक कुलने विषे हुं क्यारे पण नहि

तेष्ठक्तमौकर्ष नैरेंष्वेटको, बँजाण रें दूंत न वाच्यमँयतः ॥ सुतामिना हेर्रतयवंशसंज्ञवां, देंदामि वीहीककूले ने केंहिंचित् ॥ ४५॥ निराकृतोऽसौ पुनरेत्य सत्वरं, शारांस सर्वे मगधेश्वराय तत्॥ निरोऽज्ञविद्यामसुख्जविर्त्तदा, विद्युर्यथीं नित्यविद्युत्तदाद्यतः॥ ४३॥

आपुं. "॥ ४२ ॥ ए प्रकारे कहीने चेटक राजाए काढी मूकेखा ते दूते तत्काख पाठा अधिने ते सर्व वात मगधेश्वर (श्रेणिक राजा) ने कही. तेथी ते वखते श्रेणिक राजा निरंतर राहुथी घेराएखा चंद्रनी पेठे स्थाम थइ हे मुखनी कांति जेनी एवो अधि। ॥ ४३ ॥

सर्गधचो.

॥ एउ ॥

ते वसते महा प्रधानोमां धुरंधर (मुख्य) एवा अजयकुमारे महा फु:सने विषे नूर्व गएखा पोताना स्वामीने (श्रेणिक राजाने) कह्युं. "हे प्रजो ! फट शोकने त्याग करो श्चने स्थिर थार्ज, जेम हुं तमारा इष्ठित कार्यनी सिद्धि करुं"॥ ४४ ॥ प्रथम दावानख श्रिश्ची बखेखा श्चने पढी नवीन मेघना सिंचनथी नवपह्मव थएखा एवा वनजूमिना महाधिमयं निजनायकं तद्जियो महामात्यधुरंधरो जगौ॥ प्रनो 'विमुंचार्त्रा शुचं ''स्थिरीनव,र्नथामि 'सिष्ठि तैव वैांवितं यैथा॥४४ र्मुङ:खदग्धोऽपि तदीयवाक्यतः, पुनैर्नवीजृतमुख इविर्धिनौ॥ नैवांबुसेकादिंव पैल्लवोन्मुखो, देवाभिद्रभो वेनजूमिपादपः॥ ४८॥ नैरेंडमीएड्य तेतो गृंहं गतोर्डनयोऽपि हैंपं फेलके निजिशातुः॥ लिंजिख सर्वांगविजागजासुरं, सुरासुराणार्मेषि देत्तविश्रमम् ॥ ४६ ॥ श्रेणिक राजानी श्राङ्मा खड् घर प्रत्ये गएखा श्रजयकुमारे पण पोताना खामी (श्रेणि-

सुस्ता कराजा)नुं सर्व श्रंगना विजागे करीने देदीप्यमान तथा देव श्रने श्रसुरोने पण श्रा- सर्गंधयो. प्यो (दीधो) वे विज्ञम जेणे एवं रूप पटने विषे श्रासेख्युं.॥४६॥ पूर्वी ते श्रजयकु-॥ थए॥ क्षेत्र मार गोलीना जपयोगथी पोताना स्वर, वर्ण, रूप अने तेजने बदलीने अने अत्तर क्षेत्र विगेरे सुगंधि पदार्थ वेचनारा व्यापारी (सरैया)ना वेषने धारण करीने पोते आले-

> विधाय भेदं ग्रेटिकोपयोगतः, स्वरस्य वर्णस्य च रूपतेजसः॥ विधृत्य वेशं वैणिजः सुगंधिनः, पुँरीं सं चित्रान्वित खेँगट चेटकीं ॥ ४७ ॥ ततः सै तस्यामँ जयो जैयोक्षितः, सुगंधिवस्तुनि विधाय जैरिशः॥ नेरेंड्सोधस्य सैमीपवर्त्मनि, सुगंधिवीध्यां विपैणि वैयमंनयत् ॥ ४० ॥

नरक्साधस्य समापवत्मान, सुगाववाञ्चा विचारा ज्यानात्म् ॥ उठ ॥ यते श्री साथे बई चेटकराजानी (विशाखा) नगरी प्रत्ये गयो. ॥ ४७ ॥ पढी चय रहित एवा ते श्राचकुमारे ते विशाखा नगरीने विषे घणी सुगंधी वस्तुने बनावीने चेटक राजाना महेखनी पासेना मार्गने विषे सुगंधि पदार्थोंना बजारमां सुगंधी वस्तुर्तने वेचनार सरैयानी डुकान मांडी. ॥ ४० ॥

पठी हम्मेश सुगंधी वस्तु खेवा माटे राजकन्या सुज्येष्टाए मोकखेली वृद्ध दासी है तेनी **फुकाने आववा लागी.अजयकुमार पण ते राजकन्यानी दासी** जैने श्रेष्ठ अने विविध प्रका-रतं सुगंधी डब्ब वधारे श्रापवा खाग्यो. ॥४ए॥ ते दासीर्थना श्राववाने वखते व्यय यसुं हे सुगंधी द्वरतु यह एवं माययुः, सदौद्धकन्याप्रहिता महिल्लाकाः ॥ तेदापणे सीर्टिप देंदी विशेषतः, समक्रमाप्यो विविधं विलेपनम् ॥ ४ए ॥ क्षेत्रागमे वैययमना श्रिप मेंवयं, समक्रमामां फलकं वितत्य तत ॥ तेदागमे वैययमना ऋषि स्वयं, समक्रमासां फलकं वितत्य तत्॥ र्थ्यपुजर्ने णिकविंबमोदेरादें रीणकांति र्रीणनाम चौर्चकैः ॥ ८०॥ मैनोहरं ता नैररूपमाहताः, कैरे गृहीत्वा दृहशुः पेरस्परम्॥ प्रेंप्रचुरेनं वैणिजं चं केंस्य नों, जेंगत्रयीजित्वररूपमेर्चिस ॥ ५१॥
मन जेनुं एवाय पण श्रजयक्रमारे पोते ज ए दासीर्टनी समक्त ते पहने उघाडीने विकस्वर कांतिवाला श्रेणिकराजाना प्रतिविंवनुं श्रादरथी पूजन कस्तुं, श्रने श्रिषिक वंदन कस्तुं. ॥५०॥ पठी श्रादरवाली ते दासीर्टिए मनोहर एवा ते नररूप (श्रेणिक प्रससाव

N ६० ॥

राजाना प्रतिविंब) ने खादरथी परस्पर हाथमां खद्दने जोयुं खने पठी ए व्यापारी रूप अजयकुमारने पूट्युं के, "हे विश्विक! तमे त्रण जगत्ने जीतनारा थ्या कोना रूपने पूर्व जन करो हो ?" ॥ ५१ ॥ पठी ख्रजयकुमार रूप व्यापारीए कह्युं. "हे मृगना सरखां नेत्रवाखी स्त्रीत्री! जगत्ने विषे ख्रप्रतिम रूपवान एवो थ्या म्हारो देव हे. ए मने नि-वैणिक जैगादीय मेंगेक्तणा ऋयं, मदीयदेवो जैगदेकरूपवान् ॥ देदाति में वैंडितमेव सर्वदा, त्रिकालपूजां विद्धामि तेनै तें ॥ सैमस्तचेट्यो जगङः कॅनीपुरः, कुमारिकांतःपुरमध्यमौगताः॥ विंलोकि चित्रं वैणिजोतिकेऽँद्य नी, नैवीनर्मस्मानिरैदृष्टपूर्वकम् ॥ ५३ ॥

रंतर इष्ठित पदार्थ आपे ठे. ते कारण माटे हुं तेमनी त्रणे काल पूजा करुं हुं."॥५१॥ १ पठी कन्याना अंतःपुरमां आवेली ते सर्व दासी उंप चेटक राजानी न्हानी पुत्री सु- १ ज्येष्टाने कह्युं. "हे राजकुमारी! आजे अमोए प्रथम कोइ वखत पण नहि जोएलुं एवं नवीन चित्र एक ज्यापारीनी पासे जोयुं. ॥ ५३॥

सग्धवा.

11 Ea H

(ते सांजलीने) सुजेष्टा कन्याए कह्यं. श्राजे तमोए बजारमां रहेेे खि डुकान प्र-म्होटुं आश्चर्य जलन्न थयुं हे. ॥ ५४ ॥ (एवी रीते चित्र जोवाने माटे आतुर थएसी सुजेष्टानुं वचन सांजसीने) फरीथी छुकाने गएसी एवी ते दासी हैए राजपुत्री सुजेष्टाने जैवाच कैन्या नवतीनिरीक्तितं, यद्य चित्रं विंपणिस्थर्मालयम्॥ तैदीनयंदीश नेवत्य े ईिक्ततुं, मेंमीपि यस्मानीहदैस्ति कोतिकम् ॥५४॥ गैताः पुनर्स्ताः फलकं धयाचिरे, विणम्बरं तं स्पनंदिनीकृते॥ डीवाच सो'पैति' में चैं। पैर्पयाम्येहं, यतां डेंवजानीय मेंदीश्वरं गृहे ॥ ५५ ॥ कैयंकथंचिर्ह्वपथेरैंजेमनेः, प्रतीतिंमुत्पाट्य तदीयचेतसः॥ ततो गैहीत्वा फैलकं सैमेत्य ता, रैयेण तैस्याः कैरपंकजेर्दमचन्॥ ५६॥ माटे ते म्होटा ज्यापारी(अजयकुमार)नी पासे पूर्वे जोएखा चित्रनी याचना करी. तेणे पण एम कह्युं के, हुं ते चित्र तमोने श्रापीश नहीं; कारण के, तमे घरने विषे हैं महारा देवनी श्राशातना करो. ॥ ५५ ॥ ते दासी छए महोटा कष्टश्री नहि जमवा-

सुखसा० की ना (ज्यां सुधी आ पद्द तमने पाठो न आपीए, त्यां सुधी अमे जमशुं नहीं एवा) सोगनोए करीने, ते अजयकुमाररूप व्यापारीना चित्तने विश्वास जपजावीने पठी पद्दने लइ तत्काल ते राजकुमारी सुजेष्टानी पासे आवीने तेणीना इस्तकमलने विषे आप्यो. ॥ ए६ ॥ जत्तम रूप रेखाशी व्याप्त अने मनोहर एवा ते श्रेष्ठ पद्दमां

सुरूपरेखाकलितं मैनोहरं, विलोकयंती पॅटरूपम्चकेः॥ तदेकताना हृदये चिर्रादिति, विकेटपसंकटपवज्ञा वैजूव सा॥ ५७॥ किमेषे इंडः किंमुवाँय चंडमाः, किंमांश्विनेयः किंमुवार्थं नीरकरः॥ किमेंप केंग्मः किंमु केंत्तिकासुतः, पैरोर्डिय वी कोर्डिप सुरोर्डियवी ॥५७॥

आखेखेखा श्रेणिक राजाना रूपने जोती अने ते रूपने विषेज वे चित्तवृत्ति जे- 🛊 णीनी एवी ते सुजेष्टा हृदयने विषे घणा वखत सुधी आ प्रकारे संकट्प अने विकट्प करवा लागी. ॥ ५७ ॥ ग्रुं आ इंड हे ? अथवा ग्रुं चंडमा हे ? ग्रुं अश्विनीकुमार वे ? श्रयवा द्यं सूर्य वे ? द्युं श्रा काम वे ? श्रयवा कार्तिकस्वामी वे ? के, वली

बीजो कोइ देव के दानव हे ? ॥ ५७ ॥ श्रा इंड तो निहं ! कारण के, ते तो विस्फो-टकना सरखां हजार नेत्रोए करीने खराब देखाय हे! वसी चंडमा पण नहीं! का-रण के, ते पण कलंकवालो है. तेमज श्रश्विनीकुमार पण नहीं! कारण के, ते तो बे जणा साथेज चालनारा होय है. ॥ ५ए ॥ श्रा सूर्य पण नहीं ! कारण के, ते तो अयं नै देशकः पिटकेरिवाँकि निः, सहस्त्रसंस्येः सं यतो देस्ति क्वेत्सितः॥ नै चापि चंदैः सं र्यंतः र्कंलंकवान्, नै चार्थिनयो विचेराविमी यतैः॥५ए॥ श्चयं ने सुर्योर्देपि येतः सं तापनो, ने कामदेवोर्देपि यैतोर्देयमंभैवान् ॥ कैंद्रां घँटमित तुँ कैंतिकासुतो, यंतः से धेइनिवेदनैर्नैयंकरः ॥ ६०॥ पेरे सुराः केर्द्रिप न चारुरू पिणोर्दसुरा समस्ताः सुकरालमूर्त्तयः॥ र्डेपेत्य र्जानीत तिद्रेय 'सैनिघो, केंप्ष 'देवो नेंच संस्थ 'इंट्राः ताप करनारो हे. तेमज कामदेव पण निह ! कारण के, आ पहने विषे चित्रेखो तो अंगवालो हे. अर्थात् कामदेव अंग रहित हे. वही कृत्तिकानो पुत्र (कार्तिक स्वा-मी) तो घटेज केम ? कारण के, ते तो छ मुखयी जयंकर देखाय है. ॥ ६० ॥ बीजा

कोइ पण देवतार्ग आ प्रकारना मनोहर रूपवाला नथी. तेमज सर्वे श्रमुरो तो सर्गधयो. महा विकराल मूर्तिवाला हे. माटे हे सस्तीर्ग! ए व्यापारीनी पासे जइने निश्चे जा- णो के, आ प्रकारनो आ महा रूपवंत कयो देवता हे ? ॥ ६१ ॥ पही सर्वे सखीर्ग रूपवंत पाठी ते व्यापारी पासे जइ फरी सर्व वात जाणी श्रने हर्प पामतां ठतां राजक-

श्रवेत्य सर्व पुनरेव हैिंगाः, स्म संख्य आहुः प्रति राजकन्यकाम्॥ श्रेयं में देवें: सैंखि किंतुं में।नयः, सैं ऐंव येनीतमकते त्वेमेर्थिता॥ ६२॥ जैवाच सा श्रिणिक 'ईहरो। यदि, कैंद्रं ने तस्मे सैखि मां देदी पिता॥ विंक्षीक्यमाने मैणिके यँदौँप्यते, जैनेन चिंतामणिहीनमैत्र किंै॥ इ३॥

त्हारी याचना करी हती. ॥ ६२ ॥ (ते सांजलीने) राजकुमारी सुजेष्टाए कह्युं. हे स-न स्थापी ? स्रर्थात् मने तेनी साथे केम न परणावी ? मिण जोवाए उते जो मनुष्यने

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

कांइ रहेतुं नथी. ॥६३॥ पठी सुज्येष्टाए कह्युं हे सिल ! जो तुं म्हारुं जीवित इ-इती होय तो ए व्यापारीने कहे के, जेम कोइ प्रकारे श्रा तमारो देव म्हारो पति थाय ! तेम तमे तत्काल करो ॥६४॥ पठी सिल्डिए तो ते सर्व वात तेवीज रीते श्र-जयकुमारने कही. तेथी श्रजयकुमारे पण तेणीउंने कहां. हे सुखोचना! जो तमारो ततो जैगों सा वैणिजोर्दस्य कैथ्यतां, यदी हिस त्वं मैम जीवितं सेखि॥ यैया कैंयंचित्तव देवें ऐंप में, पितिर्भवेखें क्वेंरु सैत्वरं तैया॥ ६४॥ न्यवेदि ताजिस्त्वेजयाय तैर्त्तयाऽजयेन चोकं येदि निश्चयोऽस्ति वैः॥ कॅरोमि कैर्यि तेंदेंहं सुंलोचनाः, पैरं क्वेंमार्या ने विचार्यमेन्यया॥ ६५॥ श्रेघःप्रदेशे ध्रेवमेत्यमंजैसा, कृतं सुरंगासुखमरेत्यंसुत्र चै॥ तियावं मुख्यां नेरराजकन्यया, निरेश्वरं तेत्र यैथीं हमीनये ॥ ६६ ॥ निश्चय होय, तो ते कार्य हुं करुं; परंतु पठी राजकुमारीए बीजो विचार करवो योग्य निश्चय होय, तो ते कार्य हुं करुं; परंतु पृत्ती राजकुमारीए बीजो विचार करवो योग्य कि नथी. ॥ ६५ ॥ वृद्धी राजकन्या सुज्येष्टाए आ प्रदेशने विषे (अमुक जग्याए) सुरं- कि मुंख करे हुं है, त्यां अमुक तिथिए निश्चे सुखे आववुं अने जेम हुं पण त्यां श्रे- नुखसा ०

॥ ६३ ॥

णिक राजाने लावुं. ॥ ६६ ॥ श्रा प्रकारना संकेतने हढ निश्चय करीने श्रने सुरंग क्षेत्रे नारा माणसोने श्राज्ञा करीने, पठी प्रफुद्धित ठे मुख जेतुं श्रने मंत्रित्रंमां हित समान एवा श्रजयकुमारे राजयही नगरी प्रत्ये श्रावीने सर्व वात श्रेणिक राजाने कही. ॥ ६९ ॥ पठी श्रजयकुमारना वचनथी हर्षवान्, कस्त्रो ठे श्रायुधोने विधाय सैंकेतमैमुं सुनिश्चितं, नरान्सुरंगाखनकान् नियोज्य च ॥ सैमेत्य सैर्व र्टंपतेर्न्धवेदयिकस्वरास्योऽनयमंत्रिकुंजरः॥ ६९॥ तेतः सैहर्षो मगधेवरोऽनयकुमारमंत्रेण कृतायुधश्रमः॥ समयदंगायुधपूरितांतररयाधिरूढः प्रचचाल साहसी॥ ६०॥ तदा समस्ता अपि वीरमानिनः, स्विमित्रकार्योचतमानसाः सदा ॥ रैयाधिरूढाः सुलसातनूष्वाः, महारयाः 'श्रेणिकराजमेन्वग्रः॥ ६ए॥ विषे श्रम जेणे, तेमज साहसी तथा सर्व प्रकारना दंम श्रने त्रायुधथी पूरी दीघेला 🕏 पुरुषोमां मानवंता, निरंतर पोताना मित्रना कार्यने विषे उद्यम युक्त

सर्गधथो.

॥ ६३ ॥

मैहारची श्रने रथमां वेठेला सर्वे एवा पण सुखसाना पुत्रो श्रेणिक राजानी पाठल चाळ्या. ॥ ६९ ॥ पठी महा वेगवंत श्रश्ववाला ते तेत्रीश रथो पण श्रखंकित प्रयाणे करीने तत्काल सुरंगना मुख श्रागल श्राव्या. पठी श्रेणिक राजाए पोताना माणसोनी साथे

रैं या स्त्रेयसिंदैंपि प्रयाणकेर खंिनतेः प्रापुर मंदवाजिनः ॥ डुतं सुरंगामुखमोत्तमानुषेर त्वेचीकयत् भेशेणिक र्र्षागमं निजैम् ॥ ७० ॥ र्यवादि सुज्येष्टिकैयेति चिद्धणा, स्वसंगिमिष्याम्यहमैय एउयसे ॥ यंतो नैपः श्रेणिक र्ष्णागतो दस्ति मीं, गृहीतुमैत्र प्रतिविंबवीक्तितः ॥७१॥

पोतानुं त्रागमन कहेवराव्युं. ॥ ७० ॥ ते वखते सुज्येष्टाए चिल्लणाने त्रा प्रकारे कहां. हे ब्हेन ! त्राजे तने पूर्वीने स्वर्थात् त्हारी त्राङ्का खड़ने हुं जड्झ. कारण के, प्रति-विंबमां जोएखो श्रेणिक राजा मने यहण करवा माटे त्र्यहिं स्राव्यो हे. ॥ ७१ ॥

१ जे एकलो, अगीयार हजार धनुर्धारी योद्धाओनी साथे युद्ध करे, तेमज शस्त्र विद्यामां अने शा-स्त्रमां प्रवीण होय, ते महारथी कहेवाय छे.

सुस्रसाव विद्वाणाय, म्होटी ब्हेन सुजेष्टाने कहां. हे जियित ! व्हारो पित एज न्हारो पण जर्तार थार्ज. कारण के, हे जियंकरे ! व्हारा विना म्हारं मन अर्ध का णमात्र पण आनंद पामतुं नथी. ॥ अर ॥ ए प्रकारे परस्पर मनमां निश्चय करीने ते वन्ने ब्हेनो, जे मार्गने विषे जत्ताह्वंत मित्रो सहित रथमां वेठेलो श्रेणिक राजा स्वसारमाह स्म चै चिद्धाणा केनी, मेंमीपि जन्ता नैवतु व्वदीयकः ॥ विना यैतस्त्वां रेमते मेंनो नै "में, किणाईमात्रं जिगिन प्रियंकरे ॥ अर्थ ॥ प्रस्परं ते ईति निश्चिताद्याये, जेजे स्वसारो विदितं समागते ॥ विलोक्य नापाकमले ईवौगते, स्वयंवरे श्रेणिक इंर्त्यचीकयत्॥ विदर्शमींगां मेगलोचने अहं, यैदीहेंयो में चैंटतं रेंथं तैतः॥ १४॥ वाट जोतो वतो रह्यो हतो, त्यां तत्काल त्रावी. ॥ ७३ ॥ पठी (जाणे पोताने वर-वाने त्र्र्थे) स्वयंवरमां त्रावेढी सरस्वती श्रने लक्षीज होयनी! एवी ते सुज्येष्टा श्रने चिल्लाने जोइने श्रेणिके एम कह्युं. 'हे मृगक्षोचने! हुं तमारा माटे श्रहिं श्राव्यो

हुं, माटे जो तमे मने इन्नती होय तो श्रा रथ उपर चढो. ॥ ७४ ॥ पठी जेटलामां न्हा-नी ब्हेन चिल्लाण सहित म्होटी ब्हेन सुज्येष्टा, श्रेणिक राजा युक्त एवा रथ उपर बेठी, तेटलामां तेणीए (सुजेष्टाए) श्रेणिक राजाने कहां. " हे देव! हूं म्हारो रत अने आजूषणथी नरेखों करंकिर्ड जूसी गइ हुं. ॥ ७५ ॥ हे वहाज ! ज्यां सुधीमां हुं सुज्येष्टिकारोहद्सो सेचिख्नणा, यावव्यक्रिष्ठा रथमीशसंयुतम् ॥ वैंनाण तावनमेम देवै विर्रेम्टता, कैरंफिका रैंन्नज़ता सैंनूषणा॥ १५॥ नैयामैयहं यावदिमां केरंिकां, विद्धंच्यतां तार्वदिहैवं वेद्धन ॥ चिरें गैता येंविद्दें निगेय साँडेवदन् नैपं तावदेंमी सहीगताः॥ १६॥ विंखंबितुं देव चिंरं नँ शुज्यते, रिपोर्ग्धेहे सेंप्रति गैम्यते देतम्॥ तैइक्तमीकर्ण गैहीतचिद्धणश्राँचाल रीजार्थेरथस्थितः पैथि॥ १९॥ ते म्हारा श्रवंकारोना करं िश्राने लइने पाठी श्रावुं, त्यां सुधी तमे श्रव्हिंज उना र-हेजो. ' एम कहीने ते गइ छने घणी वार थइ पण पाठी न छावी. तेटलामां साथे श्रावेला सुलसाना पुत्रोए श्रेणिक राजाने कहां.॥ ७६ ॥ 'हे देव! हमणां रात्रुना

सुखसा 🏻

॥ ६५ ॥

घरने विषे वार लगाडवी ए योग्य नथी. माटे फट चालो. तेर्जनां एवां वचन सां-जलीने फक्त एक चिल्लणानेज लइने मुख्य रथमां बेठेलो श्रेणिक राजा मार्गने विषे चाळ्यो. ॥ ७९ ॥ पढी फरीथी पाठी श्रावेली सती सुज्येष्टिकाए सुरंगमार्गनुं मुख ज्ञून्य (श्रेणिक राजा विनानुं) दीनुं. तेथी तेणीए पोताने राजाना लाजथी ठेतरायली

सुज्येष्टिकां थो पुनरौगता संती, शून्यं सुरंगाध्वसुखं समेक्त ॥ श्रमन्यत स्वं तृंपलाजवंचितं, चेंक्रे चे 'बुंबारवर्मेवसुंचकेः ॥ १० ॥ हैताहतांऽहं जिगिनी हैता मैम, जिटा ईतं धावतधावतां धुना ॥ सुरंगया 'श्रेणिक ऐष याँत्यहो, स्ववीरमानी जैवतोऽवमानयन् ॥ १०॥

मानी त्रर्थात् "श्रेणिक राजाए मने ठेतरी " एम मानी त्र्यने उंचा सादथी त्राप्रकारे वंबराण करी. ॥ उठ ॥ हुं हणाइ हणाइ! म्हारी ब्हेननुं हरण ययुं. त्ररे सुनटो! कर दोडो दोडो. त्रहो! स्ववीरमानी एवो श्रा श्रेणिक राजा तमारुं श्रपमान करतो होतो सुरंगनी वाटे जाय ठे. ॥ ७७ ॥

सर्ग४थो.

ា ខុប ា

ते वात सांज्ञहीने कोधथी होठने मसता, राता मुखवाखा अने हाथने उपर पठाडता एवा चेटक राजाएं तत्काल उठीने अने बखतर धारण करीने जेट-क्षामां ए श्रेणिक राजा रूप शत्रु उपर तैयारी करवा मांडी, ॥ ए० ॥ तेटलामां वीरां-गद नामना सेनापतिए प्रणाम करीने कह्युं, 'हे देव! खेद न करो, अने प्रसन्न थइने निदाम्य तेचेटकजूपतिः कुधार्डधरं देशंस्तासमुखो हतावनिः॥ **ुंतं सैमु**ज्ञाय रीहीतकंकटोर्ऽत्यपेणयदीवदेमुं ेरिपुं प्रैति ॥ ७० ॥ प्रैणम्य वीरांगद् कॅचिवांस्तदा, "विषीद् मा देव विधाविहाँऽँऽदिशा॥ प्रंसच मां येने कैरोमि सैंत्वरं, जैनेन साध्ये हि कैंद्यं प्रेन्चमः॥ ७१॥ तेतः सैवहस्तार्पितबीटकेन सं, चैपेण कुन्नोंदेविदादादा साहसी॥ र्रेथान् सुरंगाध्वनि संकटेर्यंतोऽवगत्य चैकथ्वनिना तैतर्ज चै॥ ७०॥ मने त्रा कार्यने विषे श्राज्ञा श्रापो; के जेथी ते कार्य हुं ऊट करुं. कारण के, सेवकथी साध्य (यइ शके) एवा कार्यने विषे राजाए तैयारी करवी ए कांइ योग्य हे ? अर्थात् साध्य (थइ शके) एवा कार्यने विषे राजाए तैयारी करवी ए कांइ योग्य वे ? ऋर्थात् 🐉 सेवकने योग्य कार्यमां राजाए उद्यम करवो न जोइए. ॥ ७१ ॥ पढी पोताना हा-

सुलसा० श्रे यथी श्राप्युं वे बीडुं जेणे एवा चेटक राजाए प्रेरेलो (श्राङ्का करेलो) ते साहसी वीरांगद नामनो सेनापति, तत्काल सांकडा एवा सुरंग मार्गने विषे गयो श्राने (तेणे) रथना पैडाना शब्दथी जता रथोने जाणीने (श्रेणिक राजाने) तिर-स्कार कस्त्रो. ॥ ७२ ॥ ज्यारे ते वीरांगद सनापति श्रानुक्रमे श्रेणिक राजानी पाठल-

कैमेण पैश्राज्यसंस्थितान् नैटान्, दाद्याक नीक्षंघयितुं येदा तदा ॥ सं एकवाणं विसंसर्ज तेने तुं, हँताः सँमस्ताः सुंखसांगजाः समम्॥ ७३॥ अपातयद्यावदेयं पृथक्ष्यक्, रथान् समस्तानंपि वैत्मनस्तेतः॥ र्नेषः से तीवर्जेत ऐवे दूरैतो, निर्देत्य विशंगद्वीर र्आगतः॥ ७४ ॥

ना रथमां रहेला सुजटोने ज्रह्मंघन करवाने समर्थ न थयो, त्यारे तेणे एक वाण मूक्युं, श्रने ते वाणे करीने सुलसाना सर्वे (वत्रीश) पुत्रो साथेज नाश पाम्या. ॥ ७३ ॥ पठी एणे जेटलामां ते सुरंगना मार्गमांथी सर्वे रथोने जूदा जुदा पाड़ी नांख्या, तेटलामां तो ते श्रेणिक राजा घणे दूर जतो रह्यो. तेथी वीरांगद वीर

प्रेणम्य सर्व निजगाद तैत्तेया, कृतं यैया वैशिनपूदनं स्वयम् ॥ श्रेषुतावदातोऽपि बैजूव जूपितः, सँमं तदा हिषिविषादसंकुजः॥ ७८॥ सुता हता तैन विषादमासदत्, जहर्ष चं श्रेणिकवीरमारणात्॥ रेराज राजाऽयमिवादियाचलस्तमप्रकादोः कैलितो दिवासुखे॥ ७६॥

थयुं तेथी ते खेद पामवा लाग्यो, श्रने पोताना सेनापतिए श्रेणिक राजाना वीर पुरुषोने मास्या, तेथी हर्ष पामवा लाग्यो. ए प्रकारे ते चेटक राजा प्रजातने विषे श्रंथकार श्रने प्रकाशथी ट्याप्त एवा उदयाचलनी पेठे शोक श्रने हर्षथी दीपवा लाग्यो.॥ ए६॥

चेटक राजानी ए प्रकारनी चेष्टाने सांजलीने विरक्त चित्तवाली सुजेष्टा पुत्री पण पोन् सर्गध्यो. ताना हृदयने विषे त्रा प्रकारे विचार करवा लागी. "त्रारे! त्रालोकने विषे ते जोगने कि कार विकार थार्ज! के, जे जोगोने माटे ब्हेनो पण पोतानी बीजीब्हेनने तत्काल वेतरेवे॥09 सुर्तापि श्रुत्वापि तदीयचेष्टितं, विरंक्तचिंत्तेति हॅदि व्यचितयत्॥ धिंगेस्त नौगानिह ताने स्वर्सापि र्यंत्कते डेंतं वंचैयते स्वसारमीः॥ एउ ॥ े धिरीस्तु कामान् मेलमूत्रसंजवान्, पैराजवानां विहितास्पदान् सेदा ॥ ॅनिमेषमात्रं तैनुसौरूयकारकान्, प्रजूतकालं नरकासुखप्रदान् ॥ **७**७ ॥ धिर्गस्त किंपाकफलोपमानिमान्, सुखेकरम्यान् पैरिणामदारुणान्॥ ग्रुणाडुमाणां देववन्दिसंनवान्, क्वयंकरान् देईवलस्य नश्वरान् ॥ ७ए॥ मलमूत्र वे कारण जेमनुं श्रर्थात् मलमृत्रथी उत्पन्न थता, वली निरंतर पराजवोना स्था-नरूप, निमेषमात्र शरीरने सुखकारी श्रने घणा काल सुधी नरकना छःखने श्रापनारा कामजोगोने धिकार थार्ड. ॥७०॥ वली किंपाक वृक्षना फलनी उपमावाला, फक्त श्रा-

रंज (शरुखात) मांज रम्य, परिणामे दारुण, गुण रूप बक्तोने बाखवामां दावानख छ-थार्ज! ॥ ७ ॥ ते कारण माटे जे पुरुष ए कामने विषे प्रीति करे हे, ते पुरुष खरेखर तदेषु कामेषु करोति यो रतिं, सँ एव भूँखेंकधुरंधरो जुंबि॥ ईमानिदानीमेहमें प्येसंस्तुतान्, पॅरित्यजाम्येकपदे र्वतं श्रेये ॥ ए० ॥ (शार्दूळांवेकोडितवृत्तम्) ध्यात्वेवं सुचिरं विसुक्तविषया गैतार्थं पित्रोः पुरः, तैत्सैर्व स्वकृतं निवेर्ध पितरावाँ एकच गाढा यहात्॥ पित्री कैरितसन्महेन किंद सुज्येष्टाकुंमायेंवें सा, जैयाह बैतमात्मना नगवती श्रीचंदनासंनिधो ॥ एर ॥

श्रुने खजावे करीने सुशोजित ते सुजेष्टा कुमारिकाएज पितानी पासे जड़ने श्रुने पोता-गुं सर्वे कृत्यं निवेदन करीने तेमज गाढ श्रायहथी माता पितानी श्राङ्गा लड़ने पिताए करेला जत्सव पूर्वक श्री चंदना (चंदनबाला) साध्वी पासे व्रत यहण कखुं. ॥ए१॥ हवे रथमां बेठेला श्रुने मार्गने विषे जता एवा श्रेणिक राजाए, ते चिल्लामे हे सु-(उपजातिवत्तम्)

श्रीश्रेणिकोर्रथांध्वनि यान् रेथस्थः, सुज्येष्टिके हे प्रतिचिद्धणां ताम्॥ ईत्योलपंश्चिद्धणया वैंजापे, सुज्येष्टिका नीर्रम्यनुंजा र्तु तैस्याः॥ ए०॥ श्रीश्रेणिकः स्मॉह पुनस्त्वमेवं, ज्येष्टा गुणैदेवि ज़ैदां मेमेष्टां॥ ैं इंदित नैं। मा किल चिंहाणां तैं।, सैमालपर्चे प्रियवाग्विरोषः॥ ए३॥

ज्येष्टिके ! एम बोलावे ठते चिल्लाए उत्तर आप्यो के, हुं "सुज्येष्टा नथी, पण तेणीनी न्हानी ब्हेन (चिल्ला) ढुं." ॥ ए१ ॥ फरीथी प्रिय वाणीवाला श्रेणिक राजाए कह्युं के, " हे देवि ! गुणोए करीने म्होटी एवी तुंज मने घणी वहाली ठे. एवी रीते ते जिलीने चिल्लाण एवा नामवाली निश्चय जाणीने तेणीनी साथे वातो करवा लाग्यो.

00000000

॥ एइ ॥ ए प्रकारे स्त्रीरतना लाजयी आनंद पामेला अने मित्रोना मृत्युची डुःखित मनवाला श्रीमान् श्रेणिक राजाए, श्रेष्ठ पतिनी प्राप्तिची हर्ष पामेली अने पोतानी बहेनने हेतरवाची कांइक खेद युक्त थएली, वली पोताना प्राण थकी पण अत्यंत वल्ला एवी. ते 'जाणे श्रीकृष्णे लक्कीनेज यहण करी होयनी ! एम' चिल्लाणने यहण (शार्तृष्टिविकीडितवृत्तम्)

ईत्योंदाय सेवद्धजातिमुदितां दूँनां स्वसुर्वर्चनात्, स्वप्राणांदेषि चिद्धणां प्रियतमां लेह्मीमिर्व श्रीपतिः॥ श्रीमच्चेणिकजूपतिः प्रमुदितः स्त्रीरत्नलाजात्पुन-मित्राणां मरणेन डःखितमनाः देशिष्ठं पुरें प्राविद्यात्॥ ए४॥ करीने तत्काल पोताना पुर (राजग्रह नगर) प्रत्ये प्रवेश कस्त्रो.॥ ए४॥ इत्यागमिक श्री जयतिलकसूरिविरचिते सम्यक्त्वसंजवनान्नी महाकाव्ये सुलसा-चरिते चिल्ल्णानयनो नाम चतुर्थः सर्गः सुससाव

॥ ६ए ॥

सर्ग ५ मो.

(वैतालियवृत्तम्)

पठी पृथ्वीपति श्रेणिक राजा, ते त्रिया (चिल्लणा) ने अजयकुंमार विगेरे सुजटो सहित पोताना घरने विषे मूकी पोते एकलो पुत्रना मृत्युनी वात कहेवा माटे ना श्रेय जूमिपतिविंमुच्य तां, देयितामात्मगृहेऽनयादिनिः॥ सुनटेः सह नागमंदिरे, सुतवाती गैदितुं स्वयं येयो ॥ १ ॥ चैपविश्य येथोचितासने, पैरिषिंचक्रैयनांबुर्निर्जुवम् ॥ धुंगपन्मेरणं तेनूरुहामैवद्त्रागपुरः सं मेंद्वाक् ॥ २ ॥ **\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$** श्रिपतत्पैविपातसंनिनं, सहसांकर्ष्य वैचस्तैदीयकम्॥ विनिवर्हितमूलपादपः, किंल नागो गतचेतनो चुवि॥३॥ गसारशीना घर प्रत्ये गयो. ॥१॥ त्यां योग्य श्रासन जपर वेसीने नेत्रजल (श्रांसु) श्री पृथ्वीने सिंचन करता อता मंदवाणीवाला ते श्रेणिक राजाए, नागसारथिनी आगल तेना सर्व पुत्रोनी एकी वखते थएला मृत्युनी वात कही. ॥१॥ ए प्रकारे डिचिंता तर्गथमो.

॥ इए॥

वज्जपातनां सरखां ते श्रेणिक राजानां वचन सांजलीने गयुं हे चैतन्य जेनुं श्रर्थात् मूर्ज्ञा पामेलो ते नागसारथी, कपाइ गएला मूलवाला वृक्तनी पेहे पृथ्वी उपरपडी गयो ! ॥ ३॥ पही ते नागसारथी महा कष्टथी चेतनाने पामीने श्रर्थात् सचेतन थइने श्र त्यंत विलाप करवा लाग्यो श्रने वारंवार मूर्जा पामवा लाग्यो. वली कहोर पृथ्वीने

विल्लाप नृत्रां सं 'चेतनां, कैयमैप्यांप्य सेहुर्सुमूर्च च ॥ श्रेलुव्रंकेविनावनो पुनिर्निजनालं स्वकरेर्रताडयत् ॥ ४ ॥ हैद्ये परिचित्य तान् एथक्एयग्रेच्येः सुतशोकसंकुलः ॥ परिवारमैरोद्यभूतां, सं गुणयाहर्मनेकधा सेदन् ॥ ॥ ॥

विषे श्राक्षोटवा लाग्यो, तेमज पोताना हायथी पोताना कपालने कूटवा लाग्यो. ॥॥॥
पुत्रना शोकथी व्याप्त थएलो ते नागसारथी, पोताना हृदयने विषे ते पुत्रोने जूदा जूदा
स्मरण करीने तेर्नुना गुण ग्रहण करवा पूर्वक श्रानेक प्रकारे म्होटा सादथी रुदन करतो बतो पोताना परिवारने श्रास्थंत रुदन कराववा लाग्यो. ॥ ८ ॥

<u> युससा</u>ण

1) ao 1)

अरे दुर्देव! तें,जगिष्प्रय एवा म्हारा पुत्रोने एकी वखते केम हरण कस्ता? त्हारे पण क्ष्मियने माटे ते म्हारा पुत्ररूप सुजटोथी करी शकाय एवं कार्य पड्युं के छुं?॥६॥ हा हा! अहप फलने माटेज अत्यंत वेतराएखो, बल रहित अने नाश थया वे घणा पुत्रो

हैतदेव हता कैयं त्वया, मैम पुत्रा युगपक्कंगित्रयाः॥ किस्र तेंऽपि सेहायताकृते, सुंजिटेः कीर्यमें लं बैजूव तैः॥ ६॥ श्रवलः फेलकायवंचितः, कितपोतः सुतरामहं हैहा॥ गुंरुडःखमहार्णवे कैयं, पैतितः कर्मवद्याहुरुत्तरे ॥ ॥ मैयकेति मैनोरयः कृतोऽजवदेते तनया नयान्विताः॥ जैरसीधिगतस्य में वेषुः, सुंतरां लीलियतार 'ईश्वराः॥ ७॥

(वहाण, होडी) जेना एवो हुं, कर्मना वशर्थी डुःखे तरी शकाय एवा म्होटा डुःख क्ष रूप समुद्रमां केम पड्यो ? ॥ ३ ॥ में (अज्ञानर्थी) एवो मनोरथ कस्यो हतो के, आ न्यायवंत एवा म्होटा समर्थ पुत्रो, वृद्धावस्थार्थी व्याप्त थएखा म्हारा शरीरने अत्यंत

तर्गथमो.

1) Sa 1)

लाड लडावशे. ॥ छ ॥ हे छुर्देव ! पुत्रोनो नाश करता एवा तें म्हारा मननो मनोरथ पण निष्फल कस्त्रो ! श्रर्थात् 'वृद्ध थएला म्हारा शरीरने पुत्रो लाड लडावशे' एवो जे में मनमां मनोरथ कस्त्रो हतो, ते पण त्हाराथी सहन न यह शकवाने लीघे तें म्हारा पुत्रोनो नाश कस्त्रो ठे. ए प्रकारना शोकरूप पिशाच (जूत) थी श्राश्रय

मैनसोऽपि मैनोरथर्स्वया, तैनयान् सेंहरता कृतोऽफलः॥ इति 'शोकपिशाचसंश्रितो, जैनको मैं।ढतरं हैंरोद् सैः॥ ए॥ दैलथबाहुलता 'श्रियोज्ञिता, 'विवशा पुत्रशुचा सुधीरिमाः॥ सुलसापि पैपात जैतले, केरिणोर्नेमीलितपिधनीव हैं॥ १०॥

कराएदा (प्रसित थएदा) ते नागसारथी पिताए श्रत्यंत रुद्दन कस्तुं. ॥ ए ॥ पुत्रना श्रोकथी परस्वाधीन थएदी, शीथिख थइ गइ वे हस्त रूप त्रता जेणीनी, शोजा र हित श्रने श्रत्यंत धीरजवादी सुद्धसा पण हस्तिए तोडी नांसेटी कमिंदिनी (पोथ णी) नी पेठे पृथ्वी उपर पडी गइ!॥ १०॥

प्रससा 🏻

u 98 u

विंफणाना पवन श्रने चंदनना रस, तेमज बीजा श्रनेक प्रकारना उपचारोए करीने वहु काक्षे चेतनाने पमाडेखी ते सुलसा, फरीथी श्रा प्रमाणे विलाप करती ठती रुदन करवा लागी. ॥ ११ ॥ श्ररे ! पुत्रना शोकनो नाश करनारी, सखीना सरखी म्हारी मूर्छना कोणे हरण करी? हे सिल मूर्छे! त्हारा विना हुं पुत्रना शोकरूप श्रा श्रसहा व्यजनानिलचंदनइवेर्रंपचारेरंपरेरंनेकथा॥ गॅमिता सूचिरेण चेतनां, ''विलपंतीतिं हैरीद सा पुनः॥ ११॥ मैम केन हैता नुँ मूँईना, सुतशोकापनुदा सखीसमा॥ र्अविषद्यमिदं सैहाम्येहं, संखि मूर्चे भवतीमृते कैयम् ॥ १५ ॥ वंत ैतेर्देपि मृता मैदंगजा, अइमैचापि नवामि सुस्थिता॥ सैंहसा थेंदि 'नो 'दिधीं नवं, तैंदेहं 'ही कैं विनीसिम ' निश्चितम् ॥१३॥ डुःखने केम सहन करी शकुं? अर्थात् पुत्रना मरणनुं डुःख मूर्वाथी अथवा मरणथी विस्मृति पामे हे. वीजायी विस्मृति पामतुं नथी.॥ १२ ॥ अरे! मने एज खेद थाय हे के, ते म्हारा पुत्रो पण मृत्यु पाम्या अने आज सुधी हुं खस्थपणे रहेली हुं.

सर्गधमो.

11 25 11

श्रर्थात् जीवुं हुं; परंतु हवे जो हुं सहसा फाटी न जहं तो खरेखर पञ्चरथी पण कठीण हुं, एम मानवुं जोइए. ॥ १३॥ श्ररे! वही पण मने वधारे खेद तो एज थाय हे के, जेर्डए क्यारे पण कहोर जाषण कख्धं नथी, श्रथवा जेमनुं मन क्यारे पण विनयने डाह्मंघन करी गयुं नथी, तेमज माता पिताना चरणना नमनने विषे प्रीतिवाखा

नं केदांपि कंठोरजाषिणो, विनयातिक्रममानसा नं वा ॥ पितृमातृपदानतो रंताः, कें सुता हंत जेंवेयुरीहृशाः ॥ १४ ॥ तैनयाः सैततं विकाशिनां, जेवतामीस्यसरोरुहां भिये ॥ अवतारणमेंस्मि चक्कषां, वरसोजाग्यकलावतां पुनः ॥ १४ ॥

श्रावा पुत्रो क्यांथी होय ? श्रर्थात् म्हारा पुत्रो जेवा विनयवंत पुत्रो मखवा फुर्छज हे. ॥ १४ ॥ हे तनयो ! हुं पण निरंतर प्रफुल्लित एवां तमारा मुख रूप कमखोना श्रने वही जत्तम सौजाग्यनी कखावंत एवा तमारां नेत्रोना जतारवाना स्थान रूप हुं माटे मृत्यु पामुं हुं. ॥ १५ ॥

सुबसा० के विजयने विषे समर्थ श्रने घूंसरीना सरखा तमारा बन्ने इस्तनुं हुं बि करुं हुं. तेमज कप्टने विषे धीरपणाने धारण करनारा तमारा खन्नानी जवारणा खंज हुं. ॥ १६ ॥ श्ररे पुत्रो ! प्रणाम करवामां प्रेमवाला एवा तमारा विना हमणां दिवसना जदयने वखते नुजयोविजये समर्थयोर्युगसाम्यं देंधतोर्विलः क्रिये॥ विधुरे संधरत्वधारिणोविंद्धे न्युंज्ञनकानि चांसीयोः॥ १६॥ दिवसोदय एव "मेर्डधुना, विरितं हैंत समेत्य पुत्रकाः॥ र्नवतो नैतिवत्सलान्विना, प्रेणिति 'कैर्दित्र 'विधास्यति ध्रुवम्॥ १**७**॥ छेपि मार्तरितीरितं पुरा, जैवदीयं वैचनं सेमरार्म्यहम्॥ जैनतानयनामृतांजनं, कै भैता सी भैवदंगचंगिमा॥ १०॥

श्चरे फुर्दैव ! जो म्हारा पुत्रोनी स्त्री छैने एकी वखते विधवा करवानी त्हारी बुद्धि न होत तो, सुरंग विना एँ म्हारा पुत्रो सीखाए करीने एकी वखते साथेज केम पडे ? श्रर्थात म्हारा पुत्रोनी स्त्री जैने एकी वखते विधवा करवानी त्हारी बुद्धि होवाथी सु-रंगमां तेर्रोनो तें साथेज नाश कस्बो. ॥ १ए ॥ श्रयवा गइ हे बुद्धि जेणीनी श्रने हैतदेव ने "चैर्व रेते मितिः, समवैधव्यविधो वैधूजने ॥ सैममेंव विना सुरंगया, केंघमेंते निपतंति खेलिया॥ रए॥ श्रियवा स्वयमेव निर्मितं, गतबुद्या मैयका हैतादाया॥ युगपत्सुतसत्युकारणं, 'किसु जैंग्धा ग्रैंटिकाः सेमं नै 'चेत् ॥ २०॥ हैं इहा है तका कैंथं भुेंखं, स्वेमें हं देंशियतुं जैने किमा॥ युँगपन्मरणेन 'हेसुता, 'नैवतां ब्रुत गर्तानुकंप्यताम् ॥ ११ ॥ हणाइ गयो ने स्वाशय जेणीनो एवी में पोतेज ते एकी वखते पुत्रना मृत्युनं कारण निपजाब्युं हे, जो में देवताए आपेखी गोखीर्ट साथे न खाधी होत तो हुं आम थात ? द्यर्थात् न थात. ॥ २० ॥ हे पुत्रो ! मने ए बहुज खेद थाय हे के, तमारा

एकी वखतना मरणे करीने श्रानुकंपा (दया) जावने पामेक्षी श्राने हणाएखी हुं हवे मनुष्योने विषे म्हारुं पोतानुं मुख दखाडवान कम समय यण हता पर्वा कर करीने पीडा पामेखो अने सरण थयुं वे प्रियनुं खेखन जेने तेमज कर्ता जूदा जूदा प्रहण कस्वा वे पतिना गुण जेणे एवो ते सुखसाना पुत्रोनी स्त्रीने सर् श्रय नर्त्वधेन पैडितोर्डन्वेरुदत्तां पितमातरं भृशम्॥ र्रमृतबह्मप्रखेलनः पृथक्ष्यगात्तेश्यणो वैधूजनः ॥ १३ ॥ हैदयेश कथं विना त्वया, मम यास्यंति संशन्यवासराः ॥ र्ने 'विषोदुमेहं 'वियुक्ततां, घंटिकामात्रमेषि केमा घतः॥ १३॥ श्रिनवप्रवेति प्रनावती, सैति या में क्लादा कलोपमा ॥ र्रंजनी यैमजिह्निकेवैं सां, जैयदा जाति सैमीपसर्पिणी ॥ १४ ॥ मूह, ते रुदन करती एवी पतिनी माता (सुखसा) नी पाठल अत्यंत रोवा लाग्यो. ॥११॥ 🐉 ॥ ७३ ॥ हे हृदयेश ! तमारा विना म्हारा श्रत्यंत शून्य दिवसो केम जशे ? कारण के, हुं एक घडीमात्र पण तमारा वियोगपणाने सहन करवाने समर्थ नथी. ॥२३॥ हे नाथ !

तमे विद्यमान वतां जे महा प्रजाववाली रात्री मने क्रणमात्रना सरखी थती-हती, तेज रात्री तमे श्रविद्यमान वतां पासे श्रावती यमनी जीज सरखी श्रत्यंत ज-यंकर देखाय वे.॥ १४॥ यमराजना मार्गने विषे पथिक थएलो श्रर्थात् मृत्यु पा-मेखो एवो पण कामदेव पोते पावो श्रावीने पोतानी रित प्रियाने शुं नथी मख्यो ?

ने कैथं पुनरेत्य मैन्मयः, पैथि पांथोर्डेपि येमस्य सिंगतः॥ प्रियया सह कैंति तैत्वैमेष्येनुकंपां क्रेंरु मैंर्थ्यमूहद्यीम्॥ १५॥ कैरकंकतकेद्यमार्जनं, 'प्रिय यैन्मे "विहितं तैवया पुरा॥ छैधुनीपि तदेव विद्यते, मेगनाजी इवलेपनिश्वलम्॥ १६॥

श्रर्थात् मद्यो हे. माटे हे कांत ! तमे पण म्हारे विषे श्रा प्रकारनी श्रनुकंपा करो. श्रर्थात् तमे पण पाढा श्रावीने मने मलो. ॥१५॥ हे प्रिय ! पूर्वे तमे पोतेज जे म्हारा कांकशीए करीने केश जेव्या हता तेज केशनुं जेलवुं हमणां पण कस्तूरीना रसना क्षेपे करीने युक्त होवाथी निश्चल हे. ॥१६॥ *सु*ससा •

n 98 n

जे पोतेज हर्षथी गूंथेखां पुष्पनां आजरणो म्हारा हृदयने विषे तमे स्थापन कस्बां हतां, तेज आ पुष्पनां आजरणो स्मृति प्रत्ये (स्मरणमां) आवीने आ म्हारा हृदयने विदारी नांखे वे ! ॥ १९ ॥ हे मुखमंकन पंक्ति ! तमे मनोहर आकारने माटे म्हारा कपालने मंनित कखुं. श्रर्थात् केसर चंदनादिके करीने सुशोजित कखुं श्रने पोतेज कुंसुमाजरणानि यानि "मे, स्वयमेवं यथितानि संमदात्॥ इसुमाजरणानि यानि म, स्वयमव याधतानि समदात्॥ इदये निहितानि तानि "हि, रेम्हितमागत्य दृंणंति हेंद् विद्या ॥ २०॥ निहितं स्वयमेवं वीक्तितं, पुरतोजूय कॅपोलमंग्नम्॥ मुखमंदनपंदित वया, रैचिराकारकते स्मरामि तैत्॥ १०॥ इति तान् रुदतः पुनःपुनः, पितितान् शोकमहार्णवे नृशम्॥ संहजामैवलंब्य 'धीरतामेजयोऽवक् जवजावनिर्जयः ॥ २ए ॥

फरीथी आगल आवीने जोयुं, तेज मने वारंवार याद आवे हे. ॥ २० ॥ ए प्रकारे 🕏 वारंवार रुदन करता अने अत्यंत शोकरूप महा समुद्रमां पडेला ते सर्वेनी प्रत्ये, जव 💸 जावनाथी निर्जय एवो अजयकुमार स्वाजाविक धीरजपणानो आश्रय करीने बोख्यो.

नर्गथयो.

H 88 H

॥ १९ ॥ हे जनो ! जैनमतना छर्थने जाणनारा छने संसार संबंधी जावनाने धारण करनारा एवा पण तमारे छविवेकी मनुष्योनी पेते शोकरूप समुद्रमां पडवुं ए योग्य नथी.॥ ३० ॥ कारण के, श्रा संसार इंडजाल सरखो, इंडधनुष्य सरखो, विजली सरखो, गर्जेंझना कान सरखो अने पाढ़ला पहोरना संध्याना वादलाना रंग तथा रूप श्चिय ^रजेनमतार्थवेदिनामैपि सांसारिकनावनानृताम् ॥ नवतां नहि शोकसागरे, पतितुं युक्तमिर्वाविवेकिनाम् ॥ ३०॥ येदेयं नैव "इंडजाखव इरिकोदं म ईवीतिचंचलः॥ चैपलेंच गैजेंडकर्णवत्, पैरसंध्याश्रकरागरूपवत् ॥ ३१ ॥ पंवनेरितत्रलपूरवन्मैगतृष्णेवं निदाघवासरे॥ युवतीनयनांतवत्सदा, दुतकह्वोल ईवांनसां र्निधो ॥ ३२ ॥ सरखो श्रति चपछ है, ॥३१॥ वसी ते संसार पवने छडाडेखा रुना समूहना सरखो, छ-नालाना दिवसे जांजवाना जल सरखो तेमज निरंतर स्त्रीर्टना नेत्रोना श्रंतचाग सर बो धने समुद्रने विषे जडपथी चासता एवा कक्षोलना सरस्रो चपस्र हे. ॥ ३१

श्रा संसारमां प्राणियोनुं जे मरण थाय हे,ते मरण देहधारी हैनी प्रकृति हे श्रने जीवन किंपिमो. (जीवनुं) ते विकृति हे. माटे तेमां जे कांइ स्थिरता पमाय तेज खाज जाणवी. तो तमे किंपिमो. घणो शोक शा माटे करो हो ? ॥ ३३ ॥ श्राखोकने विषे प्रजात वखते जे वस्तु ईह यैन्स्रियते देशिरिचिः, प्रकृतिः सा विकृतिरुतुँ जीवनम्॥ ें स्थिरता येदि 'केपि कें ज्यते, सें तुं क्षानः किंमु 'देंगोच्यतेतराम् ३३ जैदये यैदिहे स्यते ध्रुंवं, नै तदेवीस्ति तु मध्यवासरे॥ बैंसते प्रैंबला हैं। नित्यता, चुँवि जावानिव शैंक्सी र्जुराम् ॥ ३४ ॥ कुंशकोटिगतोद्बिंडवत्पंरिपक्वडमपत्रदंतवत्॥ जिलबुदुदवर्डरीरिणां, केणिकं दिहिमदें चे जीवितम् ॥ ३८ ॥ निश्चे देखाय हे, ते वस्तु मध्यान्ह वखते देखाती नथी. आ छपरथी निश्चय थाय हे के, पृथ्वीने विषे राक्तसी सरखी महा बखवंत श्वनित्यता सर्वे पदार्थीने गक्षी जाय है है है. ॥ ३४ ॥ देहधारीर्जनो देह अने आ जीवित, ए बन्ने पदार्थी माजना अयजागने हैं

विषे रहेला पाणीना बिंडु सरखा, पाकेखा बृक्तना पांदडाना दींटा जेवा श्राने पा-णीना परपोटा जेवा क्रियक हे. ॥ ३५ ॥ वही जब्यजीवोत्रं योवन पर्वत जपरनी न-दीना जलना ठीघ सरखुं तत्काल नाश पामवाना खजाववालुं हे. तेमज निरुपम एवं बल पण पवनथी कंपता एवा कमलना श्रम्यजाग सरखुं चपल हे. ॥ ३६ ॥ श्रहो र्गिरिद्योविलनीजलोघवर्षविनां योवनमाञ्जू गत्वरम्॥ चैदुलं वैलर्मप्यंपोपमं, पैवनांदोलनज्तकजातवत् ॥ ३६ ॥ कैणनश्वरनावसंस्रुतों, नवतां नावनृतां कैयं मनः॥ प्रैविशंति शुचः "पिशाचवद्देहुलीकर्तुमेहो अविज्ञताम् ॥ ३७॥ श्रिथवा महतामपीह्यते, प्रचरापत्यवियोग इः खिता ॥ र्थंधुनीपि ^{*}हि 'वेह्नति ^{*}क्तितो, जलिध्यंदरमावियोजितः क्रणमां नाश पामवाना खजाववादी संखतिने विषे (संसारना प्रक्राइने विषे) जा-वने धारण करनारा श्रर्थात् विचारवाला तमारा मन प्रत्ये शोक, पिशाचनी पेठे श्र-क्वानने वधारवा माटे केम प्रवेश करे हे ? ॥ ३७ ॥ अथवा तो म्होटार्डने पण घणा मुखसा०

N 98 N

पत्रोना वियोगनुं जुःखीपणुं देखाय हे. जेम के, चंडरूप पुत्र श्रक्षे खद्मीरूप पुत्रीशी वियोग पामेखो समुद्ध, पृथ्वीने विषे हमणां सुधी पण विलाप करे हे. ॥३०॥ जे श्रा सुखसाना पुत्रो एकज काखे मृत्यु पाम्या, परंतु एमां कांइ श्राश्चर्य नथी; कारण के, सगर चक्रवर्तीना हजारो (साहहजार) पुत्रो पोताना जाग्यना वश्यश्वी एकज काखे

पैरमँत्र नै कींऽपि 'विस्मयः, समकालं येद्मी मृतिं गिताः॥ सीगरस्य सुँताः सैहस्त्रज्ञो, ने मृता 'िकं युँगपिद्धेर्वज्ञात्॥ ३ए॥ मरणं यदंबंधि 'येर्थेथा, 'किल तेषासुंपयाति तत्तंथा॥ धैंटिकींपि नै किंत्यतेऽधिका, समुपेतेऽत्र केतांतवासरे ॥ ४०॥

ग्रुं मृत्यु नथी पाम्या ? श्रर्थात् सगर चक्रवर्तीना साठ हजार पुत्रो एकी वखतेज मृ-त्यु पाम्या हे. ॥ ३ए ॥ जे प्राणीडीए जे प्रकारे जे मृत्यु बांध्युं हे, ते प्राणीडीने खरै-खर ते मृत्यु तेवीज रीते प्राप्त थाय हे. श्राक्षोकने विषे काख (मृत्यु) नो दिवस प्राप्ते थए हते एक घडि पण श्रिषक प्राप्त थती नथी. श्रर्थात् मृत्युनो वखत श्रावे हते

सर्गथमो.

1) 98 II

एक घडी पण वधारे जीवी शकातुं नथी. ॥ ४० ॥ ख्रालोकने विषे कोइ पण वस्था, कोई पण काल, कोई पण देश, कोई पण जीव के, कोई पण एवी वस्तु नथी के, जेनाथी आ कालरूप शत्रु जीती शकाय ! ॥ ४१ ॥ कोईथी पण न निवारी श-(उपजातिवत्तमः) में वैस्तु ॅेकिंचित्तेदिंहींस्ति खोके, जैंथित ॅंयेरेषें ॅरिपुः कैंतांतः ॥ ४**१** ॥ (स्रग्धरावत्तम्) गैर्जस्यं जायमानं द्यायनतलगतं मातुरुँसंगसंस्यं, र्बालं रेइं धुँवानं पैरिणितवयसं ैनिस्वमीढ्यं खेंलार्यम् ॥ र्धंकाये 'शैलशृंगे नैंनसि पेंथि जैले 'पंजरे केंटरे वी. पैंति वें प्रविष्टं हैंरित हि सैततं ईर्निवार्यः कैतांतः ॥ ४०॥

र्न कैॉप्येवस्था ने चँकीऽपि कालो, ने कीऽपि "देशो ने चै कीऽपि जीवः॥ काय एवो काल गर्जमां रहेलाने, जन्मेलाने, पथारीमां सूतेलाने, माताना खोलामां रहेलाने, खाधेड (वये पहोचेला)ने, गरिवने, तवंगरने, ख

सुस्ताः विकार अर्थने, बुक्तना अप्रजागमां रहेलाने, पर्वतना शिखर उपर चढेलाने, श्राकाश-मां रहेलाने, मार्गमां रहेलाने, पाणीमां पेठेलाने, पांजरामां पेठेलाने, (बुक्तना) कोटरमां रहेलाने अने पातालमां पेसी गएलाने पण निरंतर निश्चे हरण करे ठे.॥४१॥ इठ्य, गज, अश्व, रथ, सुजट अने वीजां घणां साधनोए करीने तेमज वसी बंधु,

ने धेनेने गेजेर्न हंयेन रथेने नेटेनों सीधनेंधेनेः॥ र्न चैं 'बंधुनिषग्देवेर्मृत्यो पैरिरक्तते फ्रीणी॥ ४३॥ नी स्वामिनो न मित्राई बांधवात् पंक्तपातिनो न परात्॥ ंकि बेंहुना केंस्मादेंपि, नैं सेंरति कैंार्य विधो विसुखे ॥ ४४ ॥

वैद्य श्रने देवतार्जेए करीने पण प्राणि मृत्युषी रक्तण करी शकातो नथी. ॥ ४३ ॥ क्षेत्री सामीषी, मित्रोषी, वांधवोषी श्रने वीजा पक्तपातीषी, वसी वधारे शुं कहुं ! परंतु बीजा कोईषी पण पोतानुं कार्य सरतुं नथी. श्रवांत् थतुं नथी. ॥४४॥

ए प्रकारे संसारने पण निरंतर श्रसार जाणीने श्रने विश्वनी नाशवंत पणाए करीने 🐉 श्रीस्थरताने मानीने शोकनो त्याग करी तमे श्रात्महित करो के, जेणे करीने बीजा 🕏 जवने विषे पण एवं छःख न थाय. ॥ ४५ ॥ ए प्रकारे श्रजयक्रमारे कहेला वचनने

(वसंततिलकावृत्तम्)

सैंसारमेवैमेवगत्य सदौष्यंसारं, विश्वस्य ज्ञंग्ररतयों स्थिरतां च मैता॥

यूँयं विमुच्य शुँचमीत्महितं कैरुष्वं, विनेवैमेन्यजननेऽपिजैवेन्ने छैं:खम्४५
श्रुत्वेति वाक्यमेजयोदितमें जसोमी, नागादयः किमंपि शोकविहीनिचत्ताः॥
तेषां विधाय मैरणांत्यविधि विशेषदिनीचनादिजिनधमेपरा वैज्ञूतुः॥४६॥

सांजिक्षीने तत्काल कांइक शोक रिहत थयां हे चित्त जेमनां एवा ते नागसारथी वि-श्री गेरे माणसो, ते मृत्युपामेला पुत्रोनी मरणांत कियाने करीने श्रिधिकताथी जिनेश्वर प्रजुनी पूजा, विगेरे जैनधर्ममां तत्पर थया. ॥ ४६ ॥ सुखसा 🏻

11 90 (

पठी अजयकुमार विगेरे मुख्य नरोए युक्त एवो श्रेणिक राजा पण, मित्रोना गुणोनुं क्षेत्र करतो ठतो त्यांची उठीने, पोताना जुवनमां आवीने अने ते पोतानी नवीन क्षेत्र चिल्लामें परणीने सकार्यमां तत्पर एवो ते केटलेक काले करीने मित्रना शोक श्रीश्रेणिकोऽँप्यंत्रयमुख्यनरैः समेत, जञाय "मित्रग्रणवर्णनमाद्धानः॥ र्स्वं सौंधमींप्य पेरणीय चे वैद्धचां तीं, कैं। लेन कैं। येनिरतोर्डजिन वैहीनशोकः ४९ इत्यागमिक श्रीजयतिखकसूरिविरचिते सम्यक्त्वसंजवनाम्नि महाकाव्ये सुखसाच-रिते सुतशोकनिवर्त्तनो नाम पंचमः सर्गः ॥

सर्गंथमो.

11 35 n

सर्ग ६ हो.

हवे एवामां श्रंतरंग शत्रुठंने दमन करनारा, सुर श्रने श्रसुरोए नमस्कार करेला, क्षेप्रियात्वरूप श्रंधकारनो नाश करनारा, केवलक्षाने करीने सूर्यरूप, सिद्धार्थ राजाना (अनुष्टवृत्तम)

(अनुष्टुप्वृत्तम्)

\$तश्चे पूँर्या 'चंपायामुँचाने क्रुंसुमाकरे॥ र्यामाकरपुरडोणमंनबोर्व्या कॅमाद्श्रमन् ॥ १ ॥ र्अंतरंगारिदमनः, सुरासुरनमस्कृतः॥ मिथ्यात्वतमसां हैंता, "केवलङ्गाननानुमान् ॥ २ ॥ िस शर्थपार्थिवसुतिस्त्रंशलाकुक्तिसंजवः॥ र्अं।यासी हैं|महावीरश्रंतुर्विशो 'जिनेश्वरः ॥ ३ ॥ विशेषकम् पुत्र अने त्रिशाखा माताना उदरमांथी उत्पन्न थएला एवा चोवीशमा जिनेश्वर श्री महावीर प्रजु गाम, श्रांकर, देोण अने मैंनब पृथ्वीने विषे अनुक्रमे फरता फरता चं

१ खाण. २ एक जातनुं गाम. ३ माणसोने विश्राम करवाना मांडवा.

नुखसा 🏻

11 9Q 11

पा नगरीने विषे कुसुमाकर नामना उद्यानमां समवसस्या. ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ प्रजुना श्रागमननी वखते एकठा थएला ते (जवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतपी श्रने वैमा-निक ए) चार प्रकारना देवताठंए श्रादरथी श्रा श्रागल कहेवारो एवं समवसरण रच्युं. ॥ ४ ॥ ते स्थानके वायुकुमार देवताठंए योजन प्रमाणवाली जूमिने शोधन करी

तदीयागमने 'देवा, 'मिलितास्ते चतुर्विधाः ॥ समवस्तिसँद्येवं, रेचयामासुरादरात् ॥ ४ ॥ वैायवः द्योधयामासुरत्त्रायोजनसूर्वराम् ॥ वर्ह्यपूर्मेघनामानः, सुगंधोदकरुष्टिजिः ॥ ५ ॥ कृतवः पंचवर्णाढ्येः, कुसुमैः स्तत्रुज्वम् ॥ व्यंतरा "देममणिऽजिश्वेकुश्वित्रं महीतलम् ॥ ६ ॥

श्रने मेघकुमार नामना देवतार्जए सुगंधि जसना वर्षादथी ते पृथ्वी जपर ठंटकाव क-स्त्रो. ॥ ५ ॥ क्तुर्जए पंचरंगी पृष्पोए करीने ते समवसरणनी पृथ्वीने श्राष्ठादित करी. तथा ठ्यंतर देवतार्जए सुवर्णश्रमे मणिजए करीने ते जूमीतसने चित्र विचित्र बनाव्युं.

सर्ग६ठो.

n ge n

॥ ६ ॥ वैमानिक देवतार्रेए श्रंदर, ज्योतषीर्रंए मध्ये श्रने जवनपतिर्रंए बहार एम अनुक्रमे त्रण जातना देवतार्रण मणि, रत्न श्रने सुवर्णना कांगरार्रण करीने सुशोजित एवा रत्न, सुवर्ण श्रने रुपाना त्रण गढो श्रमुक्रमे रच्या. ॥ ७ ॥ ७ ॥ जे प्रत्येक गढोने अंतर्वेमानिका देवा, ज्योतिष्का मध्यमं धुनः॥ नवनेशा बहिश्चेंकृ, रेबहेमसितेः कैमात्॥ ७॥ मैं णिरलहेममयेः, क्रमतः कैंपिशिर्धकैः॥ े विराजमानांस्त्रीन् वैत्रांस्त्रये देपे े त्रिदिवोकसः ॥ ७ ॥युग्मम् सैत्र्यंद्राहस्तयुक्रयस्त्रिद्रात्कोदंमविस्तराः॥ र्थंनुःपंचरातोच्चाया, 'रेजिरे यत्र मित्तयः॥ ए॥ त्रैयोदशक्तोष्यासाः, प्रत्येकं नित्तिकांतरम् ॥ त्रंतिवत्रं चतुर्दारी, यैत्र रैलमयी बनो ॥ १०॥ विषे तेत्रीश धनुष्य श्रने बत्रीश श्रांगलनो हे विस्तार जेनो एवी तथा पांचशो धनु-ष्य प्रमाण उंची जींतो शोजती हती. ॥ ए ॥ प्रत्येक जींतनी वचमां तेरशे धनुष्यनुं

I) Go I)

श्चंतर हतुं. वली जे समवसरणमां प्रत्येक गढने विषे " चारे ।दशाउं तरफ " रत्नमय चार चार दरवाजा शोजता हता. ॥ १० ॥ श्चने जे समवसरणने विषे जाणे श्री जिन् नेश्वर प्रजुना मुखर्थी निकलेला एवा सरस्वतीना कल्लोल " तरंगो ज" होय नहिं शुं!

सहस्रा विंशतिर्येत्र, सोपानानि सेम नैांति चै॥ जिनेजास्यविनियीत्याः, सरस्वत्या ईवोर्भयः ॥ ११ ॥ ैत्रिसोपानं चैतुर्घारं, तैदंतर्मणिपीतिकम् ॥ चैतुरस्रं 'जिनांगोचं, 'विकोदंमदातं कृतम् ॥ ११ ॥ **उंची दात्रिंदादिं**ष्वासाः, पृंथुः साधिकयोजनम् ॥ येत्राशोकतरुः काममेराजर्डकपह्नवैः ॥ १३॥

पत्राद्याकतरुः काममराजयक्तपद्धवः ॥ १२ ॥
एवां वीश हजार पगिष्ठश्चां शोजतां हतां. ॥११॥ तेनी मध्यमां त्रण पगिष्ठयात्रालुं, चार द्वारवालुं, चोखंकुं, जिनेश्वरना श्रंग प्रमाण उंचुं श्रने बसे धनुष्य विस्तारवालुं मिणपीठ कखुं हतुं. ॥ ११ ॥ जे मिणिपीठ उपर बत्रीश धनुष्य उंचो श्रने एक योजनश्री
१ वाणी अथवा सरस्वती नदीः

वधारे विस्तारवालो श्रशोकवृक्त रक्त पल्लवोए करीने शोजतो हतो. ॥ १३ ॥ वली जु-मिथी श्रद्धी कोश उंचा पीठ उपर रहेला पाँदपीठ सहित चार सिंहासनो शोजतां इतां. ॥ १४ ॥ ज्यां श्राठ चामर धारण करनाराठ सहित चार ठत्रत्रयो जगत्प्रजुनुं जूमेः सार्श्विकोशोच्चपीठोपरिस्थितानि चे ॥

स्पादपीव्रसिंहासनानि चेत्वारि रेजिरे ॥ १४॥ वैत्रत्रयाश्चे चैत्वारः, साष्ट्रचामरधारकाः ॥ वैत्रत्रयाश्चे चैत्वारः, साष्ट्रचामरधारकाः ॥ वैत्रेलोक्यस्वामितां यत्र, कथयंति जगतप्रजोः॥ १४॥ धर्मचित्रत्वमारूयाति, धर्मचकचतुष्टयम्॥ योजनसहस्रदंमधर्मध्वजमिषादिह ॥ १६॥

(श्री जिनेश्वर प्रजुनुं) त्रणलोकनुं स्वामीपणुं निवेदन करे हे. ॥ १५ ॥ श्रालोकमां जेमनुं चार प्रकारनुं धर्मचक्र, एक इजार योजन प्रमाणना दंकवाला धर्मध्वजना

१ पग मूकवाना वाजोठ.

सुखसा०

।। ७८ ॥

मिषषी धर्मचक्रवर्तीपणुं निरूपण करे हे. ॥ १६ ॥ देवताउंए रचेखा ते संपूर्ण एवा क्षेत्र सर्गद्धा. समवसरणने विषे बार पर्षदाउं पण पोत पोताना स्थानके बेठे हते, पूर्वना द्वारषी क्षेत्र प्रवेश करीने पही करी हे त्रण प्रदक्षिणा जेमणे एवा तथा श्रीतीर्थने नमस्कार

संपूर्ण तैत्र समवसरणे विहिते सुरैः॥ र्वादरासुँपविष्टासु, यैथास्थानं सैनास्वंपि ॥ १९ ॥ प्रैविश्य पूर्विदारेण, कैतप्रदक्तिणात्रयः॥ श्रीतीर्घाय नैमः कृत्वा, ''सिंहासनं र्समाश्रितः॥ १७॥ चैतुर्गतिसमुचेदचतुरां धैर्मदेशनाम् ॥ चैतुरूपधरश्चैंके, श्रीमान्वीरजिनेश्वरः ॥ १ए ॥ विशेषकम् ॥ करीने सिंहासन उपर वेठेखा, वसी चार रूपने धारण करनारा श्रीमान् वीर जिने-श्वरे चार प्रकारनी गैतिनो उन्नेद करनारी धर्मदेशना दीधी. ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥

१ देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नरक

॥ ७१॥

श्चनेक प्रकारना जन्म रूप तरंगोथी व्याप्त एवा छा श्रपार संसार समुद्रमां दश दृष्टांतोए करीने मनुष्यनो जन्म घणोज दुर्लज हे. ॥ १० ॥ धान्यमां गहूंनी पेहे, पाणीमां पण मेघना जलनी पेहे, सर्व प्रकारना काष्टोमां सागनी पेहे छने धातुर्हमां

> सैंसारसागरेऽपारे, जैन्मकल्लोलसंकुले ॥ डैर्लजं मानुषं जैन्म, हेप्टांतैर्देशिजिनृशम् ॥ २०॥ गोधूम ईव धान्येषु, मेघांजः सैलिलेप्वंपि ॥ संगों वा सर्वकाष्ठेषु, कीचनिमें धीतुषु ॥ २१॥ सैंवेकार्यकरः कीमं, सैंवींत्कृष्टगुणाधिकः ॥ जैंवेषु लैंक्संस्थेषु, तैंथींयं मीनुषोजन्यः ॥ २२॥ युग्मम् स्थात जेम धान्योमां गहं, पाणीमां मेघनुं पाणी, काष्टोमां सागनुं व

अवर्णनी पेठे श्रर्थात् जेम धान्योमां गहूं, पाणीमां मेघनुं पाणी, काष्टोमां सागनुं काष्ट क्षेत्र श्राने धातुर्जमां सुवर्ण श्रेष्ठ हे, तेम खाखो जवमां सर्व कार्यनो करनार श्रने सर्वोत्कृष्ट क्षेत्र गुणोथी श्रिषक एवो श्रा एक मनुष्यजव श्रत्यंत श्रेष्ठ हे. ॥ ११ ॥ ११ ॥

पुबसा•

॥ ७२ ॥

हे जञ्यजनो ! ते मनुष्यजनमां पण धर्मिष्ट देश, आवक कुल श्रने पंचें द्वियनुं पटुपणुं (निश्चलपणुं) ए सर्व पुण्ये करीने प्राप्त थाय हे. ॥ २३ ॥ उपर कहेलो मनुष्य जव, धर्मिष्ट देश, श्रावक कुल श्रने पंचें द्वियपटुपणुं ए विगेरे सर्वे संपूर्ण सामग्री हतां मि-

तैत्रौपि धार्मिको देशः, कुलं श्रावकसंजवम् ॥ पंचें वियपदुत्वं चॅ, पुंण्येन श्रीप्यते जेनाः॥ १३॥ सैत्यां संपूर्णसामप्र्यां, मिथ्यात्वतमसीं धलाः॥ "विना सम्यक्त्वदीपं नं, जेना जानिति सत्प्र्यम् ॥ १४॥ कुदेवं कुग्रुरुं चैवे, कुंधमिन्दं चे त्रयम्॥ "मिथ्यात्वमां दुस्तिनां धौः, पतिति जैतवो चैवे॥ १५॥

थ्यात्वरूप श्रंधकारे करीने श्रांधला यएला मनुष्यो, सम्यक्त्वरूप दीपकविना सन्मार्गने जाणता नथी. ॥१४॥ श्रालोकमां कुदेव, कुग्रुरु श्रने एज प्रमाणे कुधर्म ए त्रणने मि-थ्रात्व कहेलुं हे, श्रने ते मिथ्यात्वथी श्रांधला थएला प्राणी संसारने विषे पहे हे. १५

तर्ग६ठो.

11 (59 1)

0000000000

जे देव, राग द्वेषथी श्रंकित हे, ते कुदेव कहेवाय हे, श्रने जे ग्रह परियहमां श्रने आरंजमां के मग्न हे, ते कुग्रह कहेवाय हे. ॥१६॥ निश्चे श्रालोकमां जे हिंसायुक्त धर्म हे, ते कुधर्म कहेवाय है. माटे उपर कहेला ए कुदेव, क्रुगुरु अने क्रूधर्मथी मोह पामेला जीवो सं-क्वेंगुरूर्यः पैरियहारंजमयो गुरुर्यदि ॥ १६ ॥ हिंसान्वितोर्देपि येो धर्मः, कुँघर्मः सं ज्वेदिहै ॥ 'एर्जिविंमोहिता 'जीवा, 'संसारे 'संसरंति 'हैं।॥ २७॥ वीतरागः पुनर्देवो, "निर्मया गुरवस्तया॥ द्याप्रधानो यो धर्मः, सैम्यक्त्विभिदेशुच्यते ॥ २०॥ रैपष्टसम्यक्त्वदीपेन, "निरस्यौज्ञानजं तमः॥ मोक्तमार्गे प्रपद्यंते, जीवा खंब्धविवेचनाः॥ १ए॥ सारने विषे ज्रमणकरे हे.॥१९॥ वसीराग रहित देव, निर्धंथ (परित्रह रहित)एरुई, तेमज द्याप्रधान धर्म एज सम्यक्त्वकहेवाय हे.॥१७॥ स्फुट एवा सम्यक्त्वरूप दीप- सुखसा∘

11 65 11

कथी श्रज्ञानरूप श्रंधकारनो नाश करीने प्राप्त थयुं वे विवेचन (सत् श्रसत्तुं ज्ञान)
क्षे जेमने एवा जीवो मोक्तमार्गने पामे वे. ॥ १९ ॥ धन्य मनुष्यो, धर्म कल्पवृक्तना मूल
क्षे रूप, मोक्त नगरना द्वार रूप, संसार समुद्रने (तारवामां) म्होटा वहाण रूप, ग्रणोनां

धर्मकटपतरोर्मुंलं, द्वारं मोक्तपुरस्य चें ॥
संसाराब्धो महापोतो, ग्रेणानां स्थानमुंत्तमम् ॥ ३०॥
'निधानं सेर्वलक्ष्मीणां, 'हितुस्तिधिकत्कर्मणः॥
पेंालयंति जेना धन्याः, सम्यक्तिमिति 'निश्चलम्॥३१॥युग्मम् सम्यक्त्वसारो यो धर्मः, सं धर्मः शिवदार्मणे॥
हॅहमूल फेले ईक्तो, 'विना मूंलं तुं शुंष्यति॥ ३५॥

उत्तम स्थानरूप, सर्व संपत्तिर्जना जंगाररूप श्रने तीर्थंकर नामकर्मना कारणरूप एवा सम्यक्त्वने निश्चलपणे पाले हे. ॥३०॥३१॥ सम्यक्त्व हे सार जेने विषे एवो जे धर्म हे, ते धर्म मोक्तसुखने श्रर्थे थाय हे, दढ मूलवालुं दृक्त फलने श्रर्थे थाय हे, परंतु

सर्ग६हो.

ท ธุร ท

मूल विनानुं वृक्त तो सूकाइ जाय हे. ॥ ३२ ॥ ते कारण माटे हे जब्यजनो ! कोटि जिन्मां छुर्लज एवा मनुष्य जवने अने संपूर्ण एवी सुगुरु विगेरेनी सामग्रीने पण पामीने निरंतर श्रावक धर्मने विषे आदरवाला थार्ट. ॥३३॥ ए प्रकारे सजामां श्री महा-वीर प्रज्ञ धर्मदेशना आपे हे, तेवामां प्रथमथी श्रावकपणाने श्रंगीकार करनारो, त्रिदंम

तेदंहो प्राप्य मानुष्यं, इंष्प्रापं जैवकोटिषु॥ सामग्रीमिप संपूर्णा, श्रीष्ठधर्मे सेदाहैत॥३३॥ ईत्याँदिशति श्रीवीरे, सेनायाँमेंबडस्तदा॥ पूर्वापन्नश्रावकत्वः, पॅरिन्नाजक श्रीययौ॥३४॥ त्रिदंमकुंमिकाहस्तो, धातुरक्तांबर शिंखी॥ हैंथी पीठधरः केंगं, वैन्निकावारितातपः॥३८॥

तथा कमंग्रसने धारण करनारो, गेरु विगेरे धातुथी रक्त वस्त्रवासो, शीखाधारी, ब्रह्म-

बिधयी ब्यास खने सर्वेज्ञनी खाङ्काने निरुपण करनार एवो खंबड नामनो परिव्रा-जक त्यां खाब्यो. ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३६ ॥ जिनेश्वरने प्रदक्षिणा करीने हर्षित रोम-वाखा तथा कस्बो ने प्रणाम जेणे एवा ते खंबडे बन्ने हाथ जोडीने प्रजुनी खा प्रमा-

र्थ्याकारागामिनीसिष्टिबहुविद्याविद्यारदः ॥ र्अनेकलब्धिसंपन्नः, सैर्वज्ञाज्ञात्ररूपकः ॥ ३६ ॥ विद्योषकम् 'जिनं प्रेदक्तिणीकृत्य, हैर्षरोमसमन्वितः॥ कॅतप्रणामः संयोज्य, करावेवं समस्तवीत् ॥ ३७॥ नानाधिव्याधिविध्वंसविधानेकमहोषधे॥ कैख्याणकुंन नेंद् त्वं, प्रातिहार्येविंराजितः॥ ३०॥

णे स्तुति करी. ॥ ३७ ॥ नाना प्रकारनी आधि (मन संबंधी पीडा) श्रने व्याधि । (शरीर संबंधी पीडा) ने नाश करवाने एक महोषधि रूप तथा कखाणना कुंजरूप एवा हे प्रजो ! आठ प्रातिहार्यवडे विराजीत एवा तमे आनंद पामो. ॥ ३० ॥ एवा है प्रजो ! आठ प्रातिहार्यवडे विराजीत एवा तमे आनंद पामो. ॥ ३० ॥

श्री गौतम गणधरादिक मुख्य साधु रूप च्रमरोए सेवन करेखा तमारा बन्ने च-रणकमखनी हुं हर्षथी स्तुति करूं हुं. ॥ ३७ ॥ हे जिनेश्वर ! तमेज सूर्यादिक देव-तार्जना देव हो. कारण के, ते सूर्यादिक देवतार्ज मरजी प्रमाणे तमारा चरणनी पासे

> श्रीगोतमगणाधीशमुख्यसाधुमधुव्रतेः॥ संसेवितं मुदा नौमि, तैव पादांबुज्वयम्॥३ए॥ तैवमेव देवो देवानां, सूर्यादीनां जिनेश्वरः॥ यतस्वित्ररणोपाते, क्षेत्रति ते यहस्रया॥४०॥ अक्षेत्रहें त्वजुणान देव, कथं स्तोम्यनंतगुण॥ ''खे नैक्त्राणि मेदाको, 'मितान्येव हि पेर्यति॥४१॥

ंसे नैक्त्राणि मेंदाको, 'मितान्येव हि पेर्श्यित ॥ ४१ ॥ आखोटे हे. ॥ ४० ॥ हे देव ! हे अनंतग्रण ! अज्ञानी एवो हुं तमारा ग्रणोनी शी रीते स्तुति करी शक्तं ? कारण के, थोडुं देखनारो माणस आकाशने विषे रहेला (बहु) ताराउने थोडा देखे हे. ॥ ४१ ॥

हे नाय! तो पण तमारी जिलए प्रेरेखी आ म्हारी जीज, तमारा ग्रणोने कहे सर्ग६ हो. वाने (वर्णन करवाने) इन्ना करे हे. आहो! माणसोनुं मन प्र्यांम स्थानने विषे पण जाय हे. ॥ ४१ ॥ हे प्रजो! निरंतर पवित्र एवा श्रीमान तमे आशाह मा-

मेम नाय तैयौप्येषां, जिह्ना त्वनिक्तनोदिता॥ 'र्इहते 'ते ग्रेणान्वं कुं, भैनो ईंगें देंपि यात्यंहो॥ ४२॥ ँदेवानंदोदरे श्रीमान्, श्वेतपष्ट्यां सदा शुचिः॥ र्ख्यवतीणोंर्रेसि मासस्याषाढस्य द्याचिता तैतः॥ ४३॥ त्रिशला सर्वसिदेचा, त्रयोदश्यामॅन्यंतः॥ तैवावतारस्तेनेषा, सैर्वसिदा त्रैयोदशी ॥ ४४ ॥

सनी शुक्क(श्रजवासी) व्ववने दिवसे देवानंदाना उदरने विषे श्रवतस्वा हो. तेज है। एए ॥ कारणथी ते श्राषाढ मासनी पवित्रता हे. श्रथवा श्राशाढ मासनुं "शुचि" एवुं नाम श्रापेसुं हे ॥ ४३ ॥ हे प्रजो ! तेरशने दिवसे तमारो जन्म थयो हे के, जे तमारा

श्रवतारथी त्रिश्चला माता सर्व प्रकारनी सिद्ध यह हे इहा जेमनी एवां थयां. वसी ते तमारा जन्मने लीघे तेरश सर्व तिथितं सिद्ध हे. ॥ ४४ ॥ वसी जे तमारा श्रवतारे शुक्क तेरशने दिवसे श्रचल एवा मेरुपर्वतने चलावतां हतां लोकोने श्राश्चर्य कसुं. तेनाज योगथी चैत्र मास पण कहेवाय हे. श्रर्थात् तमारा जन्म दिवसने विषे श्र-

र्गुक्षत्रयोद्द्यां यैश्चींचलं मेरुं प्रचालयन् ॥ "चित्रं कृतवांस्तेचोगींचैत्रमासोंऽपि कैष्टयते ॥ ४५ ॥ येस्याचद्दाम्यां डेर्गमोक्तमार्गस्य र्रीषिकम् ॥ चारित्रमादतं युक्ता, मासोऽस्य मार्गशिषता ॥ ४६ ॥

चल एवो मेरुपर्वत चल्लो खने लोकोने आश्चर्य थयुं. तेथीज ते मासनुं नाम चैत्र कहेवाय हे. ॥ ४५ ॥ हे प्रजो ! तमे जे महिनानी शुक्क दशमीने दिवसे अगम्य के एवा मोक्तमार्गना शीर्ष (मस्तक) रूप चारित्र प्रहण कखुं, एज कारणथी आ मा- सनी मार्गशीर्षता (मार्गनी श्रेष्ठता) योग्य हे. श्रथवा ए मासनुं नाम मार्गशीर

पड्युं हे ते योग्य हे. ॥४६॥ हे प्रजो ! श्रहो ! तमे जे मासनी शुक्क दशमीए केवल खर्मिनो निश्चे श्रंगीकार कस्त्रो, ते कारण्यी ए (वैशाख) मासनी माधवता (श्रेष्ठता)योग्य हे. श्रथवा ते मासनुं माधव (वैशाख) ए नाम पण योग्य हे. ॥४९॥ हे नाथ ! तमारं

दैशम्यां यस्य शुक्कायां, केवलश्रीरेहो तैवया॥ ह्यांद्ता 'तेन मासोर्रस्य, युँका मीधवता प्रेनो॥४०॥ तैव ैनिर्वाणकख्याणं, येंहिनं पाविषण्यति॥ तर्न वेद्मि यंतो नाय, माहशोऽध्यक्तवेदिनः॥ ४०॥ (उपजातिवृत्तम्)

'सिश्वरीराजांगज देवराज, कैख्याणकेः वैद्विनिरिति रैतुतस्वैम् ॥ र्तथा विधेहींतरवेरिषटूं, यथा जैयाम्याँशु तैव प्रैसादात्॥ ४ए॥ निर्वाण कख्याणक, जे दिवसने पवित्र करहो, ते हुं जाणी शकतो नथी. कारण के, म्हारा स-रखा प्रत्यक्त वस्तुने जाणी शकनाराने ते ज्ञान क्यांथी होय ? खर्थात् नज होय. ॥४०॥ हे सिद्धार्थ राजाना पुत्र देवराज ! खा ठ कख्याणकोथी स्तुति करेखा एवा तमे ते प्र-

माणे करो, के जे प्रकारे हुं म्हारा श्रंतरना व शत्रुर्डने तमारा प्रसादची तत्काख जीति क्षेत्र ॥४७॥ ए प्रकारे श्री जिनेश्वरनी स्तुति करीनेश्वने तेमने त्रण वार प्रणाम करीने क्षेत्र सजामां बेवेला तथा विस्मित मुखवाला श्रंवडमुनिए ते महावीर प्रजुनी धर्मदेशना सां-

(अनुष्टुप्तृत्तम्)

इति रैतुत्वा जिनाधीशां, किः प्रणम्यांबडो सेनिः॥ विस्मितास्यः सैनासीनोऽशोषितं धर्मदेशानाम्॥ ५०॥ प्रस्तावेऽय जिनं नत्वा, कृत्वा राजग्रहं हेदि॥ चिता व्याहतरेतेन, त्रिकालज्ञानवेदिना॥ ५१॥ धर्मशिलांबडाँतरुत्वं, राजग्रहपुरीगमी॥ रृष्ट्या सुलसा तत्रोलाण्योरमहचसा च सा॥ ५१॥

जली. ॥ ५० ॥ हवे धर्मदेशना पूर्ण थया पठी श्रवसरे जिनेश्वर प्रजुने नमस्कार करी-ने श्रने मनमां राजग्रह नगरतुं स्मरण करीने ते श्रंवड मुनि चाख्या. ते वखते त्रण काखने जाणनारा श्रीमहावीर प्रजुए तेने कद्युं. ॥ ५१ ॥ हे धर्मशीक्ष श्रंवड! तुं

श्रिहिंथी राजगृही नगरी प्रत्ये जाय हे, तो त्यां रहारे सुखसाने मखवुं श्रने तेने सिर्गेहिंही. महारा वचनथी बोखाववी. श्रर्थात् तेने म्हारा धर्मलाज कहेवा. ॥ ५१ ॥ इन्नामि रहारा वचनथा बालाववाः व्यवाद् राग रहारा नावान गर् (इहुं हुं) एम कहीने एपरिव्राजक श्रंवड, श्राकाशमार्गे थइने सुराज्यथी सुशोजित एवा राजग्रह नगर प्रत्ये तुरत श्राव्योः ॥ ५३ ॥ पत्नी पोताना हृदयमां वीर प्रजना इंडामीति गैदित्वाँसों, पॅरित्राइंबराध्वना ॥ सौराज्यराजितं राजगृहं सत्वरमीययो ॥ ५३ ॥ श्रेचितयत्त्रंत्र गतो, वीरवाक्यं हैदि रैमरन् ॥ अँहो सीनाग्यमेर्तस्याः, सुंलसाया अपि स्त्रियः॥ ५४॥ यया निजगुणेनोच्चेंवींतरागोऽपि रंजितः॥ सुरासुरसञामध्ये, पैक्तपातोऽन्यथा कथम्॥ ५५॥ वाक्यने स्मरण करतो राजग्रह नगर प्रत्ये गएखो श्रंबड, विचार करवा लाग्यो के, श्रहो ! स्त्री एवी पण श्रा सुलसानुं सौजाग्य श्राश्चर्यकारी हे. ॥ ५४ ॥ कारण के, जे सुलसाए पोताना श्रेष्ठ गुणोए करीने राग देषश्री रहित एवा (जिनेश्वर) ने पण

श्रानंद पमाड्या. जो ते सुससामां श्रेष्ठ गुणो न होय तो, देव श्रने श्रसुरोनी स-जामां पद्मपात केम याय ? श्रर्थात् नज याय. ॥ ५५ ॥ ए सुससाना कया गुणे करीने श्रा जिनेश्वर प्रजु श्रानंद पाम्या ? सर्व प्रकारनी परीक्षा करीने ते गुणने हुं जाणवानी

श्रिस्या ग्रेणेन केनोंयं, रंजितो जिनेनायकः॥
तेमेंहं श्रीतिमिश्वीमि, रृत्वा सर्वपरीक्षणम्॥ ५६॥
ध्यात्विति हैदये धीमान्, रृत्वा रूपांतरं परम्॥
स्यापियत्वात्मपात्रत्वं, यैयाचे जेमेनं तेकाम्॥ ५५॥
देदती सानुकंपातस्तिनित वारिता नृशम्॥
े जेमयदिरतो मैं। त्वं, पादकालनपूर्वकम्॥ ५६॥

इष्ठा करुं हुं. ॥ ५६ ॥ बुद्धिवंत एवा श्रंबहे, ए प्रकारे मनमां विचार करीने तथा 🐇 श्रेष्ठ एवं रूप परावर्तन करीने, वसी पोतानुं पात्रपणुं जणावीने सुससा प्रत्ये जोजन औष्ट्र ॥ ५७ ॥ पढी दयाथी जोजन श्रापती एवी सुससाने ते श्रंबहे श्रत्यंत श्राप्र-

सुस्रताण है हथी ना पाडीने कह्युं के, तुं पादप्रकालन पूर्वक व्यर्थात् म्हारा पग धोवा पूर्वक मने व्यादरथी जोजन कराव्य. ॥५०॥ ए प्रकारे याचना कस्त्रां छतां पण ज्यारे सुलसाए सत्पात्र एवा श्रंबडने जोजन न श्राप्युं, त्यारे विलक्ष थएलो श्रंबड, ते नगरथी बहार वाख्यो गयो. ॥५०॥ पछी चार मुखथी सुंदर, पद्मासन छपर बेठेला, हंसवाहन युक्त,

याचितांपि नं सा दुत्ते, यदा सत्यात्रज्ञाजनम् ॥ विलक्तः सं तदा तेस्मान्निर्ययो नैगराद्वेहिः ॥ ५ए ॥ ब्रह्मरूपमेथो केंत्वा, चेतुराननसुंदरम्॥ पैद्यासनसमासीनं, हैंसवाहनसंयुतम् ॥ ६०॥

हाथमां कमंक्स तथा श्रक्षसूत्र धारण करनारा, जटारूप मुकुटथी सुशोजित, सा-वित्रि स्त्री सिहत श्रने चार मुखथी मनोहर एवा ब्रह्माना रूपने धारण करीने राज-ग्रह नगरना पूर्वद्वारनी समीपे गतानुगतिक (गामरीया प्रवाहनी समान) खो-कोए स्तुति करेखो ते श्रंबड, वेदमार्गने निरुपण करतो वतो बेठो. ॥ ६०॥ ६१॥ ६१॥

पढ़ी ते ब्रह्माना जक्त एवा खोको त्यां विशेषे आववा खागे उते, सखिउंए त्यां ज-

कुंमरिकात्कसूत्रकरं, जैटामुकुटमंमितम्॥ सावित्रिकासपत्नीकं, चतुर्मुखविराजितम्॥ ६१॥ पूर्वदारसमीपस्थो, 'विद्मार्ग प्रसूपयन ॥ र्गैतानुगतिकैंर्लोंकैः, स्त्र्यमानः सं तिस्थिवान् ॥ ६२ ॥ विशेषकम् ॥ र्समागंचसु टीकेषु, तंत्रकेषु विशेषतः॥ संखिनिः सुलसा प्रोचे, तत्रागमनसालसा ॥ ६३ ॥ र्स्वयं ब्रह्मांवतीणोंऽेच, ब्रह्मलोकात्सैखींद्वयताम् ॥ ैदंनोऽयमिर्द्यवैज्ञाय, नीर्ययो सी पुनर्स्तदा॥ ६४॥

ब्रह्माज उतस्या हे, तेने जो. परंतु 'श्रा दंज हे." एम जाणी सुससा ते वस्तते त्यां गइ नहीं.॥ ६४॥ पुखसा∘

11 550 11

ब्रह्मानुं रूप धारण कस्यां बतां पण सुस्रसाने पोतानी पासे निहें त्र्यावेसी जाणी, फरी बीजे दिवसे ते श्रंवड, कपटथी पीला वस्त्रवालो, पद्म वे नाजिने विषे जेने एवो, गरुडना वाहनवालो, चार हाथवालो, गदा, शंख, चक्र, श्रने धनुष्य वे हाथमां

छेनागतामिमां मैत्वा, 'वितीयदिवसे पुँनः॥
देकिणेन पुँरं नूँवा, 'विष्णुसैतस्थो स मायया॥ ६५॥
पीतांबरः पद्मनानः, पंत्रगारातिवाहनः॥
चैतुर्जुजो गैदाशंखचक्रकोदंमपाणिकः॥ ६६॥
खैद्मीप्रमुखकांतानिः, पैरितः पैरिवारितः॥
कोस्तुनाश्लिष्टहृद्यो, महामायासमन्वितः॥ ६९॥ विशेषकम्

जेना एवो, वली चारे तरफ लक्षी विगेरे स्त्री उंना परिवारयी व्याप्त, कौस्तुन मिण्यी व्याप्त हृदयवालो, श्रने महा मायाथी युक्त एवो विष्णु थइने राजग्रह नगरना दक्ति ए दरवाजे बेठो. ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६९ ॥ सर्ग**६ठो.**

11 60 11

ते वस्तते " आ नगरनुं जाग्य आश्चर्यकारी वे अने वैष्णव जनोनो म्होटो जदय हैं ययो वे के, विष्णुक्षोकथी पोते विष्णु अहिं आव्या वे. " एम सर्व स्थानके प्रसिद्ध थयुं. ॥ ६७ ॥ केटलाक जक्तिथी आववा लाग्या अने केटलाक तो विस्मयथी वारं-

"विष्णुलोकार्त्वयं विष्णुरीयातोऽऽरेतीति प्रेंपये ॥ अहो नाग्यं पुरस्योस्य, वेष्णवानां महोदयः ॥ ६० ॥ केऽपि नत्त्रया समाजग्मः, केऽपि विस्मयतः पुनः ॥ केवलं सुलसा "सेवे, मैनागेपि न चालिता ॥ ६० ॥ हेतीयेऽपि दिने तेन, प्रतीच्यार्मुपगोपुरम् ॥ सुलसाचित्तमांकष्टं, चेंके माहेश्वरं वेषुः ॥ ५० ॥

वार श्राववा लाग्या; परंतु ते एकसी सुलसाज जरा पण चलायमान थइ नहीं. ॥ ६ए ॥ श्रीजे दिवस पण ते श्रंबडे, सुलसाना चित्तने श्राकर्पण करवा माटे राजग्रह नगरना । पश्चिम दरवाजा पासे जस्मधी खरडायला सर्व श्रंगवालुं, जटानी श्रंदर गंगावालुं,

<u>पुलसाण</u>

11 00 11

श्चर्यांगने विषे पार्वती वे श्चासक्त जेने एवं, मस्तके चंडवाखुं, कंवने विषे मनुष्यना मस्तकनी मालावाखुं, कपालने विषे उज्वल नेत्रवाखुं, हाथमां खट्वांगवाक्षुं, त्रिशूखे करीने ज्ञयने पण जयंकर एवं, चारे तरफ नंदी चंमी विगेरे गणोथी विंटायखुं, मम नस्मोष्ट्रितसर्वीगं, जैटांतस्त्रिदशापगम् ॥ अर्डागासकगौरीकं, 'चंडमःकतशेखरम् ॥ ११ ॥ ैकंठाश्लिष्टरुंममालं, केंपालोञ्चललोचनम् ॥ पाँणिसंस्थितखटुांगं, 'ित्रशूलनयनीषणम्॥ उर्॥ पैरीतं पैरितः सेवेंनिदीचंम्यादिनिर्गणेः॥ र्भेमरुध्वनिसं**लीनं, ^३संवसानं गैजित्वचम् ॥ ७३ ॥ क**लापकम् ॥ तैष्ठकशिवशास्त्राणि, कैथितानि सेखीजनैः॥ र्वकिरे सुलसाचित्ते, 'शिवाफेत्कारचारुताम् ॥ ७४॥ चैकिरे सुंलसाचित्ते, शिवाफेत्कारचारुताम् ॥ ७४ ॥ रुना शब्दमां सीन थएसुं, श्रने हस्तीना चामडाथी श्राष्ठादित एवुं शंकरनुं रूप धा-रण कस्तुं.॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७१ ॥ ७३ ॥ पठी ते श्रंबडे कहेसां शिवशास्त्रो सिक्जनोए

र्गाइडो.

n wo b

सुखसाने कह्यां, परंतु ते शास्त्रो सुखसाना चित्तने विषे शियाखना फेरकार शब्दनी क्षेत्र करता जणायां. श्रर्थात् ते शास्त्रो सुखसाने शियाखना शब्द करतां पण तुष्ठ क्षेत्रायां. ॥९४॥ श्राखोकमां त्रण वार उडवार्थी मोर पण ग्रहण करी शकाय हे, परंतु ते श्रंबड त्रण दिवसे करीने सुखसाना चित्तने ग्रहण करी शक्यो नहीं. ॥९५॥ कह्युं हे के, तृतीयो पुयनेने है, मैयूरो ५ हि गृह्यते ॥

वितायानुवनम्ह, मयूराअप १६ रहात ॥ मैं पुँनः सुंलसाचित्तं, तिनीत्तं त्रिदिनैरंपि ॥ १८ ॥ वैसतो वीतरागस्य, सरागाणां स्थितिः केतः ॥ र्यहीतं हस्तिर्निर्वस्तु, त्याज्यते रासजेः कंथम् ॥ १६ ॥ उपोषितसमीपे हि, मार्ग्यते मोदकाः कंथम् ॥ रार्करास्वादवां । है, कंक्रेरेपूर्यते कंथम् ॥ १९ ॥

रैं। किरास्वादवां है हि, कैंकैरेंपूर्यते कैंग्रम् ॥ ५०॥ राग रहित पुरुषोनी वस्तीमां रागवालानी स्थिति क्यांथी होय ? स्रने हस्ती छेए प्रहण केरेली वस्तुने गधेडा हो रीते होडावी शके ? ॥५६॥ छपवासी माणसो पासे लाडु छै केम शोधाय ? स्रने साकरना खादनी इन्ना कांकरा छथी केम पूर्ण कराय ? ॥ ५९॥ प्रसमाण

ા જ્યા

महा श्रानंदना सुखमां श्रासक्त थएखो पुरुष, विषयोथी केम ताणी शकाय ? तेमज तत्त्वने जाणनारी ते सुबसा, बीजा पाखंमोथी केम वेतरी शकाय ? ॥ ७७ ॥ जेम श्र-रिष्यमां रुदन, शबने विक्षेपन, ब्हेराना कानमां वातो, खारी जूमिमां खेड, स्थल जपर महानंदसुखासकों, बाह्यते विषयेः कथम्॥ क्राततत्वा कथं सान्येः, पाखंमिविंप्रतार्यते ॥ ७० ॥ श्ररप्ये रोदनमिंव, द्यावस्योद्धर्त्तनं यैद्या॥ एँ मकर्णे येथा जापा, डैंषरे केर्षणं येथा॥ १ए॥ स्थेले यैयांबुँजारोपो, यैयांर्धमुखमंमनम्॥ तैयौज्दिरें ते स्यां, सर्विमंबडचे ष्टितम् ॥ ७० ॥ युग्मम् ॥ चेतुर्घदिवसे तेन, यम्रके चित्रकारिणा॥ तामानित् महिर्चत्रं, तैदीकर्णयतीधुना ॥ ७१ ॥ कमञ्जुं वाववुं अने आंधलाने मुखमंगन निष्फल हे, तेम सुलसाने विषे श्रंबडनी सर्व 🐉 चेष्टा फोगट थइ. ॥७९॥७०॥ पढ़ी चोथा दिवसे आश्चर्य करनारा श्रंबडे, ते सुलसाने 🕺

सर्ग६छो.

11 면정 11

पोतानी पासे बोखाववा माटे जे म्होदुं श्राश्चर्य कर्खं, ते हमणां सांज्ञको. ॥ ७१ ॥ ते रा जण्ह नगरनी उत्तर दिशामां जाणे स्वर्ग श्चने पृथ्वीना मध्य जागने मापवा माटे उंचो करेखो म्होटो मानदंग (जरवानोदंग) होयनी! एवो श्चने शिखरोए करीने श्चाकाशने (जपजातिकृत्तम्)

अस्त्युत्तरस्यां दिशि तस्य देशेलः, विनारिनामा विश्वसः विलग्नः ॥ उत्तरिनतो मातुमिवांतरालं, द्यावाष्टियव्योर्ग्यरमानदंगः ॥ ७२ ॥

अस्त्युत्तरस्यां दिशि तैस्य 'शैलः, 'वैजारिनामा 'शिखरैः खेलग्नः॥ उत्र ॥ उत्र ॥ व्यक्तितो मानुमिवांतरालं, द्यावाष्टियव्योर्ग्धरमानदंमः॥ उत्र ॥ व्यक्तिन्ते मानुमिवांतरालं, द्यावाष्टियव्योर्ग्धरमानदंमः॥ उत्र ॥ विस्मन्धंनीनामिपि वैचिनेन्नां, तमस्वनीप्वोषधयो ज्वलंत्यः॥ विश्व ॥ 'संपूरयंति स्थिरकांतिजाजो, दीपा इवोनिमिचिताः प्रसूताः॥ उत्र ॥ विस्तिहोऽसना याति पेथा इतेजः, पेरे 'तैर्वेनेनिति' वैदंति येत्र ॥ विख्येसँगारातिपदेऽपि जिल्ला, नेखास्तसुक्तोधिश्वशेषजाजः॥ उत्र ॥ स्पर्श करी रहेलो वैजारि नामनो पर्वत वे.॥उश्व वैजार पर्वतने विषे जाले अग्निहो

स्परों करी रहेलों वैजारि नामनो पर्वत है. ॥ एश ॥ जे वैजार पर्वतने विषे जाणे श्रक्तिहों हैं त्रना श्रक्ति विना उत्पन्न थएला श्रने स्थिर कांतिवाला दीवार्ड होयनी ! एम रात्रीए जा ज्वस्त्रमान एवी श्रौषिर्डि, मुनिर्डनी पण वांचवानी इहाने पूर्ण करे हे. ॥ ए३॥ जे वैतास्त्र सु<u>स्र</u>सा∘

॥ एष्ट्र ॥

पर्वतने विषे नख यकी पडतां एवां मुक्ताफक्षोने प्रहण करनारा जिल्लो, मार्गमां सिंह-नां पगक्षां सरखां उते "हस्तीने मारनारो सिंह आ मार्गे जाय हे अने बीजा सिंहो आ मार्गे जाय हे." एम बोक्षे हे.॥ ०४॥ वल्ली ए वैजार पर्वतने विषे जिल्ल क्षोकोए सर्व प्रकारे वस्र रूप करीने बाकीनी त्यजी दीधेल्ली, वल्ली प्रासुक एवा धातु-

ैकरातवस्त्रीकृतसुक्तद्योषा, न्यस्ताक्त्राः प्रासुकधातुनीरेः॥
सँदा सुनीनां पैठनिक्रयानिर्देक्त्वचोऽस्मिन् सफलीनवंति॥ ए८॥
तस्मिन् गिरो रूप्यसुवर्णरहोर्विद्याप्रनावािद्देधे त्रिशालान्॥
चतुःप्रतोलीकिपशिषसारान्, कॅकेद्वियुक्तान् केपटेः पैटुः सँः॥ ए६॥

जल (गैरिकादिकना जल) थी श्रक्तर लखायली वृक्तनी ठालो मुनिर्जने नित्य पठन कियाए करीने सफल थाय ठे. श्रर्थात् वैजार पर्वत उपरना वृक्तोनी ठालमां (ताडप-त्रमां) साधुर्ज पुस्तक लखीने जणे ठे. ॥ ७५ ॥ ते वैजार पर्वतने विषे चतुर एवा श्रंबडे कपटे करीने विद्याना प्रजावथी चार दरवाजा युक्त कांगरावाला श्रने श्रशोक

सर्ग६ठो.

11 (09 1)

वृक्तवाला त्रण गढो रूपुं, सुवर्ण श्रने रत्नोधी रच्या. ॥७६॥ सिंहासन उपर विराजित वे चतुर्विध शरीर जेनुं, श्रेष्ठ श्राव प्रकारना प्रातिहार्ये करीने रची वे पोतानी शोजा जेणे, वसी देखाडी वे शत्रुर्जना विरोधनी शांति जेणे एवो ते श्रंबड, पोते चार प्रकारे धर्मदेशना देवा लाग्यो. ॥ ७७ ॥ ते वखते श्रेष्ठ शीलवाली श्रने श्रत्यंत निश्चयवाली सिंहासनासीनचतुःशरीरः, सैत्प्रातिहार्येविहितात्मशोजः॥ सैंद्रितामित्रविरोधशांतिः, स्वयं चतुर्घा सं जगाद धर्मम् ॥ ७७ ॥ ^{*}विना सुद्गीलां सुलसां सुनिश्चलां, श्रोतुं जैनोऽंगार्त्रगरार्जरीयान् ॥ श्चांदोलितानेकलताड्मेण, 'किं 'मेरुचूला पैवनेन चाँखा॥ एए॥ कथापयामास सेदा से तस्ये, जनेरेनेकेरिति चित्रकर्ता॥ र्त्वं धर्मशीले सुंलसे 'विधेहि, पाँपापहारं 'जिनवंदनेन ॥ ७ए॥ सुलसा विना बीजा घणा माणसो श्रंबडनी धर्मदेशना सांजलवा माटे नगरथी गया. योग्य हे, श्रानेक प्रकारना खता वृक्तने कंपावनारा पवनश्री हुं मेरुपर्वतनां शिखरो 🐉 कंपायमान थाय ? श्रर्थात् नज थाय. ॥ ए० ॥ पत्नी श्राश्चर्य करनारा ते श्रंबहे नित्य

सुस्रताण श्री श्री अनेक जनोनी साथे सुखसाने एम कहेवराव्युं के, "हे धर्मशीक्षा सुखसा! तुं श्री के सर्ग६ हो. वे जारिगरि उपर समवसरेखा जिनेश्वरना वंदने करीने पोताना पापनो नाश करा. श्री ॥ एए ॥ सुखसाए कह्युं. जे चोवीशज हे संख्या जेमनी एवा उत्तम जिनेश्वरोमां है हे हो प्रणाम करे हे एवा वीर नामना जिनेश्वर

वेवाच सा ''नेवैं जिनेंड ऐंपः, श्रीवीरनामा प्र**गातामरें**ड: ॥ अपश्चिमो यो जिनपुंगवेषु, जातश्चेतुर्विशतिसंमितेषु ॥ ए० ॥ श्रैजनाणि 'तैः सा न सं एष 'पंचिवंशो ''जिनोऽयं जगति प्रेसिन्दः॥ 'सोवीच सुँग्धा ने केंद्रीप 'पंचविद्यो 'जिनेंडो नैवतीह विश्वे॥ एर ॥

वे ते ' आ श्रत्यारे वैजार उपर रहेला वे ' ते नथी. ॥ए०॥ माणसोए सुलसाने कखुं. ते (श्रत्यारे वैजार पर्वत उपर समवसरेला वे, ए) पोते वीरप्रज नथी, परंतु जगत्ने क्षे प्रसिद्ध एवा पचीशमा तीर्थंकर वे. सुलसाए कखुं. हे मूलों! आ विश्वमां पर्चीश्रमा तीर्थंकर क्यारे पण थाय नही. ॥ ए१ ॥

परंतु आ तो कपट करवामां एक चतुर अने कसावान् एवो कोइ पण पुरुष, मनुष्योने वेतरवा माटे निर्मल एवो धर्म कहे वे. ए प्रकारे कहीने मौननो आश्रय करी ते सुखसा शांत थए वते जड हृदयवाला माणसोए फरीथी कह्युं. ॥ ए१ ॥ जिनशास-यसंततिलकावृत्तम्) 'किंत्वेष कीऽपि कॅपटेकपद्वः केलावनीरूयाति धर्ममेमलं जनवंचनाय॥ र्वंति 'मीनमैवलंब्यशैंमं गैंतायां, तैंस्यां जैंगाद धेनरेवें जैनो जेंडात्मा एश (शार्दूछविक्रीडितवृत्तम्) मा कार्षा 'जिनशासनैककुशले त्वं लोकमध्ये निंदा-''मिञ्चं स्यािकॅनशासनस्य महती दूंनं प्रेनावोन्नतिः॥ सैविंग्नें केंटकोटिघटनेः 'संटीकते जावना, ैं किंतु प्रैत्युत धेर्मसंशयकरी ैसेषी ह्येपैश्राजना ॥ ए३ ॥ नने विषे एक कुशल एवी हे सुलसा! तुं लोकनी मध्ये जेद न कस्य. कारण के, जिनशासननी म्होटी उन्नति तो खरेखर आ प्रमाणेज थाय हे. सुलसाए कह्युं

000000

॥ एष्ट्र ॥

(वंशस्थवृत्तम्)

> शैशाक ेनो चालयितुं मनार्गपि, ^{*}दिनैश्र्यतुर्निर्यदि तां स्वनिश्वयात् ॥ तेंदेंति देंध्यो से 'जिनेन 'संसदि, केंतंदि युंक्तं सुंखसाप्रशंसनम् ॥ ए४ ॥ (शालिनिवसम्)

कारंकारं नित्यंमेवं परीक्तां, समारंस्मारं गाढसम्यक्त्वमेस्याः॥ याहं याहं तजुणानीत्मचित्ते, 'जैने धॅमें ''निश्चलः 'सींबैडोर्र्यूत्॥ एए॥

सुलसाने तेना निश्चयथी जरा पण चलाववा समर्थ थयो नही, त्यारे स्रावी रीते हैं विचार करवा लाग्यो के, सजामां जिनेश्वरे करेली सुलसानी प्रशंसा निश्चे योग्यज है। ॥ ए४ ॥ ए प्रकारे नित्य परीका करी करीने स्राने ते सुलसाना गाढ एवा

सम्यक्त्वने संजारी संजारीने वली तेना ग्रुणने पोताना चित्तने विषे ग्रहण करी करीने ते श्रंबड जैनधर्मने विषे निश्चल थयो. ॥ ए५ ॥ इत्यागमिक श्री जयतिलकसूरिविरचिते सम्यक्त्वसंजवनाम्नि महाकाव्ये सुलसा-चरिते सम्यक्त्वपरीक्रणो नाम षष्टः सर्गः ॥ ६ ॥ <u>सुससा व</u>

सर्ग ए मो.

पढ़ी पांचमे दिवसे विद्यार्थी बनावेसी ते सर्व कियाने तत्काल त्याग करी, निर्मल श्रावकपणाने स्वीकारी, घोएलां वे वस्त्रोने घारण करी, हाथमां श्रेष्ट पुष्पना पात्रने

पंचमेऽघ ैदिवसे तंदँशेषं, ^४विद्यया विहितमांशु विसृज्य ॥ श्रीवकत्वमंमलं पैरिधाय, 'धौतवस्त्रयुगलं पैरिधाय ॥१॥ हैंस्तसंस्थवरपुष्पकपात्रश्चीरुवेषज्दैंनुङ्तगात्रः॥ ैंदेवपूजनविधों सुेलसायाः, ैमंदिरेंदेंगमदेयं गैतमायः॥ ५॥ युग्मम् र्धर्मवांधव समिहि में गैरहे, नाषिक ति सुलसानिययो सा ॥ श्रीदरः प्रणयमांतरर्में बेंशीपयत्येति थिषु प्रैयमं ैं हि॥ ३॥ श्रीदरः प्रैणयमिंतरमुञ्जिपियत्यति यिषु प्रयम । ह ॥ ३ ॥ ॥ १॥ भाष्य ॥ १॥ भाष्य भाष्य करनारो, उत्तम वेषधारी, सरल शरीरवालो अने कपट रहित एवो ते खंबड, विषयुजननी विधिवाला सुलसाना मंदिरने विषे गयो. ॥ १ ॥ १॥ ते वलते " हे

धर्मबांधव ! म्हारा घरने विषे पधारो." एम कहेती एवी ते सुलसा श्रंबडना सन्मु-ख गइ. कारण के, अतिथिछने विषे आदर करवा एज प्रथम छंची अंतरनी नम्रता जणावे हे. ॥ ३ ॥ म्हारा धर्मबंधु एवा आपनुं जले आगमन थयुं(आप जले पधास्त्रा.) र्रवागतं नु जैवतो मेम धर्मबांधवस्य सुखदा जिनयात्रा॥ साधु साधु दिवसोर्डच वरीयान्, सुप्रनातिमदमँचतनं मे ॥ श्रासनं स्वयर्ममें मयदेषा, सैंभ्रमेण विकचाननपद्मा॥

श्रापने जिनयात्रा सुखकारी है ? श्राजे तमे पोताना श्रागमनथी श्रा म्हारुं घर पवित्र मीमकं ग्रैंहमिंदें जैवतार्रच, पीवितं 'निजसमागमनेन॥ ४॥ येंत्र संप्रति बेंजूव सेंमानधार्मिकाधिगम ऐष विशेषः॥ ॥॥ प्रेमधर्मविनयोद्यतिचता, कैं।घवं नै गैंणयंति हि संतः॥ ६॥ कखुं हे. ॥ ४ ॥ श्राजे म्हारो दिवस घणोज श्रेष्ठ हे, श्रने श्रा श्राजनुं प्रचात पण मंगलकारी हे, के जे दिवसना प्रजातने विषे हमणां ह्या विशेष एवं साधर्मिकतुं श्चागमन थयुं. ॥ ५ ॥ प्रफुद्धित थयुं वे मुखारविंद जेनुं एवी सुखसाए संच्रमधी 🐉

पोतेज ते साधर्मिक बंधुने माटे श्रासन पायखुं. कारण के, प्रेमना धर्मथी विनयने कि विषे उद्यम युक्त थयां ठे चित्त जेमनां एवा संत जनो (पोताना) खघुपणाने गणता कि नयी. ॥ ६॥ पठी सुखसाए ते श्रंबडना चरणमां नमस्कार करीने, "हे सतीर्थ्य! कि श्रंबड पण जाणे कि श्चारयतामिंह संतीर्थ्य तयेति, नाषितोंऽैघ्रिनमनं प्रैविधाय ॥ भींदेपि तैत्र गुरुविस्मयपूर्णः, श्राष्ट्रधर्म ईव मुर्त्त र्रंपास्थत् ॥ ७ ॥ क्रांग्रहं विद्धतीषु घेनासु, चेटिकासु सुकृतार्जनलोजात्॥ सा देंघाव जननीवें सुंतस्य, तैस्य पीदयुगलं स्वयमेव ॥ ए ॥ संज्ञता ऊँटति कैर्मकरोघेः, कारिता सुलसया गैहचैत्ये॥ इंखंबडेन 'विधिना ''विद्धेंऽय, पूजनं चे नैवनं चें ''जिनानाम् ॥ ए ॥ बहु चेटिकार्ग (दासीर्ज) ए श्रायह करे वते सुलसाए पोतेज माता जेम पुत्रना पग धुए, तेम ते श्रंबडना बे पग धोया. ॥ ७ ॥ सुलसाए दासीर्जना समृहवडे पोताना

घरदेरासरने विषे तत्काल तैयारी करावी. पढी श्रंबडे विधिए करीने जिनेश्वरोनुं पूजन स्राने स्तवन कर्खुं. ॥ ए ॥ जिनेश्वरनुं पूजन करी रह्या पठी (सुलसाए) आ-पेला आसनने फरीथी पण ग्रहण करीने हर्षथी पूर्ण वे हृदय जेतुं अने दीर्घकाल सुधी करी हे यात्रा (सेवा) जेणे एवा श्रंबडे ते सुलसाने कह्युं.॥ १०॥ हे विवेक-जैनपूजनविधेरेनु दैत्तं, "विष्टरं पुनरंपि प्रतिगृह्य॥ हर्षपूर्णहृदयः सेलसां तीं, प्रैर्त्युवाच सुचिरं कैतयात्रः ॥ १० ॥ श्राविके शृणु विवेकिनि यानि, शाश्वतानि मैयकाँप्यंपराणि॥ जैनबिंबपटलानि नैतानि, 'संप्रति लैमैंपि तीनि नैमेहें॥ ११॥ संमदेन सुलसा शिरसाशु, वंदते स्मं निखिलान्यैपि तानि॥ **डि:खल्ज्यसुकृतं सुँखमीप्तं, केंस्य 'नो हिंदि मुँदं ई**रुते 'हि ॥ १३ ॥ वासी श्राविके! सांजल, में शाश्वत तथा श्रशाश्वत एवा पण जे जिनबिंबना समृहने नमस्कार कस्वो हे,तेमने हमणां तुं पण श्रहिं नमस्कार कर. ॥ ११ ॥ सुस्रसाए सर्व एवा पण ते जिनेश्वरना प्रतिविंबने हर्षथी मस्तके करीने तत्काख वंदना करी.

कारण के, जुःखर्यी पामवा योग्य एवं सुकृत (पुण्य),जो सुखर्यी मखे,तो ते कया पुरु-पना हृदयमां हर्ष न जल्पन्न करे ? अर्थात् सर्वने हर्ष जल्पन्न करे. ॥ ११ ॥ अंवड फ-रीयी पण अनिंच एवी ते सुलसानी स्तुति वचन वडे प्रशंसा करवा लाग्यो के, हे जैन-मानिनी! हे विवेकिनी! तुं धन्य वे अने त्हारोज मनुष्यज्ञव पण सफल वे. ॥ १३ ॥ श्चंबडः पुनरैपि प्रशसंस, तामिति रैतुतिवचोनिरैनियाम्॥ ँजेनमानिनि ैविवेकिनि धैन्या, स्वैं तैवैवेँ र्संफलं नेरजन्म ॥ १३ ॥ दंक्तता नुवि तैवैवै विशिष्टा, केब्धतत्विनिधकाँउस्ति मितिस्ते ॥ सर्वसारगुणगुंफितगात्रि, स्वं सैतीजनिशरोमणिरेवै॥ १४॥ वीतरागजनशेखरहीरो, वीरतीर्थपतिरादरतोऽँपि॥ देवदानवनरेश्वरमध्ये, श्रीमुखेन कुरुते यञ्चदंतम् ॥ १५ ॥ सर्व प्रकारना श्रेष्ट गुणोथी गूंथेखुं वे गात्र जेणीनुं एवी हे सुखसा! पृथ्वीमां त्हारुंज है ॥ एउ ॥ दाहित्वपणुं श्रेष्ट वे. वही त्हारी बुद्धि प्राप्त थयो वे तत्वनो समृह जेणीने एवी वे. के जेथी तुं सती स्त्रीर्जनी मध्ये शिरोमणि रूपज वे. ॥ १४ ॥ राग रहित पुरुषो (सामान्य

केविंदि) नी मध्ये मुकुटमणि रूप श्री महावीर नामना चोवीशमा तीर्थंकर, देव, दा-नव श्रमे नरेंद्रनी सन्ना मध्ये पण पोताना श्रीमुखे करीने श्रादरणी जे व्हारी वार्चा के करे हे. ॥ १५ ॥ श्रेष्ठ पुखे करीने प्रसिद्ध थएखी हे कुशक्षे ! निश्चे पोताना चरणे करीने चंपा नगरीने पवित्र करता हता जगवान् श्रीमहावीरखामी, म्हारा मुखे क-

> पावयित्रजपदेः किल चंपां, मन्मुखन नगवान् जिनवीरः ॥ छैन्नति प्रवरपुण्यप्रतीते, धेर्मकर्मकुरालं केराले वाम् ॥ १६॥ तिनिराम्य सुलसा पुलकांगी, मेघराब्दमिव वन्यमयूरी ॥ समोन्निर्ताश् मुंकुलीकृतपाणिः, स्तोति विरिजनिमित्यतिहर्षात् ॥१॥॥

तिन्नराम्य सुलसा पुलकागी, मेघराब्द्मिव वन्यमयूरी ॥
रैंमोडिर्तांशु मुंकुलीकृतपाणिः, रैंतीति 'वीरजिनिमैत्यैतिहर्षात्॥१॥।
रीने तने धर्मकार्यनुं कुशल पूठे हे ॥ १६॥ ए प्रकारे श्रंबडनां वचन सांज्ञत्वीने मे-घनो शब्द सांज्ञलवाधी वननी मयूरी—मोरनी स्त्री—ढेलनी पेठे पुलकित श्रंगवाली ते सुलसा तत्काल उन्ती थइ हाथ जोडीने घणा हर्षथी श्री वीर जिनेश्वरनी श्रा प्रमाणे स्तुति करवा लागी. ॥ १७॥ <u>ख</u>सा •

וו עם וו

मोहरूप महाना बलने मईन करवामां वीर, पापरूप कादवने धोइ नांखवा माटे नि पति! हे वीर! तमे जयवंता वर्तो. ॥ १० ॥ देव, दानव अने नरेश्वरोने वंदन करवा योग्य, चलायमान कस्त्रां हे अचल एवां मेरुपर्वतनां शिखरो जेमणे, केवलकान रूप मीहमञ्जबलमर्दनवीर, पापपंकगमनामलनीर॥ कैर्मरेणुहरणैकसमीर, त्वं 'जिनेश्वरपते जय वीर ॥ १७ ॥ 'देवदानवनरेश्वरवंद्य, चैालिताचलसुराचलशृंग ॥ केंबलाक्तिकलिताखिलविश्व, रूँपनिर्जितजगर्कंय वीर ॥ १ए ॥ वैर्षमान जनपावनपाथ, पादपीठलुठितामरनाथ ॥ तावकीनपद्पंकजसंगं, मीलिनोपेरिं करोमि सुरंगम् ॥ २०॥ नेत्रोए करीने जोयुं हे सर्व विश्व जेमणे अने रूपे करीने जीत्युं हे जगत् जेमणे एवा है दे प्रजो ! तमे जयवंता वर्तो. ॥ १ए ॥ जनोने पवित्र करवामां जसरूप अने जेमना है चरणकमसने विषे इंडो आसोटी रह्या हे एवा हे वर्द्धमान जिनेश्वर ! श्रेष्ठ रंगवासा

सर्गेषमो.

n es n

000000

तमारा चरण कमखना युगखने हुं म्हारा मस्तक उपर धारण करुं हुं. ॥ १०॥ हे प्रजो ! जे कलंक सिहत पुरुषो, पोताना कपालना तिलकने विषे तमारा चरणनी रजे करीने धारण कर्यां वे चिन्ह जेमणे एवा वे. मन संबंधी वेदनाए करीने रिहत एवा ते पुरुषोने धारण करेला तमारा चरणनी रजना चिन्हणी जाणे शंका पाम्यो होयनी!

'ये तैवैंघिरजसा जैनितांका, जालपहितलके विकलंकाः॥ स्वीकरोति नें जैवेरिप नरांस्तानंकैदांकित ईवाँधिनिरस्तान्॥ ११॥ येर्क्जिनेंडपदपंकजमूले, लोलुठीति सततं शिंवकूले॥ र्जनमांगमेंद्रयार्थमैनिंदां, तैष्ठदंति 'विबुधा जुवि 'वेंद्यम्॥ ११॥

एवो जव(संसार)पण प्रहण करी शकतो नथी. श्रर्थात् तमारा चरणनी रजना चिन्हने धारण करनारा पुरुषोने फरीथी संसार प्राप्त थतो नथी. ॥११॥ एथ्वीने विषे जे मनुष्यनुं मस्तक, मोक्तना तटरूप जिनेश्वरना चरण कमखना मूखने विषे निरंतर श्राखोटे हे, ते पुरुषना मस्तकने देवतार्ड सत्यार्थ रूप (जत्तम श्रंग),श्रानिंद्य श्रने वंदना करवायोग्य कहे

सुबसा०

11 666 11

है है देव ! आखोकने विषे जे मनुष्यो तमारा श्रति सुंदर श्रंगने पुष्पनी खता (माला) करे हे. श्रर्थात् तमारुं पुष्पथी पूजन करनारा मनुष्योने चामरादिक नोगो प्राप्त थाय हे. ॥ १३ ॥ श्राक्षोकमां ते पवित्र मनुष्य हमेशां सवारे जिनेश्वर प्रजुनुं पूजन करे ैये प्रसुनलतिकाचिरिहांर्गमंकयंति तैव 'देव सुचंगम्॥ चैंामराणि ैनियतं ैविलसंति, तैत्पुराणि पुरतो ैविकसंति ॥ २३ ॥ यो जिनाधिपतिपूजनमत्र, प्रातरेव विद्धाति पैवित्रः॥ पूँज्यतां तुं कैंनते स पेरेत्र, सैर्वसाधुजनशस्यचरित्रः॥ १४॥ त्रेशालेयचरणांबुजशोषां, ये वहंति शिरसा हैतदोषाम्॥ श्रांतपत्रमेमलं ^अकिल तेषां, मस्तकोपरि अविनाति समेषाम् ॥२८॥ हे, ते मनुष्य, सर्व साधु जनोने वखाणवा योग्य हे चरित्र जेनुं एवो श्रद्ध परखोकने विषे पूज्यपणुं पामे हे. ॥ १४ ॥ जे मनुष्यो पापने नाश करनारा त्रिशला माताना पुत्र (श्रीमहावीरस्वामी) ना चरण कमस्रनी शेषा (रज) ने मस्तके करीने वहन करे

सर्गधमो.

।। एए ॥

है, ते सर्वे मनुष्योना मस्तकनी जपर निर्मेख एवं हन्न निश्चे शोने हे. श्रर्थात् जिनेश्वर निष्के स्वाप्ती रजने सेवनारार्छ चक्रवर्तीनी पदवीने पामे हे. ॥१५॥ श्राक्षोकने विषे जे मनुष्य पोताना मनमां निरंतर पापने कापी नांखवामां दातरडा समान जिनेश्वर प्रजिना नाम रूप मंत्रनुं ध्यान करे हे, ते जिवक जीवनुं पृथ्वीने विषे पाप बढ़ी जाय है

ध्यायतीहै जिननामसुमंत्रं, यैः सँदा मैनसि पापलवित्रम् ॥ देह्यते चै डेरितं निवकस्य, बोनवीति र्नेविकं र्नुवितस्य ॥ १६॥ स्थापयात्मपदपद्मयुगं में, मानसे जिनपते नेवसीमे ॥ धरमीति परमात्ममरालस्तित्र में खेलु यथा शमशाली ॥ १९॥

श्रने कखाण थाय हे. ॥ १६ ॥ संसारना सीमाडा रूप हे जिनेश्वर! तमे म्हारा मन रूप मान सरोवरने विषे पोताना वे चरणकमलने स्थापन करो, के जे प्रकारे शमे करीने सुशोजित एवो म्हारा परमात्मा रूप हंस, हे। । । १८ ॥ १८ ॥

Moot M

ए प्रकारे आदरमां तत्पर, जत्तम एवा रंगना तरं हा थएसी तथा क्वेशना किश्ची. सिर्ग9मो. सिर्ग9मो. रिहत एवी सुलसाए स्तुति करीने, तेमज हिंस सुधी मस्तक नमावीने (श्रीमहावीर प्रजुने) नमस्कार कस्त्रो.॥ १०॥ पढ़ी धर्मना निश्चयनी परीका कर्रित स्त्रा विगेर्पनार ते श्रंबडे फरीथी ते सुलसाने कहां. में स्ट्रारी परीका करवा माटेज ब्रह्मा विगेर्पना स्त्रा स एवमौदरपरा रंतुतिर्मुक्तवा, पूरिता प्रवररंगतरंगैः॥ क्षेत्रालेशरहिता सुलसा स्म, 'वंदते लिगितजूतलजालम् ॥ २० ॥ धैर्मनिश्चयपरीक्षणकर्त्रा, तेन साथ सुलसा पुनरूचे॥ त्वत्परीक्तणकृतेऽहमैकार्ष, रूपमेवं चैतुराननमुख्यम् ॥ १ए ॥ नाँजवर्त्तव यदि श्रवणेत्वा, कीतुकादेपि केथं ने सैमागाः॥ मंज्ञवाणि पैरमाईति तेथ्यं, कीरणं कथय 'सुंदरि महाम् ॥ ३०॥ मेंजुवाणि पेरमाईति तथ्यं, कीरणं कथय सुंद्रि मेह्यम् ॥ ३०॥
रेनुं रूप धारण कखुं हतुं.॥ १९ ॥ हे मधुरवाणीवासी परमाईति! जो के, तने म्हारो
धर्मोपदेश सांजखवानी इष्ठा तो न थइ, परंतु तुं कोतुकथी पण केम न श्रावी ? हे सुंदरी! तेनुं खरुं कारण मने कहे. ॥ ३० ॥

1130011

सुलसाए कद्युं. हे सुजग ! सर्व गुणने जाणनारो तुं स्रज्ञानीनी पेठे स्राम केम बोले हे ? म्हारं मन श्रीवीर प्रजुने नमस्कार करीने श्रसत् एवा ते ब्रह्मादिकने विषे केम खागे? श्रर्थात् जेनुं मन खरी वस्तुने विषे खागेहुं हे, तेनुं मन खोटी वस्तुने विषे चोटतुं नथी. ॥३१॥ हे बंधो ! कहे, वनमां जमता एवा गजराजना कपाखर्थी गखता सुगंधीवाखा सीजेणत्सुंजग जैंटपसि किं त्वर्मिन्नम् इव सर्वग्रणकः॥ ^{'वै}रिदेवर्मैनिनम्य कैंयं ''मे, मीनसं र्द्धगित ''तेषु नैसत्सु ॥ ३१ ॥ यो भ्रेमित्प्रयकपोलगलिर्गिधबंधुरमदैः पॅरिपुष्टः॥ ैं लेशतोर्ऽपि रेमते पिंचुमंदे, क्वांपि सोर्ऽपि वेद नृंगयुवा े किम्॥३२॥ नर्मदासिललशा६लक्चरुक्पुष्पमकरंदनुजः किम् ॥ मारवीजुवि कॅरीरवनांतः, षेट्रपदस्य हैदयं रॅितिमेति॥ ३३॥ मदोए करीने पुष्ट थएलो जे ज्रमर हे, ते ज्रमर कोइ पण स्थानके खींबडाने विषे क्षेत्रामात्र पण रमे खरो ? श्रर्थात नज रमे. ॥३१॥ नर्मदा नदीना जलथी लीला घासवाला कां-💲 | ठाना प्रदेशमां उगेला वृद्धोना पुष्पोना मकरंदने पान करनारा च्रमरनुं हृदय निर्ज-

के जूमिने विषे केरडा उगेखा प्रदेशमां शुं हर्ष पामे ? श्रर्थात् नज पामे. ॥ ३३ ॥ जे सिर्गेशमो. श्रुचमर मानस सरोवरमां बहु सुर्गेधवाला पद्मरूप महेलनी वलीई (तंतु)ने विषे पोतानी के मरजी प्रमाणे निवास करतो हतो, ते ज्रमर प्रफुक्षित एवा पण खाखराना पुष्पने के विषे विखास करवानी बुद्धि शुं करे खरो? श्रर्थात् नज करे. ॥ ३४ ॥ जे गजराज शी-मानसे सरसि सीरजनारपद्मसोधवलं नीषु यथेष्टम् ॥ योध्युवास विकचेर्रिप पंलासे, कि विलासमितिमिर्वेतिसीर्रली ३४ र्नेर्मदापयसि यो जलकेलिं, रैतिले गजपतिर्विदेधाति॥ साँडेंपरे पैयसि तीरगतेंडेपि, दृष्टिमात्रमैपि 'किं प्रतनोति॥ ३५॥ द्यांखकुंद्किंखकोपमकांति, ैनिर्मलं `पिबति गांगजलं यैः॥ पंकिलं गिरिनदीजलपानं, कैर्तुमिइति सै कि वरहंसः॥ ३६॥ तिख एवा नर्मदा नदीना जलमां कीडा करे हे, ते गजराज, कांहे रहेला एवा पण बीजा (नर्मदा नदी विनाना) जलने विषे पोतानी दृष्टिमात्रने पण ग्रुं करे खरो ? अर्थात् नज करे. ॥ ३५ ॥ जे राजहंस शंख अने कुंदलतानी कली सरली कांतिवा-

खा श्रने निर्मेख एवा गंगाना जखनुं पान करे हे, ते राजहंस कादववाखा पर्वतनी नदीना जखने पान करवानी इन्ना करे खरो ? श्रर्थात् नज करे. ॥ ३६ ॥ जे मृगे निरंतर उत्तम सुगंधवाखा मखयाचखनी जूमिने विषे निवास कस्त्रो हे, ते मृग, इ- क्रवाखा एवा पण बीजा वनने विषे रागवान् थयो हतो शुं रमे खरो ? श्रर्थात् न

येः सेदा प्रवरसोरननाजि, वासमाप मेलयाचलनूमो ॥ कीनने 'किमेपरे स सैरंगो, हैक्वर्त्यंपि 'रमेत कुरंगः ॥ ३७ ॥ एवमेव जिनवीरपदां , वंदितं जैगति 'येः सुरवंद्यम् ॥ तन्मनोऽपि कैथमैन्यसुरेषु, ''देषिरागिषु हैरादिषु याति ॥ ३० ॥

रमे. ॥ ३७ ॥ एज प्रकारे विश्वमां जे मनुष्योए देवतार्जने पण वंदना करवा योग्य एवा श्री वीर जिनेश्वरना चरणकमलने वंदना करी हे, ते मनुष्योनुं मन पण द्वेषी श्रमे रागी एवा हरादि बीजा देवतार्जने विषे केम गति करे ? श्रर्थात् जिनेश्वरना जक्तो बीजा देषी श्रमे रागी एवा देवतार्जने मानता नथी. ॥ ३० ॥

धुखसा •

॥१०२॥

सुलसा श्रंबडने कहे वे के, हे बंधो ! एज प्रकारे जे मनुष्ये मधुर, न्यायवाला श्रने चतुर एवा श्री वीरप्रजुनां वचनने सांजल्यां वे,किल्पित (निश्चित) बुद्धिवाला ते मनुष्यने श्रेष्ठ विचार विनानां वचनो सांजलवानी इहा केम थाय? श्रर्थात् नज थाय. ॥३७॥ रैइलैमेव मैधुरं नयसारं, वीरवाक्यम्शुणोर्चतुरं यैः॥

तैंस्य केटिपतमतेः श्रैवणेचा, र्स्यात्कैथं वेरविचारनिरासे ॥३ए॥ (वसंतिलकाकृतम्)

ईत्यादिवाक्यविसंरेजिंनवीरदेवपादारविंदयुगलं ग्रंणगोरवाट्यम् ॥
संस्थाप्य सा हॅरिहरादिषु देवेतेषु, नंकिप्रवीणहृदया शिरसा नंनाम॥४०
कृत्वांयहं प्रवरनोज्यविवेकयुक्त्या, संनोज्य तं निजसहोदरतुख्यनक्त्या ॥
सेम्यक्त्विनश्चयवती सुलसा प्रकामं, सत्कारपूर्वमैकरोत् देढधर्मनावम्॥४१॥
जिक्केश प्रवीण हृदयवाली सुलसाए इत्यादिवाणीना समूहश्री हरि हरादि देवोना
ज्यर ग्रणना गौरवपणाथी युक्त एवा जिनेश्वर श्री वीर प्रजना वे चरणकमलने स्थापन करीने मस्तकथी नमस्कार कस्त्योः ॥ ४०॥ पठी सम्यक्त्वना निश्चयवाली

सर्ग**ुमो**.

11 **2**0211

सुखसाए अत्यंत श्रायद् करीने ते श्रंबडने पोताना बंधुना सरसी जिक्तयी श्रेष्ठ हैं। जोजनना विवेकनी युक्तियी सत्कार पूर्वक जमाडीने दृढ एवा धर्मजाववाखो कस्त्रो. है ॥ ४१ ॥ त्यार पठी " सुबसानां " कस्त्रां ठे वखाण जेणे एवो तथा सम्यक्त्वने विषे हैं। निश्चख बुद्धिवाखो, जावना युक्त श्रने सुबसानी जावनाना रसथी जेदाइ गया ठे सप्त-

श्रीपृत्तयु तां ग्रणवतीं विहितप्रशंसः, सम्यक्त्विनश्रालमितः प्रतिज्ञासमेतः॥ तैत्रावनारसविजेदितसप्तधातुः, 'स्वेरं जैगाम ''निजधाम तेतींबंडः सः॥ ४२॥

धातु जेना एवो ते श्रंबड,ग्रुणवती एवी ते सुखसानी रजा खइने मरजी प्रमाणे पोताना स्थान प्रत्ये चासी नीकछ्यो. ॥ ४२ ॥

इत्यागमिक श्रीजयतिखकसूरिविरचिते सम्यक्त्वसंजवनाम्नि महाकाव्ये सुस्रसा-चरिते सुलसाप्रशंसनो नाम सप्तमः सर्गः॥ सुखसा∘

1130311

सर्ग ए मो.

पढ़ी तपे करीने छुर्बल यह गएसी ते सुलसा अनुक्रमे वृद्धावस्था पामी. कारण के, मनुष्योनुं वय पर्वतनी नदीना जल समृह्नी पेठे शीव्र गति करनारुं ठे. ॥ १ ॥ पो-तानुं पाठकुं आयुष्य जाणीने कस्तुं ठे संक्षेखन जेणीए एवी ए सुलसाए पोतानुं. श-(वैतालियवस्म)

श्रेय सा सुलसा तेपः रुशा, ऋमतः प्राप वयोर्दतयोवनम् ॥ ैंगिरिद्येविलनीजलोघवर्तंनुजाजां ैहि वैयोऽैतिगत्वरम् ॥ १ ॥ 'निजमायुरॅवेत्य पश्चिमं, कृतसंखेखनयानया वैपः॥ विद्धे स्विशेषनिर्मलं, कैथंमौचित्यमपित तीह्याम्॥ १॥ श्चवसानदिने समीपगे, हॅदि कृत्वा [ौ]जिनवीरदैवतम् ॥ स्लसाउँनलसा रुषार्कने, गुरुमांनम्य जैगाद सीदरम्॥ ३॥ सुलसाऽनलसा छपाजन, गुरुमानन्य जगाद सादरम् ॥ २॥
रीर श्रत्यंत निर्मेख कस्तुं. कारण के, तेवा माणसोनुं योग्यकार्य केम नाश पामे ? श्ररीत् नज पामे. ॥ १॥ पोतानो श्रवसान दिवस पासे श्रावे उते श्री जिनेश्वर एवा

લર્ગળ**મો.**

แรงจิแ

Acharva Shri Kailassagarsuri Gvanmandir

वीरप्रज रूप दैवतने हृदयमां धारण करीने धर्म संपादन करवामां श्रावस रहित एवी सुलसाए गुरुने प्रणाम करीने श्रादर सिहत कह्युं. ॥३॥ हे जगवन् ! तमे मोक्तमार्गना दर्शक होवाथी श्रावक जनोने दीपक रूप हो. माटे श्रा समयने योग्य एवी क्रिया करो श्राने मने संसार समुद्रथी निस्तारो. ॥४॥ पृत्री गुरु ते सुलसाने मधुर, कोमल, नगवन् विवामार्गदर्शानात्, त्वमिस श्राश्वजनस्य देपिकः ॥ तद्दःसमयोचितां क्रियां, क्रेंह विस्तारय मीं जैवार्णवात् ॥ ४॥

तेषुरैर्मेडिनिर्मेनोहरैर्जिनसिश्वांतगतेर्वैचोनरेः॥
भेषुरैर्मेडिनिर्मेनोहरेर्जिनसिश्वांतगतेर्वैचोनरेः॥
भेजटानिर्वे नेष्टराईणे, ग्रेरुरेरैसाहयति र्स्म तामिति ॥ ॥
श्रीय सर्वविवेकवत्यैपि, र्स्मतकृत्यार्द्धसि ग्रेणायणीरसि ॥
पैरेलोकहितोदस्ति विश्वला, यदियं धैर्ममतिस्तैवीमला॥ ६॥

परलाकि।हताऽस्ति । नश्चला, यादय धमम।तस्तवामला ॥ ६ ॥

मनोहर श्रने जिनेश्वर प्रजुना सिद्धांतने विषे रहेला वचनना समृहे करीने रण संघा
ममां सेनाधिपति सुजटोने जेम जत्साह पमाडे, तेम जत्साह पमाडवा खाग्या.॥ ५ ॥

हे सुस्रते ! तुं सर्व प्रकारना विवेकवासी तेमज संजास्तुं वे परलोक संबंधी कार्य जेणीए

बुससा ०

1180511

एवी हे. वसी गुणोए करीने मुख्य हे. कारण के, आ त्हारी निश्चल अने निर्मल एवी धर्मबुद्धि परलोकने विषे हितकारी हे. ॥६॥ जन्मथी आरंजीने करेला सुकृत्यनुं फल उत्तम मृत्यु एज देरासर उपर कलश चढाववा जेवुं हे. कारण के, नव हस्तना प्रमाणवाला श्रेष्ठ जालानुं मजबुंत लोहायज वलाणवा लायक हे. ॥ ५॥
सुकृतस्य कृतस्य जैन्मनः, द्वानमृत्युः कलद्याधिरोपणम् ॥

नैवहस्तमितस्य देशस्यते, वरकंतस्य हि केटिसारता ॥ १॥ जैननं यदि जातमंगिनां, मरणं तिन्नियतं जिवष्यति ॥ ६ ॥ देति अनिश्चयतः प्रेमोदजाक्, तिदिमें अपिनतस्त्युमाश्चय ॥ ६॥ च्यति चारविशोधनं त्रेतोच्चरणं कामणमागसां कुरू ॥ ६॥ व्यज पातककारणानि वा, श्रेय चेत्वारि चे अनिद क्षेष्कतम् ॥ ए॥

जो प्राणीर्जनो जन्म थयो हे, तो मरण पण निश्चे थवानुंज हे. स्त्रावा निश्चयथी प्र-मोदने जजनारी हे सुखसे! तुं तेज स्त्रा पंक्ति मरणनो स्त्राश्रय कर. ॥ ७॥ हे सुखसे! तुं स्रितचारोनुं विशोधन कर, व्रतनुं उच्चरण कर स्त्रने स्वपराधोनी कमण

नर्गण्मो.

iiko yii

(कमा) कर. वसी पापनां कारणोने त्याग कर, चार शरणो (श्ररिहंत, सिद्ध, साधु श्रने धर्म) नो आश्रय कर श्रने डुष्कृतनी निंदा कर. ॥ ए ॥ पोताना सुकृत्योनी श्र-नुमोदना कर, शुज जाव कर श्रने श्रशन (जोजन) ने त्यजी दे. वली हर्षथी पंच न-सुकतान्यैनुमोदयौत्मनः, शुजनावं केरु वाँशनं त्यज ॥ रेमर 'पंच नेमस्कृतीर्भुदा, 'दिशवदामादीं यैया प्रैपद्यसे ॥ १०॥ (उपजातिवृत्तम्.)

शैनादिकाचारकपंचकेऽैत्राँतिचार आगात्त्व योऽँपि सूद्मः॥ श्रांलोचय त्वें तेमेंशेषमैच, ''त्रिधा 'विशुष्ट्या ग्रैरुदेवसाह्मि ॥११॥

मस्कारनुं स्मरण कर के, जे प्रकारे तुं तत्काल मोक्सुख पामे. ॥ १० ॥ हे सुबसे ! आ के इति इति पा के अतिचार आव्यो हो है या ते सर्वने तुं आजे ग्रह अने देवनी समक्ष त्रण प्रकारनी ग्रुद्धिए करीने आलोव.

सुखसा०

गरण्या

॥ ११ ॥ वही तें पोते जे श्रकाल श्रविनय विगेरे श्रावने विषे ज्ञाननो श्रज्यास कस्यो है होय, श्रथवा बीजाने कराव्यो होय, तेमज विधिष्ठी जणनारने विझ कस्तुं होय श्रने जे कि ज्ञाननी श्रथवा जणनारनी श्रवज्ञा करी होय; के ज्ञान श्रज्यास करीने गर्व कस्त्रो है विद्यालयवत्तम)

येदैकालमुखाष्ट्रके त्वया, पैठितं ईं।नर्मपाठि चाँपरान् ॥ ैं विधिना पैंठतां चे ैे विघ्नितं, यैदेवेंज्ञातमें धीत्य गैविंतम् ॥ १५ ॥ वैसनैरेशनेश्वे पुस्तकेर्न च साहाय्यमंकारि शैक्तितः॥ कैरसंपुटकादि वैस्तु येत्वेयकोँशातितमेंस्तु तेंर्द्वेया ॥ १३ ॥ मैलिनं फैलशंकनादिनिः, शुजसम्यक्त्वमैकारि कारणैः॥ र्न केतं "जिनपूजनं सुदा, "जिनपीज्ञापि नै चैारु पींखिता ॥ १४ ॥ होय, ते सर्वने त्रण प्रकारनी ग्रुद्धिए करीने आलोव.॥ १२॥ तें शक्ति प्रमाणे वस्त्र, वस्तुनी त्राशातना करी ते सर्व मिथ्या थार्ज. ॥ १३ ॥ तें जे करेला पुष्यकार्यना फ-

लर्गण्मो.

មានមក

खनी शंकाए करीने (श्रर्थात् में जे श्रा पुष्य कखं हे, तेनुं फख मने मखशे के नहीं ?) एवा कारणोए करीने छत्तम एवा सम्यक्त्वने मक्षीन कखं होय, तेमज जे हर्षथी जिने-श्वरनुं पूजन न कखं होय, श्रने जे जिनेश्वरनी श्राङ्गा पण सारी रीते न पाखी होय, ॥ १४ ॥ वक्षी तें जे सामर्थ्य हतां पण कोइ हखने विषे नाश पामता गुरुना श्रने

गुरुदेवधनं कैचिबंते, सैति सामर्थ्य उपेक्ति नेश्वरम् ॥ े निखिलं डेरितं देथांऽस्तु ेते, कैतमीशातनयानयीपि च ॥ १५॥ सैमितीयुतगुप्तिनिः सेमं, चरणं सम्यगिदं न पालितम्॥ अय नृद्कविद्वाद्यगाद्य एकेंद्रियजंतवो हैताः॥ १६॥

देवना ड्रव्यनी उपेक्का करी होय, अने ते गुरु अने देवनी कांइ आ आशातना कें वड़े करीने पण कांइ कख़ुं होय, तो ते त्हारुं सर्व पाप मिथ्या थार्च. ॥ १५ ॥ तें जे पांच समिति अने त्रण ग्रित सहित आ सम्यक् प्रकारे चारित्र न पाह्युं होय; वर्खी जे पृथ्वी, पाणी, श्रिश्चि, वायु अने वनस्पतिकाय विगेरे एकेंडिय जीवो हण्या होय,

सुक्षसाव है ॥ १६ ॥ हे सुक्षसे ! तें तेज प्रमाणे करमीया, पूरा, शंख अने ठीप विगेरे जे बेइं-जिय जीवो तेमज घूण, मांकड, कीडी तथा कुंथुआ विगेरे जे तें जिय जातिना जीवो मास्वा होय, ॥ १९ ॥ तें जे जमरा, कुत्तिका, मधमांखी, वींठी, श्रने करोलीया विगेरे चतुरिंडिय तथा जलचर, स्थलचर, श्रने खेचर श्रर्थात् जल, जूमि श्रने श्राकाशमां कृमिपूतरदांखराक्तिकाप्रमुखा दीं दियकास्तेथेवे ^४ये ॥ ष्ठुणमकुणकीटिकुंयुकाप्रजृतित्रीं दियजंतुजातयः॥ १७॥ चैतुरिं दियन्ंगकुत्तिकासरघादिश्यककोकिलादयः॥ खैनलस्थलचारिदेहिनः, किल पॅचंडियकार्स्त्रिधा पुनः॥ १७ ॥ इति संस्रुतिसंश्रिता हता, अनिघातादिद्दाप्रकारकैः॥ तैनुबादरजंतवर्रेवया, तव मिथ्यार्रेस्त तैर्देख डेप्कृतम्॥ १ए॥ तैनुवादरजंतवस्त्रिया, तैव मिध्याऽस्तु तद्य छेष्कृतम्॥ १ए॥
गित करनारा, त्रण प्रकारना पंचेंद्रिय प्राणीर्त्र मास्या होय,॥ १०॥ ए प्रमाणे तें जे जे जनम मरणनो आश्रय करी रहेला सूक्ष्म बादर जीवोने अजिघातादि दश प्रकारे किरीने मास्या होय, ते सर्व त्हारुं छष्कृत (पाप) आजे मिथ्या थार्ट.॥ १ए॥ जन्म मरणनो आश्रय करी रहेखा सृक्ष बादर जीवोने अजिघातादि दश प्रकारे है रीने मास्या होय, ते सर्व त्हारुं फुक्त (पाप) आजे मिथ्या थार्ट. ॥ १ए॥

1130811

वली क्रोधादिके करीने जे जुनुं बोली होय, श्रयवा जे नहिं श्रापेली पारकी वस्तु हैं पोतानी मानी बहुण करी होय, तेमज जे पशु, माणस श्रने देव संबंधी त्रण प्रकारनुं मैथुन सेव्युं होय, तेमज जे नव प्रकारना धन धान्यादिक परिग्रहने विषे ममता पण

ष्यतं जगदे कुंधादिनिर्यदंदतं जगहे स्वर्मस्वकम्॥ पेशुमानवदेवसंनवं, 'विविधं 'मेथुनमैद्यंसेवितम्॥ २०॥ नैवधा धैनधान्यकादिके, मेंमताकारि चै थेर्तिरग्रहे॥ 'नियमेश्र्ये 'निशाशनादिषु, यैदेतीचारितमेस्तु तेंहृथा॥११॥ युग्मम् सेति शक्तिनरेऽपि यत्तपो, न कृतं दादशधा जिनोदितम्॥ 'शिवसाधकधर्मकर्मसूँदामितं 'नेवे तेंद्दीं 'निदय॥ २२॥

करी होय अने रात्रिजोजनादिकने विषे नियमे करीने जे अतिचार खाग्यो होय, ते कि सर्वि आजे मिथ्या थार्ज. ॥ २० ॥ २१ ॥ हे सुखसे ! तें शक्ति वतां पण जिनेश्वर प्रजुए के कहे हुं जे बार प्रकारनुं तप ते आचर्खं नहीं. तेमज मोक्तना साधन रूप धर्मना का-

सुलसाव विषे उद्यम कस्यो नहीं, तेनी आजे तुं निंदा कर.॥११॥ हे साध्व ! उत्तम बुद्धि-वाली तें पूर्वें प्राणातिपात विरति विगेरे जे व्रतोने विधि प्रमाणे आदस्यां होय, हि-तकारी एवां ते व्रतोने 'श्रतिचार रहित आजधी हुं पालीश' एम हमणां तुं फरी जा-(वसंततिलकावृत्तम्)

> त्राणातिपातविरतिप्रमुखव्रतानि, पूर्व यथाविधि सुधिस्तवयकाँहतानि॥ भावेन 'संप्रति पुनर्भेण साध्व तानि, रैंवं पोलये ''निरतिचारमैतो 'हितानि ॥ **१३** ॥ (वैतालियवृत्तम्)

सैंह सेंप्रति सैवेदेहिनामैपराधं कुमयस्व तार्झिजम् ॥ नेज मैत्र्यमितं त्येज क्रुंधं, दीमसंवेगसुधारसं ैपिव ॥ २४ ॥

वधी बोल. ॥१३॥ हमणां सर्व प्राणीर्जना व्यपराधने सहन कस्त्रः तेमज ते प्राणीर्ज प्रत्ये

((Eo\$i)

00000000000

शांति युक्त वैराग्य रूप श्रमृतरसने पान कर. ॥ २४ ॥ हिंसा, मृषावाद, चोरी, मैथुन, धननी इहा, क्रोध, मान, माया, लोज, क्लेश, रित श्रुरति, श्रज्याख्यान, चाडी, द्रेष, प्रेम, परना श्रपवादनुं कहेवुं, मायामृषावाद श्राने मिथ्यादर्शनशस्य रूप पापनां (शार्दलविक्रीडितकृतम्)

ेहिंसाऽस्नृतचोर्यमेयुनधनाकांक्ताः क्रुंधं मानकं, मायां लोजकली च रत्यरतिर्मज्याख्यानपेशृत्यके ॥ देषं देषं परापवादवदनं मीयामृषाजाषणं, ेमिथ्यादर्शनशाख्यपातकपदं चाँधादशीपि त्याज ॥ १५॥

(वैतालियवृत्तम्) इंह ैये केयिताश्चेतुर्विधा, श्रेजिधास्थापनव्यज्ञावतः ॥ शेरणं चैरणं तद्हतां, ब्रेज मृत्योरवनं वितन्वताम् ॥ २६॥

द्दीरणं चैरणं तेद्हतां, ब्रेंज मृत्योरंवनं वितन्वताम् ॥ १६ ॥ स्थानक एवां ए छढारने पण त्याग कर.॥१५॥ छाखोकमां नाम, स्थापना, डव्य छने जावधी जे चार प्रकारना जिनेश्वर प्रज कहेखा हे, मृत्युधी रक्तण करनारा एवा ते

सुससा०

Nooth

जिनेश्वरोना चरण रूप शरण प्रत्ये जा. ॥ १६ ॥ वसी जुवनपति, वाणव्यंतर, मनुष्य स्रोक, ज्योतिषी श्रने वैमानिक देवस्रोकमां श्रसंख्य शाश्वत एवा चैत्यने विषे रहेस्रां श्ररिहंतनां प्रतिविंबोने जावथी नमस्कार कर ॥ १९ ॥ सिऊशैख (शत्रुंजय), श्राबु, गिरनार, कनकाचल अने अष्टापद पर्वतादिकने विषे रहेलां, वली जिनेश्वरनी वे उत्पत्ति नेवनाधिपवानव्यंतरमनुजन्योतिरमर्त्यज्मिषु॥ नम रैगाश्वतचैत्यसंस्थिताऽईतविवान्यमितानि नावतः ॥ २७ ॥ विमलार्बुद्रैवताचले, कैनकाष्टापद्पर्वतादिषु ॥ ैंअपरार्स्वंपि त्तीर्थन्मिकास्वपि वैदस्व ैजिनोन्नवादिषु ॥ २० ॥ घैनकर्ममलं "विद्ह्ये "ये, तैपसीपुः परमात्मरूपताम्॥ र्दश पंच च "विभ्रतो "निदर्स्तैव "सिश्वाः शिरणं नैवंत "ते ॥२ए॥ विगेरे जेमने विषे एवी बीजी पण तीर्थजू मिमां रहेखां एवां पण जिनेश्वरोनां प्रतिविंबोने वंदन कर. ॥१७॥ जेर्ड गाढ एवा कर्मना मलने तपर्थी बालीने परमात्म खरूपने पा-म्या हे, श्रने पंदर प्रकारना जेदने धारण करनारा ते सिद्धो त्हारुं शरण थार्ड. ॥१ए॥

सर्गण्मो.

MSoch

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

मोक्तसाधक योगोतुं साधन करनारा, विषयना समृहनी श्राज्ञाने बाध करनारा (श्र-रनी धर्मजूमि रूप सर्वे साधुर्व त्हारुं शरण थार्व. ॥३०॥ संसार रूप समुद्रने तारवामां है समर्थ, सर्वे प्राणीर्वने हितकारी, शमताए करीने उत्तम, दश प्रकारे जिनेश्वर प्रजुए विवसाधकयोगसाधका. विषययामनियोगबाधकाः ॥ शिवसाधकयोगसाधका, ैविषयग्रामनियोगबाधकाः ॥ इारएं त्व सर्वसाधवो, मैनुजक्तेत्रगताः कमानुवः॥ ३०॥ नेवसागरतारणक्तमः, सेकलप्राणिहितः रामोत्तमः॥ शेरणं देशधा जिनोदितस्तव धर्मः शिवशर्मसाधनम् ॥ ३१ ॥ कुँमतं यदिहै प्ररूपितं, 'जिनधर्मो यर्दपज्ञतस्त्रया॥ ग्रेणिनां ग्रेंणमत्सरः क्टेंतः, कुँकुटुंबं पुँपुषे मैमत्वतः ॥ ३० ॥ कहेखो श्रने मोक्त सुखनुं साधन एवो धर्म, त्हारुं शरण थार्ट. ॥ ३१ ॥ तें श्रा खोकमां जे कुमतने निरुपण कस्यो होय श्रने जे जिनधर्मनो उपडोह कस्यो होय, तेमज ए-ग्रेणिनां ग्रेंणमत्सरः क्षेतः, क्षेकुटुंबं पुँपुषे मीमत्वतः ॥ ३२ ॥ षी पुरुषोना गुणनो मत्सर कस्बो होय श्रथवा ममत्वपणांथी खराब कुखनुं पोषण

ڼ

कर्स्युं होथ,॥ ३१॥ धर्मादि सारा कार्योमां अंतराय कस्बो होय, मनुष्यना समूहने पापकर्ममां प्रेस्वो होय, वसी प्रमादथी खोटी वातो करी होय, ते सर्वे पोताना छुष्कु-त्यनी गुरुनी साक्तीए निंदा कर.॥ ३३॥ तें जे डव्य जिनेश्वरोनां मंदिर, तेमनां प्रति-विंब, पुस्तक अने संघ ए चारने विषे पण वाव्युं (वापस्तुं) होय, शीव प्रतिमादि तप त्रेकृता सुकृतांतरायता, जैनता पातककर्मणीरिता॥ ँविकष्या किथिता प्रमादतः, पैरिगर्हस्व तेदीत्म**डप्कृतम् ॥ ३३** ॥ ैजिनमंदिरविंबपुस्तकेष्वंपि सॅघे धेनमुप्तमंजसा॥ प्रतिमादितपः समर्थितं, येदैं लं धेर्मविधो सेहायितम् ॥ ३४ ॥ विद्धे विधिदेशना त्वया, पितितः पातित आगमोऽपि येत्॥ समयानुगमधिद्प्येलं, 'निजपुण्यं त्वेंनुमोद्यांतरा ॥ ३८॥ कक्षुं होय, तेमज धर्मविधिमां घणी सहाय्य करी होय, ॥ ३४ ॥ वसी तें जे समयने 📳 ॥२००॥ श्रतुसरी विधिपूर्वक देशना श्रापी होय, तेमज श्रागमनो श्रज्यास कस्त्रो होय श्र-थवा कराव्यो होय श्रने जे वीजुं पण पोतानुं घणुं पुष्य होय, ते सर्व पोताना पुष्यनी

\$

मनने विषे श्रवुमोदना कर. ॥ ३५ ॥ वही तुं संसार रूप पांजराने जागवामां दढ, ते-मज दया, शमता, अने समाधिना बंधु रूप एवी उत्तम जावनाउने हमएां पोताना मनमां वार प्रकारे जाव्य. ॥ ३६ ॥ वसी पोताना शासनने विषे तथा परशासनने विषे जेनो म्होटो महिमा कहेवाय हे एवा ते अनशन वतने विधिए करीने ग्रहण कर, ते-नैवपंजरजंजनो ६राः, कैरुणासाम्यसमाधिवंधुराः॥ पॅरिजावय जैव्यजावना, मैनसि दादशसंख्ययाधुना ॥ ३६ ॥ स्वमते परशासने तैया, महिमा थैस्य महानिगचते॥ े विधिनानशनं ग्रेहाण तिन्निखिलाहारमाति े विमुच्यताम् ॥ ३७ ॥ केलमंगलकेलिमंदिरं, सुरसंपद्दाहेतुर्सुत्तरम्॥ श्चेष्ठचसंघविघातसत्वरं, सँमर मैत्रं पैरमेष्ठिविष्टरम् ॥ ३७ ॥ मज सर्व प्रकारना छाहारनी बुद्धिने त्याग कर. ॥ ३७ ॥ मनोहर मंगल क्रीडाना मंदिर रूप, देवतानी संपत्तिना वस्थनुं कारण, पापना समृहनो नाश करवामां शीघ गति करनार अने पंच परमेष्टिना आहा रूप एवा उत्तम नवकार मंत्रने सारण **सुस्र**सा०

1133011

कर. ॥ ३० ॥ सम्यक्त्वनुं पालन करवामा ज्यार एवी ते सुलसाए ते वस्तते एवी रीते म्होटा उद्यमधी आराधना करीने अने उत्तम एवा समतारसने विषे चित्तने धारण करीने तीर्थंकरगोत्रनुं पवित्र कर्म बांध्युं. ॥ ३० ॥ वैराग्यधी पूर्ण हृदयवासी अने प्र-

(वसंततिलकावृत्तम्)

श्राराधनामिति महोद्यमतो विधाय, ''चित्तं 'निधाय पेरमे समतारसे सा ॥ श्रानंद 'तीर्थकरगोत्रपवित्रकर्म, सम्यक्त्वपालनवशा सुलसा तदानीम्॥३ए॥

(शार्दूछविक्रीडितवृत्तम्)

श्रीमदीरजिनेश्वरांत्रिकमलं सेनेरं स्मरंती हैंदि ॥ श्रीमदीरजिनेश्वरांत्रिकमलं सेनेरं स्मरंती हैंदि ॥ त्येक्त्वा जीर्णकलेवरं कैतमहापुण्यप्रजावाञ्जतं, सेंवींगीणसुखारूपदं सुरजवं सुश्राविका सा येंयो ॥ ४० ॥ फुब्लित एवा श्रीवीर जिनेश्वरना चरण कमखने मनमां स्मरण करती एवी ते उत्तम श्राविका सुखसा, गुरुए कहेबी विधि प्रमाणे श्रानशन व्रतने श्राराधीने तथा जीर्ण

114 \$ 011

For Private and Personal Use Only

कक्षेवरने त्याग करीने पोते करेखा महा पुष्यना प्रजावश्री श्रव्यत श्रने प्राणी ना सर्व शरीर संबंधी सुखना स्थान रूप देव जवने पामी ॥ ४० ॥ त्यां देव जवने विषे दिव्य सुख जोगवी अने पढ़ी त्यांथी च्यवीने ते सुखसा पुरुष रूपे आ जरत केन्नने विषे आ-(वसंततिलकावृत्तम्) चुक्ला सुंखं बिद्दाजन्मनि तेत्र दिव्यं, च्युत्वा तेतोऽपि सुलसा पुंरुषोऽत्रि वैषे । र्भाविन्धेनेहसि नैविष्यति निर्ममास्यरेती यैकरो जैगति पंचद्राः प्रैंसिष्ठः ४१ (शार्दलविकीडितक्तम्) कैट्याणक्वणदत्तसर्वजगतीसौस्यातिरेकस्तदा, क्षानं केंबलमीप्य ¹देवमनुजेः संस्तुयमानकमः॥ संपूर्णातिशयेनिराकृततमाः 'संस्थाप्य 'तीर्थ 'किती, श्रीमन्निर्ममनायकः सं पेरमानंदं पेंदं यास्यति ॥ ४२ ॥ वता कालमां (श्रावती चोवीशीमां) जगत्ने विषे प्रसिद्ध एवा पंदरमा निर्मम नामना तीर्थंकर थहो. ॥ ४१ ॥ ते वखते कख्याणकारी समये करीने आप्युं हे सर्व 🕏

लोकोने श्रत्यंत सुख जेमणे एवा, तेमज देव श्रने मनुष्योए जेमना चरण कमलनी स्तृति करी हे एवा, वली समग्र श्रितशयोए करीने श्रज्ञानने नाश करनारा ते श्री निर्मम नामना जिनेश्वर केवलज्ञानने पामी श्राने एथ्वीने विषे तीर्थने स्थापना करी एरम श्रानंद श्रापनारा मोक्तपद प्रत्ये पामशे.॥४१॥ ए प्रकारे में सम्यक्त्वसंज्ञव ना-

(वसंततिऌकावृत्तम)

ईतं मैया विरचितं सुलसाचरित्रं, सम्यक्त्वसंजव ईति\हैं ^{1*}चिराय 'जीयात्॥ संशोधितं जैयसमुदकवींदमुख्येः, पूर्वप्रतो ''विलिखितं गिणिनामरेण ॥४३॥

था सम्यक्त संजव महाकाव्य (सुलसा चरित्र) न 🖚 🔻 से चालीश (अनुष्ट्रपृकृत्तम्) सैम्यक्त्वसंजवेऽत्रांस्ति, ^१ंखोकानां शतसप्तकम्॥ चैत्वारिंश्तराया सैर्वसंस्ययात्तरविंशतिः॥ ४४॥ तथा वीश श्रक्तरनी संख्या हे. ॥ ४४ ॥ इत्यागमिक श्री जयतिखकसूरि विरचिते सम्यक्त्व संजवनाम्नि महाकाव्ये सुख-साचरिते सुलसा स्वर्गगमनो नाम श्रष्टमः सर्गः॥७॥

सुससा०

॥११२॥

सुलसाचरितम्

मूलसंस्कृत पद्यात्मक

तेतुं मूल अने अन्वयांक साथे गुजराती भाषामां शास्त्री हरिशंकर कालिदास पासे भाषांतर करावी छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रीजैनविद्याशाला

होशीवाहानी पोळ, अमदावाद-

मुंबइ निर्णयसागर प्रेस.

सने १८९६ संवत् १९५५, किम्मत १ रूपियोः

प्रसिद्धकर्ताए आ प्रथने छापवा छपाववा संबंधी सर्व प्रकारना हरू पोताने खाषीन राख्यों <u>छे</u> सर्गण्मो.

For Private and Personal Use Only

